दैनिक
लखनऊ से प्रकाशित एवं उ.प्र., बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली में प्रसारित
RNI-UPHIN/2014/58471

अमन लेखनी

तन-मन-जीवन में है जीवन की ये सौगातें........

गुरूजी.......

वर्ष : 10 | अंक : 261 | लखनऊ, 02 सितम्बर, सोमवार 2024 | पृष्ठ : 08 | मूल्य : 2.00 रुपए

प्रत्येक खिलाड़ी पर हमें गर्व, चाहे वह किसी भी प्रदेश का हो : सीएम योगी

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। भारतीय राष्ट्रीय खेल हॉकी ने दुनिया को अपनी खेल प्रतिभा का लोहा मनवाया है। एक बार फिर यह अपने पुराने वैभव को प्राप्त कर रहा है। वहीं उत्तर प्रदेश ने कई दिग्गज अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी दिये हैं। इनमें हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद का नाम हर भारतवासी की जुबान पर है। इसके अलावा केडी सिंह बाबू, मो शाहिद, रविंद्र पाल, सैयद अली समेत दर्जनों हॉकी खिलाड़ी उत्तर प्रदेश की देन हैं। इन सभी ने ओलंपिक, कॉमनवेल्थ, एशियाड और वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारतीय टीम का नेतृत्व कर देश को गौरवांवित किया है। वहीं हॉकी इंडिया जूनियर मेन इंटर जोन चैंपियनशिप जूनियर हॉकी खिलाड़ियों को भावी ओलंपिक, इंटरनेशनल, एशियाड और कॉमनवेल्थ गेम के लिए नए प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने के लिए एक मंच प्रदान कर रही है। यह काफी सराहनीय है। सीएम योगी ने कहा कि सरकार की खेल पॉलिसी से प्रदेश के प्रतिभावान खिलाड़ियों को मंच मिलने के साथ उन्हें प्रोत्साहित भी किया जा रहा है। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को हॉकी इंडिया जूनियर मेन इंटर जोन चैंपियनशिप-24 के उद्घाटन समारोह में कही।

सरकार खेल और खिलाड़ियों को दे रही बढ़ावा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि इस चैंपियनशिप में 6 टीमें एक सप्ताह तक मैच खेलेंगी। यह खिलाड़ियों के लिए नया अनुभव और अवसर है क्योंकि पहले यह सुविधाएं नहीं थी। इससे कभी-कभी लगता था कि राष्ट्रीय खेल अपने ही घर में उपेक्षित है, लेकिन अब उपेक्षा नहीं बल्कि नये जोश और भरोसे के साथ आगे बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा कि पिछले दो ओलंपिक टोक्यो और पेरिस में भारतीय हॉकी टीम ने अपना परचम लहाराया है। इसमें दोनों बार भारतीय टीम का हिस्सा रहे खिलाड़ी ललित उपाध्याय को पिछली बार ही यूपी पुलिस में डिप्टी एसपी के पद पर तैनाती दी गई थी। वहीं इस बार ओलंपिक में अपना शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी राजकुमार पाल को भी डिप्टी एसपी बनाने जा रहे हैं।

सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 10 वर्षों में खेल को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए गए। पीएम मोदी की इस पहल से खेल को लेकर जो पहले लोगों में नकारात्मकता का भाव था, वह आज सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ रही है। इसे आगे बढ़ाने में निजी खेल अकादमी की बड़ी भूमिका है।

गोवा में पंजाब के पर्यटक से जबरन वसूली के आरोप में दो महिलाएं और एक पुरुष गिरफ्तार

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, गोवा के पोरवोरिम में पंजाब के एक पर्यटक से पैसे ऐंठने के आरोप में दो महिलाओं समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। एक पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने आरोपियों की पहचान मुंबई निवासी बबीता रमेश उपाध्याय, पश्चिम बंगाल निवासी सुतापा बनर्जी और स्थानीय निवासी दीपक सालगांवकर के रूप में की। उन्होंने बताया, तीनों को सागर अंसारी की शिकायत पर गिरफ्तार किया गया, जिसने आरोप लगाया है कि उसे और उसके दोस्त को 30 अगस्त को आरोपियों के बैंक खातों में 20,000 रुपये हस्तांतरित करने के लिए मजबूर किया गया था। हमने कलंगुट में सलगांवकर द्वारा इस्तेमाल की गई कार का पीछा किया और बाद में अंजुना से दो महिलाओं को गिरफ्तार किया। अधिकारी के अनुसार, दोनों महिलाएं देह व्यापार गिरोह की सदस्य के तौर पर अंसारी से मिलीं और फिर उसके खिलाफ बलात्कार का मामला दर्ज कराने की धमकी देते हुए उससे पैसे ऐंठे।

अब शहीदों के स्मारक में भाजपा चलवा रही है बुलडोजर

अखिलेश यादव ने कारगिल बलिदानी मामले में की निंदा

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मैनपुरी में कारगिल के बलिदानी मुनीश यादव के स्मारक को बुलडोजर से तोड़ने की निंदा की है। कहा कि भाजपा अब शहीदों के स्मारक पर भी बुलडोजर चलवा रही है। कारगिल बलिदानी मुनीश यादव की वर्ष 2000 में बनी प्रतिमा व स्मारक को मिट्टी में मिलाने का जो दुस्साहस प्रशासन ने सरकार के इशारे पर किया है, उससे देश के सैनिकों और देशप्रेमियों के बीच मूक आक्रोश पनप रहा है।

भाजपाई कभी नहीं समझ पाए बलिदानियों का मोल

सपा अध्यक्ष ने रविवार को जारी बयान में कहा कि देश के मान-सम्मान के लिए जीवन न्यौछावर करने वालों के बलिदान का मोल भाजपाई कभी नहीं समझ सकते हैं क्योंकि इतिहास गवाह है कि आजादी के आंदोलन में जो लोग स्वतंत्रता सेनानियों का साथ देने के बजाय औपनिवेशिक शासकों के कान-आंख बनकर रहे, वो भला बलिदान की कीमत क्या जानें।

बलिदान में भी भेदभाव करने लगी भाजपा की राजनीति

अखिलेश ने कहा कि भाजपा की राजनीति बलिदान में भी भेदभाव करने लगी है। ये नकारात्मक राजनीति का निकृष्टतम रूप है। यदि भाजपा में जरा भी शर्म बची है तो मंडल से लेकर जिले स्तर के सभी बड़े अधिकारियों को तत्काल निलंबित करे और प्रतिमा-स्मारक की ससम्मान पुनर्स्थापना करे। अगर ऐसा नहीं हुआ तो समाजवादी मिलकर ये कार्य करेंगे। कारगिल शहीद के स्मारक पर बुलडोजर चलाने का भाजपा सरकार का कुकृत्य निंदनीय है।

मौसम

अधिकतम तापमान 43.c

न्यूनतम तापमान 29.c

बाजार

सोना 7,177/ g

चांदी 96/ g

सेंसेक्स 81,332.72

निफटी 24,834.85

सरकार बाढ़ से निपटने में नाकाम रही : मायावती

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष मायावती ने सरकार पर देश के विभिन्न हिस्सों में उत्पन्न बाढ़ की समस्या से निपटने में नाकाम रहने का आरोप लगाते हुए रविवार को कहा कि सरकारों को सिर्फ राहत ही नहीं, बल्कि बाढ़ निवारण पर भी ध्यान देना चाहिए। मायावती ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया, देश के विभिन्न राज्यों में भारी बारिश के कारण आई बाढ़ से उपजी स्थिति से सही से नहीं निपट पाने के कारण लाखों परिवारों का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। ऐसी तबाही लोगों का जीवन बर्बाद कर देती है। उन्होंने कहा, सिर्फ राहत ही नहीं, बल्कि सरकारों को बाढ़ निवारण पर भी समुचित ध्यान देना चाहिए। गौरतलब है कि गुजरात और त्रिपुरा समेत देश के कई राज्यों में विशेषकर मध्य व पश्चिमी क्षेत्र में मूसलाधार बारिश तथा बाढ़ से हालात बिगड़ गए हैं।

मोदी एंड कंपनी को बाहर का रास्ता दिखा देंगे जम्मू-कश्मीर के युवा

मल्लिकार्जुन खरगे का केंद्र सरकार पर हमला

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नयी दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार को दावा किया कि जम्मू कश्मीर के युवाओं के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की एकमात्र नीति धोखा देना है और आगामी चुनाव में वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एंड कंपनी को बाहर का रास्ता दिखा देंगे। खरगे ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि मार्च में जम्मू-कश्मीर में युवा बेरोजगारी दर 28.2 प्रतिशत (पीएलएफएस) रही। उन्होंने कहा, जम्मू-कश्मीर के युवाओं को धोखे में रखना ही भाजपा की एकमात्र नीति है।

खरगे ने दावा किया, कई परीक्षा प्रश्न लीक, रिश्वत और बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के कारण विभिन्न विभागों में भर्ती में चार साल से देरी हो रही है। जम्मू कश्मीर में सरकारी विभागों में 2019 से 65 प्रतिशत पद रिक्त हैं। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में 60,000 से अधिक सरकारी दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी 15 वर्षों से अधिक समय से मेहनत कर रहे हैं और उन्हें प्रतिदिन मात्र 300 रुपये मिलते हैं।

कांग्रेस नेता ने कहा, लंबे समय से सेवा देने के बावजूद वे बिजली, सार्वजनिक स्वास्थ्य और इंजीनियरिंग जैसे आवश्यक विभागों में भी अनुबंध के आधार पर काम कर रहे हैं, जो रोजगार संकट की भयावह प्रकृति को उजागर करता है। उन्होंने कहा कि हालांकि भाजपा ने जम्मू-कश्मीर में उद्योग लगाने का वादा किया था लेकिन केंद्र शासित प्रदेश में कोई बड़ी विनिर्माण इकाई नहीं है। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि निजी क्षेत्र केवल कृषि, आतिथ्य और स्वास्थ्य क्षेत्र में सेवाएं प्रदान करने तक ही सीमित है।

खरगे ने कहा, 2021 में नयी औद्योगिक नीति की शुरूआत के बावजूद, जमीन पर सिर्फ तीन प्रतिशत निवेश ही हो पाया है। प्रधानमंत्री विकास पैकेज 2015 के तहत 40 प्रतिशत परियोजनाए अब भी लंबित हैं। उन्होंने कहा, एक अक्टूबर को जम्मू-कश्मीर के युवा मोदी एंड कंपनी को बाहर का रास्ता दिखाएंगे! नब्बे सदस्यीय जम्मू कश्मीर विधानसभा के लिए चुनाव 18 सितंबर, 25 सितंबर और एक अक्टूबर को तीन चरणों में होंगे और नतीजे आठ अक्टूबर को घोषित किए जाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

विमान में बम है, इंडिगो के टॉयलेट में मिले कागज से मचा हड़कंप

पुलिस को जांच में कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नागपुर। मध्य प्रदेश के जबलपुर से तेलंगाना के हैदराबाद जाने वाली इंडिगो की उड़ान में रविवार को बम होने की सूचना मिली, जिसके बाद विमान को नागपुर हवाईअड्डे पर उतारने का फैसला लिया गया। इंडिगो ने एक बयान में कहा कि जबलपुर से हैदराबाद जाने वाली उड़ान संख्या 6ई-7308 में रविवार सुबह बम होने की सूचना मिली थी, जिसके बाद इसे नागपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतारा गया। बयान में कहा गया, नागपुर हवाई अड्डे पर विमान के उतरने के बाद सभी यात्रियों को बाहर निकाला गया। विमान की जरूरी सुरक्षा जांच की गयी। यात्रियों को जलपान दिया गया। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि विमान के शौचालय में एक कागज मिला, जिस पर लिखा था कि विमान में बम है।

हरियाणा में सुनीता केजरीवाल ने आप के लिए मांगे वोट

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

चंडीगढ़। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने रविवार को हरियाणा की भाजपा सरकार पर 10 साल में कुछ नहीं करने का आरोप लगाया और लोगों से नया हरियाणा बनाने के लिए आम आदमी पार्टी (आप) को वोट देने का आग्रह किया। हरियाणा में विधानसभा चुनाव पांच अक्टूबर को होंगे और नतीजे आठ अक्टूबर को घोषित किए जाएंगे। हरियाणा के चरखी दादरी में सभा को संबोधित करते हुए सुनीता केजरीवाल ने लोगों से पूछा कि क्या उन्होंने भाजपा के 10 साल के कार्यकाल के दौरान स्कूली शिक्षा व सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं में कोई सुधार देखा है।

एयर मार्शल तेजिंदर सिंह ने वायुसेना के उप प्रमुख का पदभार संभाला

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नयी दिल्ली। एयर मार्शल तेजिंदर सिंह ने रविवार को भारतीय वायुसेना के उप प्रमुख (डीसीएएस) का पदभार संभाला। रक्षा मंत्रालय ने यह जानकारी दी। वायु सेना मुख्यालय (वायु भवन) में पदभार ग्रहण करने के बाद एयर मार्शल ने यहां स्थित राष्ट्रीय समर स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित कर सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के पूर्व छात्र रहे एयर मार्शल तेजिंदर को 13 जून 1987 को भारतीय वायुसेना की लड़ाकू शाखा में नियुक्त किया गया था।

मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि वह 4,500 घंटे से अधिक के उड़ान अनुभव के साथ श्रेणी ए के योग्य फ्लाइंग प्रशिक्षक हैं तथा रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज एवं राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय (एनडीसी) के पूर्व छात्र हैं। उन्होंने एक लड़ाकू स्क्वाड्रन, एक रडार स्टेशन, एक प्रमुख फाइटर बेस की कमान संभाली और वह जम्मू-कश्मीर के एयर ऑफिसर कमांडिंग थे।

बयान में कहा गया, ह्लउनकी विभिन्न स्टाफ नियुक्तियों में कमांड मुख्यालय में ऑपरेशनल स्टाफ, वायु सेना मुख्यालय में एयर कमोडोर (कार्मिक अधिकारी -1), एकीकृत रक्षा स्टाफ के उप सहायक प्रमुख, मुख्यालय आईडीएस में वित्तीय (योजना), एयर कमोडोर (एयरोस्पेस सुरक्षा), वायु सेना मुख्यालय में एयर स्टाफ ऑपरेशन्स (अफेन्सिव) एवं एसीएएस ऑपरेशन्स (स्ट्रेटेजी) शामिल हैं।

अपनी वर्तमान नियुक्ति से पहले, वह मेघालय के शिलांग स्थित भारतीय वायुसेना के पूर्वी वायु कमान मुख्यालय में सीनियर एयर स्टाफ ऑफिसर थे। उनकी सराहनीय सेवाओं को मान्यता प्रदान करते हुए, उन्हें राष्ट्रपति द्वारा 2007 में वायु सेना पदक और 2022 में अति विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया।

एक अलग बयान में रक्षा मंत्रालय ने कहा कि एयर मार्शल आशुतोष दीक्षित ने मध्य वायु कमान के एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ का पदभार ग्रहण किया। इसमें कहा गया कि एयर मार्शल आशुतोष दीक्षित को छह दिसंबर 1986 को भारतीय वायुसेना की लड़ाकू शाखा में नियुक्त किया गया था। वायुसेना अधिकारी एक प्रायोगिक परीक्षण पायलट और एक योग्य उड़ान प्रशिक्षक हैं, जिनके पास भारतीय वायुसेना के विभिन्न प्रकार के विमानों पर 3300 घंटे से अधिक का उड़ान अनुभव है।

बयान में कहा गया कि वह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज (बांग्लादेश) और राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज के पूर्व छात्र हैं। उन्होंने ऑपरेशन सफेद सागर और ऑपरेशन रक्षक जैसे कई अभियानों एवं अभ्यासों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। इसमें कहा गया कि कुल 37 वर्षों से अधिक के अपने शानदार करियर के दौरान, वायुसेना अधिकारी ने कई महत्वपूर्ण फील्ड और स्टाफ नियुक्तियों में योगदान दिया है।

एक कमांडिंग ऑफिसर के रूप में, उन्होंने भारतीय वायुसेना के एक स्क्वाड्रन को अत्याधुनिक मिराज विमान से सुसज्जित किया और बाद में पश्चिमी सेक्टर में एक अग्रिम पंक्ति के फाइटर एयर बेस और दक्षिणी सेक्टर में एक अग्रगणी फाइटर ट्रेनिंग बेस की कमान संभाली।

केंद्रीय आपदा प्रबंधन विशेषज्ञ दल ने केरल के भूस्खलन प्रभावित विलान्गद का दौरा किया

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, केंद्रीय आपदा प्रबंधन विशेषज्ञों के दल ने केरल के उत्तरी कोझीकोड जिले के विलान्गद में भूस्खलन प्रभावित इलाकों का दौरा कर वहां हुए नुकसान का जायजा लिया। ऊंचाई पर स्थित विलान्गद गांव में 30 जुलाई को भूस्खलन से बड़े पैमाने पर तबाही मची थी। उसी दिन पड़ोसी वायनाड जिले में भी बड़े पैमाने पर हुई भूस्खलन की घटनाओं से भारी विनाश हुआ था। जिला प्राधिकारियों ने बताया कि विशेषज्ञ दल में शामिल रुड़की स्थित केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) के निदेशक आर प्रदीप कुमार, सीबीआरआई वैज्ञानिक डीपी कानूनगो और अजय चौरसिया, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य सचिव शेखर कुरियाकोस तथा अन्य अधिकारियों ने शनिवार को विलान्गद में प्रभावित इलाकों का दौरा किया। विशेषज्ञ दल ने मुख्यतः वायड, पन्नियेरी, मलयनगाडु और विलान्गद शहर का दौरा किया, जहां बड़े पैमाने पर विनाश हुआ था। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, विशेषज्ञ दल के साथ पंचायत और राजस्व अधिकारी भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री पिनराई विजयन द्वारा हाल में बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में वायनाड के साथ ही विलान्गद में भूस्खलन के पीड़ितों के पुनर्वास का फैसला लिया गया।

कोलकाता कांड के विरोध में कई जगह प्रदर्शन, निकाली जाएगी महा मिछिल रैली

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

कोलकाता। कोलकाता के सरकारी आरजी कर अस्पताल में प्रशिक्षु चिकित्सक के साथ कथित बलात्कार और हत्या की घटना के विरोध में यहां रविवार को कई रैलियां और प्रदर्शन आयोजित किए जाएंगे। सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ-साथ नागरिक संगठनों के सदस्यों की दिन में शहर में और पूरे पश्चिम बंगाल में सड़कों पर उतरकर विरोध-प्रदर्शन करने की योजना है।

तृणमूल कांग्रेस की महिला सदस्य बलात्कारियों को मृत्युदंड देने के लिए कानून में संशोधन की मांग को लेकर विभिन्न ब्लॉक पर प्रदर्शन करेंगी। वहीं, भाजपा एस्प्लेनेड में 29 अगस्त से शुरू अपने धरने को जारी रखेगी। केंद्रीय मंत्री एवं भाजपा की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने पहले कहा था कि प्रदर्शनकारी चाहते हैं कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी चिकित्सक बलात्कार-हत्या मामले को लेकर अपने पद से इस्तीफा दें।

पश्चिम बंगाल सरकार ने सोमवार को विधानसभा का विशेष सत्र बुलाया है, जिसमें बलात्कार के दोषियों को मृत्युदंड के प्रावधान संबंधी एक विधेयक पेश कर उसे पारित किया जाएगा। रविवार दोपहर को मध्य कोलकाता के कॉलेज स्क्वायर से एस्प्लेनेड तक भव्य महा मिछिल रैली निकाले जाने का कार्यक्रम है, जिसमें समाज के विभिन वर्गों के लोग शामिल होंगे। एक प्रदर्शनकारी ने कहा, यह एक गैर-राजनीतिक रैली है और इसकी योजना सोशल मीडिया पर बनाई गई। इसमें हजारों लोगों के शामिल होने की संभावना है।

दिल्ली में प्रदूषण से निपटने के लिए केंद्र, पड़ोसी राज्य के साथ मिलकर काम करना जरूरी: गोपाल राय

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

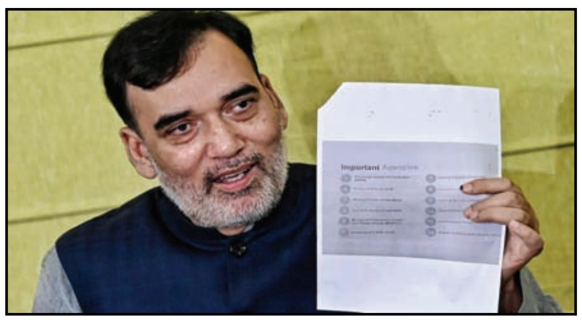

नयी दिल्ली। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने रविवार को कहा कि दिल्ली में प्रदूषण की समस्या का समाधान केवल सभी के साथ मिलकर प्रयास करने से किया जा सकता है। उन्होंने केंद्र सरकार से सर्दियों के दौरान कृत्रिम बारिश की अनुमति देने का आग्रह किया, क्योंकि इस दौरान शहर में वायु गुणवत्ता का स्तर गिर जाता है।

राय ने यहां संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि यद्यपि दिल्ली सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए कई कदम उठाए हैं, फिर भी राष्ट्रीय राजधानी और इसके आसपास नवंबर में प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है। उन्होंने कहा, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में आपात स्थिति पैदा हो जाती है। केजरीवाल सरकार प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए काम कर रही है। जब से हमारी सरकार सत्ता में आई है, प्रदूषण के स्तर में कमी आई है। उन्होंने कहा कि लेकिन नवंबर में प्रदूषण के स्तर में वृद्धि देखी जाती है।

राय ने कहा, पिछले साल आईआईटी-कानपुर ने एक प्रस्ताव पेश किया था कि दिल्ली में कृत्रिम वर्षा या क्लाउड सीडिंग का प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इसके लिए वित्तीय प्रबंधन और सुरक्षा अनुमति की आवश्यकता है। पिछले साल समय बहुत कम था, इसलिए अनुमति नहीं मिल सकी थी। उन्होंने कहा, हमने विशेषज्ञों के साथ बैठक की और मैंने केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव को पत्र लिखकर केंद्र से मदद मांगी। राय ने कहा कि उन्होंने कृत्रिम वर्षा के प्रस्ताव पर चर्चा के लिए केंद्रीय एजेंसियों और आईआईटी कानपुर के विशेषज्ञों के साथ बैठक का अनुरोध किया है।

राय ने पिछले सप्ताह केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव को पत्र लिखकर केंद्र से आग्रह किया था कि वह सर्दियों में वायु प्रदूषण से निपटने के लिए दिल्ली में कृत्रिम बारिश कराने के लिए क्लाउड सीडिंग की व्यवहार्यता का मूल्यांकन करने के लिए सभी हितधारकों के साथ बैठक बुलाए। उन्होंने कहा, दिल्ली में इस प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के लिये रक्षा मंत्रालय, गृह मंत्रालय, एसपीजी, दिल्ली सरकार, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, आईएमडी, सीपीसीबी, एएसआई, बीसीएएस और उत्तर प्रदेश सरकार से अनुमति की आवश्यकता है। हम अपनी तरफ से धन और अनुमति देने के लिये तैयार हैं, लेकिन हमें केंद्र के सहयोग की आवश्यकता है।

रविवार को संवाददाता सम्मेलन में राय ने कहा कि प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए सबके साथ मिलकर काम करने तथा केंद्र और पड़ोसी राज्यों के सहयोग की आवश्यकता है।

संक्षेप

युवती का धर्मपरिवर्तन कराकर विवाह करने का आरोपी गिरफ्तार

अमन लेखनी समाचार

निगोहां। एक गांव की युवती से हिन्दू युवक बनकर प्रेमजाल में फसाने के बाद घर से भगाकर ले जाकर धर्म परिवर्तन कराकर मुस्लिम युवक ने विवाह कर लिया था.14साल युवती की अस्मत से खेलने के बाद मन भरा तो दूसरा निकाह कर मारपीट कर घर से निकालने के बाद तीन तलाक दे दिया।पीड़िता की तहरीर पर आरोपी ताज मोहम्मद निवासी डीहा मजरा उतरावा थाना निगोहां के विरूद्ध धर्म परिवर्तन व मुस्लिम महिला विवाह अधिनियम समेत अन्य धाराओ में मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने शनिवार को गिरफ्तार आरोपी को न्यायालय में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

निगोहां से दो सौ कावड़ियो का जत्था बाबा बैजनाथ धाम के लिए रवाना

अमन लेखनी समाचार

निगोहां। रविवार को 200 कावड़ियों का जत्था हर हर बम-बम के जयकारों के साथ झारखण्ड के देवघर में स्थित बाबा बैद्यनाथ धाम के दर्शनो के लिए रवाना हुआ.जत्थे में निगोहां समेत आस-पास के आधा दर्जन गांवों के लोग शामिल थे। जत्थे का निगोहां कस्बे में जगह-जगह जोरदार स्वागत किया गया और प्रसाद भी वितरित किया गया।सुरक्षा व्यवस्था के लिए निगोहां पुलिस बल के साथ थाना प्रभारी अनुज कुमार तिवारी भी मौजूद रहे।जत्था निगोहां स्टेशन मोड़ पर एकत्रित हुआ, जिसके बाद गाजे-बाजे के साथ कस्बे में भ्रमण किया। इस दौरान कपड़ा व्यवसायी राहुल गुप्ता, अजय गुप्ता, आरजी होटल, मोहम्मद शकील और किन्नर प्रियंका रघुवंशी ने कांवरियों का माला पहनाकर स्वागत किया और नाश्ता-पानी की व्यवस्था की।सभी कांवरियों को लंच पैकेट भी प्रदान किए गए,इस मौके पर व्यापार मंडल अध्यक्ष सुरेंद्र दीक्षित, लाला, वसीम, सुजीत गुप्ता, शिवमोहन, विकास सिंह, ऋषभ गुप्ता, अंशुल त्रिवेदी, निशु मिश्र, पंकज मिश्रा समेत सैकड़ों लोगो ने कावड़ियो का स्वागत किया।

विधायक द्वारा रसूलपुर में 86वां 'आपका विधायक - आपके द्वार' जन सुनवाई शिविर का किया आयोजित

अमन लेखनी समाचार

सरोजनीनगर, लखनऊ। सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा रविवार को क्षेत्र के भटगांव स्थित रसूलपुर में 86वां 'आपका विधायक - आपके द्वार' जन सुनवाई शिविर आयोजित किया गया। इस दौरान विधायक की टीम ने समस्याएँ सुनी, समस्याओं का समाधान कराने और गांव के विकास संबंधित सुझाव प्राप्त किए। शिविर में 'गांव की शान' पहल के तहत डॉ. राजेश्वर सिंह की ओर से इंटरमीडिएट परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 2 मेधावियों मो. उमर व सलोनी गौतम और हाईस्कूल परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 2 मेधावियों परिसीका पाल व हिमांशु को साइकिल, घड़ी और प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही वरिष्ठ भाजपा नेता राजेश सिंह, महिला मोर्चा मंडल मंत्री मधु चौरसिया, बीडीसी सुहागवती चौरसिया, दीपमाला, मोहिनी देवी, कमला चौरसिया, प्रिओम, शिवमंगल चौहान, अजीत चौहान, शत्रोहन एवं राजा राम चौरसिया को भी सम्मानित किया गया। इसके अलावा रसूलपुर में 37 वें गर्ल्स यूथ क्लब की स्थापना कर कैरम, फुटबॉल, वॉलीबॉल आदि खेलों की स्पोर्ट्स किट प्रदान की गयी। कार्यक्रम में 'ताराशक्ति निःशुल्क रसोई' के माध्यम से मौजूद लोगों को ताजा एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया गया। इस दौरान ग्राम प्रधान तारा देवी, सेक्टर संयोजक सूरज सिंह, बूथ अध्यक्ष सुन्दर लाल, अनिल कुमार पटेल, केदार नाथ मौर्या, क्षेत्र पंचायत सदस्य कुंती, गिरीश चन्द्र, बच्चू लाल पासी, दीपक कुमार, धरम राय चौरसिया, पीनू रावत, महेश्वरी द्विवेदी एवं पार्षद प्रतिनिधि लवकुश रावत मौजूद रहे।

सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने रविवार को गौरी विहार से 28वीं रामरथ श्रवण अयोध्या यात्रा संचालित की। इस फ्री बस सेवा के माध्यम से स्थानीय निवासियों को अयोध्या दर्शन कराया गया। विधायक द्वारा संचालित बस सुबह गौरी विहार के जे. पी लॉन पहुँची, जहाँ महिलाओं और बुजुर्गों को पटका पहनाकर बस में बिठाया गया। बस में पूरे रास्ते के दौरान यात्रियों के लिए नाश्ता और भोजन की व्यवस्था की गयी। सभी दर्शनार्थियों को राम मंदिर, हनुमान गढ़ी, कनक भवन, राम की पैडी आदि महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों का दर्शन कराते हुए देर शाम सकुशल उनके घर पहुंचाया गया। वापसी के दौरान सभी दर्शनार्थियों को डॉ. राजेश्वर सिंह की ओर से श्रीमद्भागवत गीता तथा प्रसाद भी प्रदान किया गया।

सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने अपनी विधानसभा क्षेत्र के युवाओं को डिजिटल कोर्सों का निःशुल्क प्रशिक्षण दिलाने के लिए अपने पिता की स्मृति में डिजिटल सशक्तिकरण केन्दों की स्थापना की है। पहले चरण में विधायक द्वारा 6 केन्द्रों की स्थापना की गयी। इनमें से 4 केन्द्रों (विधायक कार्यालय आशियाना, कुम्हार मंडी, भटेआ लाइन तेलीबाग, कटियार मार्केट, लतीफनगर, कानपुर रोड स्थित बंथरा सिकंदरपुर) पर रविवार को ई - गवर्नेंस सुविधाओं (पैन कार्ड आवेदन, किसान सम्मान निधि आवेदन, बीमा और बैंकिंग योजनाओं) का लाभ, जन्म, मृत्यु, जाति, आय, निवास प्रमाणपत्र, वृद्धावस्था, दिव्यांगजन पेंशन आदि के पंजीकरण सुविधाओं का निःशुल्क लाभ उपलब्ध कराया गया। इन केन्द्रों के बारे में विधायक का मानना है कि प्रत्येक शनिवार एवं रविवार को इन केंद्रों पर सरोजनीनगर के परिवार के सदस्यों को निःशुल्क जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया जाएगा।

मिठाई काउंटर में उतरे करंट की चपेट में आकर दुकानदार की मौत

अमन लेखनी समाचार

निगोहां। सुदौली मोड़ पर स्थित एक मिठाई दुकान में रखे काउंटर में उतर रहे कंरट की चपेट में आकर दुकानदार की मौत हो गयी।आनन-फानन परिजन दुकानदार को सीएचसी लेकर पहुंचे जहां डाक्टरो ने उसे मृत घोषित कर दिया।जिसके बाद मौके पर कोहराम मच गया।पुलिस ने परिजनो को समझा बुझाकर शांत कराने के बाद मृतक दुकानदार के शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिये भेजा।

रायबरेली जनपद के बछरावां थाना क्षेत्र के रामपुर सुदौली निवासी दीपक गुप्ता(40वर्ष) ने निगोहां के सुदौली मोड़ पर लक्ष्मी स्वीट हाउस के नाम से मिठाई की दुकान खोल रखी थी.दीपक कैटरिंग का भी काम करते थे.रविवार की शाम चार बजे के करीब दुकानदार दीपक मिठाई काउंटर की सफाई के बाद काउंटर के ऊपर इलेक्ट्रिक तराजू को ठीक से रख रहा था इस दौरान काउंटर में उतर रहे करंट की चपेट में आकर बुरी तरह झुलस कर गिर पड़ा।आस-पास मौजूद लोगो ने आनन-फानन दुकान की बिजली काटने के साथ ही मरणासन्न हालत में दुकानदार को इलाज के लिये मोहनलालगंज सीएचसी लेकर गये।जहां मौजूद डाक्टर ने दुकानदार को मृत घोषित कर दिया.जिसके बाद मौके पर कोहराम मच गया पत्नी व बच्चे पिता के शव से लिपटकर बिलख पड़े।सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची तो परिजनो ने शव का पोस्टमार्टम कराये जाने से मना कर दिया।मृतक का शरीर गर्म होने के चलते जिंदा होने की आस में परिज?न आनन-फानन एम्बुलेंस से ट्रामा सेंटर लेकर गये।जहां भी डाक्टर ने दुकानदार को मृत घोषित कर दिया। मृतक के परिवार में पत्नी पूजा व दो मासूम बेटे है।सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक दुकानदार के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा।

राधा कृष्ण मंदिर में साइबेरिया के एक जोड़े ने रचाई शादी

अमन लेखनी समाचार

सरोजनीनगर, लखनऊ। सरोजनीनगर के गौरी बिजनौर रोड स्थित एस के वाई पब्लिक स्कूल परिसर में निर्मित राधा कृष्ण मंदिर में साइबेरिया के एक जोड़े ने वैदिक रीति रिवाज के तहत अपनी शादी रचाई।

सरोजनीनगर के गौरी बिजनौर रोड स्थित एस के वाई पब्लिक स्कूल परिसर में निर्मित राधा कृष्ण मंदिर परिसर में प्रति वर्ष यहां जन्माष्टमी के अवसर पर स्कैन संस्था से जुड़े कई देशों के कृष्ण भक्त गण स्वामी मुरली कृष्ण के नेतृत्व में आते हैं।इस वर्ष भी 21 अगस्त 2024 को यहां आए थे और 4सितंबर तक रुकेंगे ।इस कार्यक्रम में 80 लोग और 40 परिवार आए हैं। जिनमे 50 लोग विदेशी है ।जिसमे रूस,इटली ,अमेरिका ,साइबेरिया सहित कई अन्य देशों के लोग शामिल है ।बीती 26 अगस्त को कृष्ण जन्म उत्सव के अवसर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी अपनी शिरकत की थी और मंदिर परिसर में आए सभी

भक्तो से मिले थे।इस अवसर पर श्री यादव राधा कृष्ण मंदिर में आरती की और उनके दर्शन भी किए ।आज रविवार को प्रातः 8 बजे इसी परपेक्ष्य में साइबेरिया एक लड़की और लड़के के जोड़े में एलेक जेंडा एवम सादिया ने वैदिक रूप से शादी रचाई । जिनका कन्या दान मंदिर के मुख्य पुजारी एवम पूर्व विधायक सरोजनी नगर श्याम किशोर यादव अपनी पत्नी के साथ किया ।इस अवसर पर क्षेत्र के तमाम राधा कृष्ण भक्त भी उपस्थित थे।

लखनऊ की यूनिवर्सिटी में आईपीएस की बेटी की मौत

हॉस्टल के कमरे में मिला शव-पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद खुलेगा राज

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। लखनऊ के राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय में बीती रात एक दुखद घटना सामने आई, जिसमें विश्वविद्यालय की लॉ थर्ड ईयर की छात्रा अनिका रस्तोगी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई।

नोएडा की रहने वाली अनिका एक वरिष्ठ आइपीएस अधिकारी की बेटी थी। इस घटना ने विश्वविद्यालय के परिसर में शोक की लहर है। उसके साथी सदमे में हैं।

फर्श पर मिली अनिका

शनिवार देर रात घटना तब प्रकाश में आई जब अनिका की रूममेट कमरे में लौटकर दरवाजा खटखटाने लगी, लेकिन दरवाजा अंदर से बंद होने के कारण नहीं खुला। उसने तुरंत हास्टल की वार्डन को इसकी जानकारी दी।

वार्डन ने मौके पर पहुंचकर दरवाजे को खोला तो अंदर का नजारा देखकर सभी सन्न रह गए।

अनिका फर्श पर अचेत अवस्था में पड़ी थी। उसे तत्काल अपोलो अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तत्काल जांच शुरू कर दी है।

कार्डियो अटैक से मौत की आशंका

बताया जा रहा है कि कार्डियो अटैक की वजह से छात्रा की मौत हुई है, लेकिन वास्तविक कारणों का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही चल सकेगा। अनिका की मौत की खबर से विश्वविद्यालय के छात्रों और शिक्षकों में गहरा शोक व्याप्त है। सभी लोग इस हादसे से स्तब्ध हैं और अनिका के परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं प्रकट कर रहे हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन ने भी मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस के साथ पूरा सहयोग करने की बात कही है। उधर, सुबह सूचना पर छात्रा के पिता संतोष रस्तोगी अस्पताल पहुंचे।

अचनाक मौत से सदमे हैं शिक्षक और साथी

विश्वविद्यालय के प्रवक्ता शशांक शेखर सिंह ने बताया कि अनिका रस्तोगी एक होनहार छात्रा थी, जो कानून की पढ़ाई के साथ-साथ विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेती थी। उसके सहपाठी और शिक्षक उसकी अचानक हुई मौत से सदमे में हैं और उसे एक मेहनती और समर्पित छात्रा के रूप में याद कर रहे हैं।

बंथरा इलाके में आए दिन चोरियों से परेशान ग्रामीणों ने चोरों से निपटने के लिए दे रहे पहरा

अमन लेखनी समाचार

सरोजनीनगर, लखनऊ। बंथरा इलाके में आए दिन हो रही चोरियों से परेशान ग्रामीणों ने अब पुलिस के बजाय चोरों से निपटने के लिए खुद ही मोर्चा संभाल लिया है। ग्रामीण अब खुद ही रात भर जागकर अपने-अपने गांवों में पहरा दे रहे हैं। बताते चलें कि बीते दिनों बंथरा के नरायनपुर, कन्नी खेड़ा और तिरवा आदि गांवों में बेखौफ चोर कई घरों को अपना निशाना बना चुके हैं। वह यहां से लाखों रुपए कीमत के गहने और हजारों रुपए की नगदी बटोर कर रफू चक्कर हो गए। लूट और चोरी के मामलों में चोरों को पहचानने की वजह से बीते दिनों यहां के नानमऊ गांव में रहने वाले बुजुर्ग मजदूर मखोले गौतम की हत्या भी कर दी गई। इतना ही नहीं नारायनपुर गांव में चोरी की घटना अंजाम देने आए चोर को जब घर के अन्दर एक युवक ने दबोचा तो चोर फायरिंग करके दहशत भी फैल चुके हैं। इसको लेकर बंथरा क्षेत्र के ग्रामीण काफी परेशान हैं। बीते दो दिन पहले यहाँ हिंदू खेड़ा गांव में भी चोर दो घरों को निशाना बनाकर गहने व नगदी बटोर ले गये। इससे परेशान ग्रामीण अब अपने गांवों में खुद लाठी डंडे व लाइसेंसी असलहे लेकर रतजगा करने लगे हैं। उन्हें पुलिस पर जरा सा भी भरोसा नहीं रह गया है कि पुलिस उनके घरों की सुरक्षा कर सकेगी। यही वजह है कि ग्रामीण खुद ही अपनी सुरक्षा करने के लिए रात भर जागकर गांव में पहरा दे रहे हैं। शनिवार रात कन्नी खेड़ा गांव में पहरा दे रहे लोगों को दो संदिग्ध युवक दिखाई पड़े तो ग्रामीणों ने चोर समझ कर उन्हें लाठी डंडे और लाइसेंसी असलहा लेकर दौड़ा लिया। लेकिन वह युवक आम के बागों के रास्ते कुछ ही क्षण में आंखों से ओझल हो गए। फिलहाल बंथरा इलाके के ग्रामीणों ने चोरी की घटनाओं को रोकने के लिए खुद जिम्मा उठा लिया है और पूरी रात जाग कर गांव के अंदर व बाहर पहरा दे रहे हैं।

पत्नी को आत्महत्या के लिये उकसाने का आरोपी पति गिरफ्तार

अमन लेखनी समाचार/अमित मिश्रा

निगोहां। एक गांव की युवती को प्रेमजाल में फंसाकर बहला फुसलाकर भगा ले जाने के बाद युवक ने उसके साथ आर्यसमाज मंदिर में शादी कर कुछ दिनो तक पत्नी की तरह अपने साथ रखा लेकिन मन भरने पर छोड़ दिया, काफी दिनों तक पत्नी न्याय के लिए इधर-उधर भटकती रही। जिसके बाद पति के धोखा देने से डिप्रेशन में आयी पत्नी अपने मायके में आकर रहने लगी.बीते शनिवार को पति के धोखा देने से नाराज पत्नी ने फांसी का फंदा गले में डालकर आत्महत्या की कोशिश की. इस दौरान उसने वीडियो बनाकर सोशल मीडिया ट्विटर व अन्य प्लेटफार्म पर शेयर किया मेटा कम्पनी ने पुलिस मुख्यालय को इसकी सूचना दी,जिसके बाद क्विक रिस्पांस देते हुये पुलिस ने सूचना के कुछ मिनटो के अंदर मौके पर पहुंचकर युवती की जान बचाते हुये समझा बुझाकर उसे

आरोपी अमन शर्मा - फोटो

शांत कराया और आत्महत्या के लिये उकसाने वाले पति अमन शर्मा पुत्र सुरेश शर्मा पर कार्यवाही का भरोसा दिलाया रविवार को पीड़िता के भाई की तहरीर पर पुलिस ने जीजा के विरूद्व आत्महत्या के लिये उकसाने की धारा में मुकदमा दर्ज कर त्वरित कार्यवाही करते हुये आरोपी अमन शर्मा निवासी कुशलखेड़ा थाना रहीमाबाद जनपद लखनऊ को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया,जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

राजधानी लखनऊ में दर्दनाक हादसा, बेकरी कारोबारी की गला रेतकर हत्या; गोमती में फेंका शव

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। बेकरी कारोबारी 35 वर्षीय शहाबुद्दीन की शुक्रवार देर रात गला रेतकर हत्या कर दी गई। हत्या के बाद शव पक्का पुल के पास गोमती नदी में फेंका गया। परिवारीजन ने कर्मचारी पर हत्या का आरोप लगाते हुए मदेयगंज थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। श हाबुद्दीन मूल रूप से बहराइच के हुजूरपुर कटका मरौठा के रहने वाले थे। कुछ माह से यहां मदेयगंज में किराये पर रह रहे थे। खदरा में रामलीला मैदान के पास नाइस केक के नाम से बेकरी का कारखाना चला रहे थे। शनिवार सुबह पुलिस ने शव को नदी से निकलवाया।

गले में किया गया धारदार हथियार से तेज वार

मोबाइल में मिले सिम से

परिवारीजन को फोन कर सूचना दी। बहराइच के रहने वाले सुल्तान शेख मंसूरी ने बताया कि यह उनका छोटा भाई है। बेकरी कर्मचारी इसरार अहमद भी पहुंच गया। पोस्टमार्टम में गले पर धारदार हथियार से काटे जाने की पुष्टि हुई। साथ ही चेहरे और पूरे शरीर पर चोटें मिलीं। इसरार अहमद ने बताया कि रात में सहाबुद्दीन को कर्मचारी अबू उस्मान कहीं लेकर निकला था। उसके बाद दोनों नहीं लौटे। देर रात उसके पास सहाबुद्दीन का फोन आया तो दोनों के बीच झगड़े की बात सुनाई दे रही थी।

रुपए जुटाकर शुरू किया था कारखाना

फिर सहाबुद्दीन और उस्मान का मोबाइल स्विच आफ हो गया। सुल्तान के मुताबिक रुपयों को लेकर अबू उस्मान से भाई का विवाद भी चल रहा था। भाई ने अबू उस्मान से 40 हजार रुपये उधार लिए थे। कुछ रुपये उसके पास खुद के थे। इसके अलावा इधर उधर से रुपये जुटाकर उसने बेकरी का कारखाना शुरू किया था। अबू उस्मान को सात हजार रुपये प्रति माह पर नौकरी पर रखा था, लेकिन खुद को पार्टनर मानता था। इस बात को लेकर अक्सर दोनों में झगड़ा होता था। अबू उस्मान ने भाई को मार दी। मदेयगंज इंस्पेक्टर राजेश सिंह ने बताया कि हत्यारोपित की तलाश में दबिश दी जा रही है।

यूपी के मौसम में बदलाव, कई जिलों में बारिश की संभावना; उमस से लोग परेशान

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। मौसम विभाग की मानें तो यूपी की राजधानी लखनऊ सहित कई जिलों में मौसम बन रहा है लेकिन बारिश नहीं हो रही है। ऐसे में लोग उमस से परेशान हो रहे हैं। गोरखपुर, वाराणसी, बरेली, मेरठ, अलीगढ़ सहित दर्जनों जिलों में हल्के बादल के साथ बारिश की संभावना है। बता दें कि यूपी में बारिश के चलते मौसम सुहावना बना हुआ है। हालांकि उमस से लोग परेशान हो रहे हैं। आगरा शहर में शनिवार को उमस ने पसीना छुड़ाया। सुबह से शाम तक सूरज व बादलों के बीच लुकाछिपी चलती रही। कभी सूरज ने आंखें दिखाई तो कभी बादल छाए। इससे शहरवासियों का पसीना बहता रहा। शाम 4:15 बजे के करीब शहर में हल्की बूंदाबांदी हुई। अधिकतम तापमान 34.8 डिग्री

सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 26.2 डिग्री सेल्सियस रहा। सामान्य तापमान से अधिकतम तापमान एक डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 1.6 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा।

कान्हा की छठी में भजन संध्या के साथ भंडारे का आयोजन

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ । पीजीआई क्षेत्र के वृंदावन सेक्टर 16 स्थित श्री वृन्देश्वर शिव मंदिर में हर वर्ष की तरह इस बार भी रविवार को हर्षोल्लास के साथ कान्हा की छठी मनाई गई और इस दौरान विशाल भंडारे का आयोजन भी किया गया। इस दौरान लगभग 2000 लोगों ने प्रसाद के रूप में कढ़ी चावल ग्रहण किया। मंदिर के पंडित अमित तिवारी ने बताया कि हर साल भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मंदिर में भगवान कृष्ण का जन्मोत्सव मनाया जाता है। जन्मोत्सव के 6 दिन बाद कान्हा की छठी मनाई जाती है। इस बार छठी का कार्यक्रम रविवार को संपन्न हुआ। इस दौरान महिलाओं

ने कृष्ण के गीतों पर जमकर नृत्य किया और तरह तरह के भजन भी गाए। वहीं भंडारे में भी इस बार काफी लोग प्रसाद ग्रहण करने आये। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ सुशील मिश्रा, सुनील दुबे, राजीव शुक्ला, राजेश ने अहम भूमिका निभाई, इसके अलावाँ अन्य लोगों ने भी कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

यूपी सरकार की बड़ी कार्रवाई, ग्रेटर नोएडा और यमुना विकास प्राधिकरण के नौ अधिकारियों को किया निलंबित

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। शासन ने नोएडा, ग्रेटर नोएडा और यमुना विकास प्राधिकरण के नौ अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। तबादला आदेश जारी होने के बाद भी नए तैनाती स्थल पर उपस्थित न होने के कारण इन्हें निलंबित किया गया है। साथ ही तीन अन्य अधिकारियों के विरुद्ध विभागीय जांच के आदेश दिए गए हैं। प्रमुख सचिव औद्योगिक अनिल कुमार सागर ने ये आदेश जारी किए हैं। शासन ने वित्तीय वर्ष 2022-23 एवं वित्तीय वर्ष 2023-24 में कई कार्मिकों का स्थानांतरण किया गया था। इसके बाद भी संबंधित विभागों के अधिकारियों ने शासनादेशों की परवाह किए बिना अपने चहेते कार्मिकों को कार्यमुक्त न करके अपने पास ही रखा था। शासन ने इस संबंध में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कई बार पत्र भेजा था, लेकिन अधिकारियों व कर्मचारियों ने शासन के पत्रों को गंभीरता से नहीं लिया। जिन कार्मिकों को निलंबित किया गया है। उनमें नोएडा के सहायक विधिक अधिकारी सुशील भाटी व नरदेव, निजी सचिव ग्रेड-1 विजेंद्र पाल सिंह, प्रबंधक वास्तुविद नियोजक सुमित ग्रोवर, सहायक प्रबंधक वास्तुविद नियोजक नोएडा के पद पर तैनात यूएस फारूख, लेखाकार प्रमोद कुमार, ग्रेटर नोएडा के प्रबंधक (सिविल) विजय कुमार बाजपेयी, सहायक प्रबंधक (सिविल) सुरेंद्र कुमार व यीडा के प्रबंधक अजब सिंह भाटी शामिल हैं।

यूपी में भू-अभिलेखों का डिजिटलीकरण होने से होंगे कई लाभ

अमन लेखनी समाचार

बिहार; झारखंड व पश्चिम बंगाल के अधिकारियों की हुई कान्फ्रेंस

लखनऊ। भू-अभिलेखों के डिजिटलीकरण का कार्य पूरा होने पर जमीन से संबंधित विवाद समाप्त हो जाएंगे। भू-रिकार्ड के डिजिटलीकरण का सरकार के साथ-साथ सबसे ज्यादा लाभ लोगों को मिलेगा। वह कहीं से अपनी भूमि की आनलाइन जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

डिजिटल इंडिया भूमि रिकार्ड आधुनिकीकरण कार्यक्रम (डीआइएलआरएमपी) को लेकर शनिवार को होटल हयात रीजेंसी में उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड व पश्चिम बंगाल में किए जा रहे कार्यों की समीक्षा केंद्रीय ग्रामीण विकास विभाग व भू संसाधन विभाग के अधिकारियों ने की। भूमि संसाधन विभाग के संयुक्त सचिव कुनाल सत्यार्थी ने बताया कि लोगों की सुविधा के लिए डीआइएलआरएमपी को केंद्र सरकार जल्द से जल्द पूरा करना चाहती है।

उन्होंने कहा कि जब राज्यों में भूमि रिकार्ड प्रबंधन प्रणाली का डिजिटलीकरण हो जाएगा तो लोग कहीं से भी अपनी भूमि के बारे में जानकारी आनलाइन हासिल कर सकेंगे। राजस्व न्यायालयों के डिजिटलीकरण से लोगों को लाभ मिलेगा। न्यायालयों को निर्णय लेने के लिए संबंधित भूमि के दस्तावेज आसानी से उपलब्ध रहेंगे।

वित्त मंत्रालय ने 5 हजार करोड़ की रखी है प्रोत्साहन राशि

वित्त मंत्रालय ने भू अभिलेखों के डिजिटलीकरण का कार्य पूरा करने वाले राज्यों के लिए 5,000 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि रखी है, इससे राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा होगी और काम जल्दी पूरा होगा। जो राज्य कार्य पूरा करेंगे उन्हें प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। पश्चिम बंगाल के अधिकारियों ने बताया कि उनके राज्य में भूमि की आनलाइन रजिस्ट्री का काम पूरा हो चुका है। लोगों को घर बैठकर ही रजिस्ट्री करवाने की सुविधा मिल रही है। राजस्व विभाग के अधिकारियों ने बताया कि उप्र में खतौनी, नक्शा, ड्रोन सर्वेक्षण व राजस्व न्यायालयों के डिजिटलीकरण का काम लगभग पूरा हो चुका है। कार्यक्रम का शुभारम्भ भूमि संसाधन विभाग के सचिव मनोज जोशी व राजस्व विभाग उत्तर प्रदेश के प्रमुख सचिव पी गुरुप्रसाद ने किया।

संक्षेप

घायल युवक की इलाज के दौरान मौत

शुक्लागंज, उन्नाव।पिंडोखा गांव निवासी आशीष शर्मा 4 दिन पहले यूपीएसआईडीसी में फॉल सीलिंग लगाने का काम कर रहा था।इस दौरान वह अनियंत्रित होकर जमीन पर जा गिरा और गंभीर रूप से घायल हो गया। इसकी जानकारी परिजनों को दी गई। परिजनों ने आशीष को इलाज के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां शनिवार रात उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई। मौत की सूचना मिलने पर परिजनों में कोहराम मच गया और उसके परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल हो गया।

अज्ञात बस ने स्कूटी में मारी टक्कर, बहन की मौत, मां व भाई घायल

शुक्लागंज, उन्नाव।कानपुर थाना चकेरी क्षेत्र के देवीगंज मजार के पास रहने वाले संजय पासवान का 22 वर्षीय बेटा शुभम पासवान, अपनी बहन साधना पासवान (24) व मां रामपति को लेकर स्कूटी से शनिवार देर रात कानपुर से उन्नाव की ओर हाईवे होते हुए जा रहे थे जैसे ही दोनों गंगा पुल पार किया तभी जाजमऊ चौकी स्थित हनुमान मंदिर के पास पहुंचे तभी पीछे से आ रही अज्ञात बस में स्कूटी में टक्कर मार दी। जिससे तीनों उछल कर सड़क पर जा गिरे। बस ने साधना को रौंद दिया। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।दुर्घटना देख आसपास के लोग दौड़े। घटना की जानकारी जाजमऊ चौकी पुलिस को दी गई।सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच पड़ताल की।जिसके बाद पुलिस ने 108 एम्बुलेंस को फोन कर बुलाया। वही पुलिस ने पंचनामा भरा।इस दौरान परिजनों ने पोस्टमार्टम करने से मना कर दिया।पुलिस काफी देर तक परिजनों को समझती रही। जिसके बाद परिजन शव लेकर अपने घर चले गए। वहीं युवती की मौत पर उसके परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया।वहीं दुर्घटना में मां बेटे को भी मामूली चोटे आई हैं।

लंबी बीमारी के चलते नगर अध्यक्ष के चचेरे भाई का हुआ निधन

अमन लेखनी समाचार

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव। नगर पंचायत के अध्यक्ष के चचेरे भाई समाजसेवी नितिन जायसवाल का लंबी बीमारी के बाद रविवार को निधन हो गया ।जिससे कस्बा व क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गयी । निधन की खबर सुनकर दिवंगत के घर पर लोगों का जमावड़ा लग गया । नगर पंचायत निवासी चैयरमैन मिथलेश जायसवाल के चचेरे भाई व समाजसेवी नितिन जायसवाल 32 वर्ष काफी समय से पेट की बीमारी से पीड़ित थे।जिनका इलाज काफी समय से चल रहा था । जिसके बाद उनकी तबियत खराब होने पर मलिहाबाद के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां रविवार को उनका निधन हो गया ।निधन की खबर से क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गयी । परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार दबौली के सरैया घाट पर कर दिया । दिवंगत अपने पीछे पत्नी मोनी व दो पुत्री रिया , परी व एक वर्षीय पुत्र शिवांश को रोता बिलखता छोड़ गया है ।

45 घंटे बाद भी गंगा में डूबे स्वास्थ्य विभाग में तैनात डिप्टी डायरेक्टर का नहीं लगा सुराग

अमन लेखनी समाचार

बांगरमऊ, उन्नाव। कानपुर के नानामऊ घाट पर नहाने के दौरान गंगा में डूबे स्वास्थ्य विभाग वाराणसी में तैनात डिप्टी डायरेक्टर आदित्यवर्धन सिंह उर्फ गौरव का 45 घंटे बाद भी कोई सुराग नहीं मिला है। बिल्हौर के नानामऊ से लेकर कानपुर के सरसैया घाट तक करीब 30 किमी. तक सर्च अभियान चलाया जा रहा है।इसमें 75 से ज्यादा पुलिस कर्मियों को लगाया गया है। लेकिन गंगा में उफान और तेज बहाव के चलते कुछ पता नहीं चल सका है। परिवार के लोग भी टीम के साथ लगे हुए हैं।

एसीपी बिल्हौर अजय त्रिवेदी ने बताया कि गंगा में डूबे स्वास्थ्य विभाग वाराणसी में तैनात डिप्टी डायरेक्टर आदित्य वर्धन सिंह उर्फ गौरव (45) की गंगा में तलाश की जा रही है। आदित्यवर्धन की तलाश में घटना के बाद से ही डीसीपी वेस्ट राजेश कुमार सिंह ने बिल्हौर से लेकर कानपुर के सरसैया घाट तक सर्च ऑपरेशन चलवा रहे हैं।इसमें एसडीआरएफ के 12 जवान, पीएसी के गोताखोरों की टीम के 10 जवान, 15 से ज्यादा निजी गोताखोर और कानपुर के गंगा बैराज पर जल पुलिस की टीम सर्च ऑपरेशन चला रही है।डूबे हुए आदित्यवर्धन की तलाश में बिल्हौर से लेकर कानपुर के सरसैया घाट तक सर्च ऑपरेशन चल रहा है। इसमें एसडीआरएफ, पीएसी और निजी गोताखोरों के साथ ही थानों के पुलिस कर्मियों समेत कुल 75 से ज्यादा लोगों की टीम गंगा में तलाश कर रही है। गंगा में जल स्तर काफी ज्यादा और तेज बहाव होने के चलते लापता आदित्यवर्धन का 45 घंटे बाद भी कोई सुराग नहीं मिल सका है।आदित्यवर्धन के गंगा में डूबने की खबर फैलने के बाद से परिवार में कोहराम मच गया। आदित्यवर्धन की जज पत्नी महाराष्ट्र से कानपुर के लिए रवाना हो गई हैं। उधन बहन के घर आस्ट्रेलिया गए माता-पिता भी आनन-फानन में आस्ट्रेलिया से लखनऊ की फ्लाइट में बैठ गए हैं।उन्नाव स्थित पैतृक आवास में तो कोहराम मचा ही है। हादसे की सूचना मिलने के बाद से घर के बाहर सैकड़ों की भीड़ लगी हुई है। उधर बिहार सीएम नितीश कुमार के निजी सचिव व आदित्य के चचेरे भाई अनुपम कुमार कानपुर पहुंच गए। बिल्हौर से लेकर कानपुर के सरसैया घाट के बीच चल रहे सर्च ऑपरेशन में वह खुद दोस्तों के मुताबिक आदित्य वर्धन सिंह की पत्नी शैलजा ओम प्रकाश महाराष्ट्र के अकोला में एडीजे हैं। बहन प्रज्ञा आस्ट्रेलिया में साफ्टवेयर इंजीनियर हैं। आदित्य के चचेरे भाई अनुपम कुमार बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सचिव हैं और भाभी प्रतिमा सिंह भी बिहार कैडर की आईएएस हैं। आदित्य के पिता रमेश चंद्र और मां शशि प्रभा अपनी बेटी के पास आस्ट्रेलिया में हैं। आदित्य की छोटी बेटी अपनी मां के साथ अकोला में है।अफसरों के साथ निगरानी कर रहे हैं।

फार्म हाउस में चल रही थी महंगी अवैध विदेशी शराब की पार्टी

अमन लेखनी समाचार

नवाबगंज, उन्नाव। सोहरामऊ थाना क्षेत्र इनारा फार्महाउस में देर रात आबकारी विभाग ने छापेमारी कर बड़ी मात्रा में अवैध विदेशी शराब और बियर बरामद की है फार्म हाउस में महंगी विदेशी शराब की पार्टी चल रही थी अचानक हुई छापेमारी से पार्टी में मौजूद लोगों में हड़कंप मच गया टीम ने दो लोगों को हिरासत में लेकर मुकदमा दर्ज कराया है सोहरामऊ थाना क्षेत्र स्थित लखनऊ कानपुर हाईवे के किनारे टोल प्लाजा के पास इनारा फार्म हाउस में देर रात एक पार्टी का आयोजन किया गया था मुखबीर की सूचना पर आबकारी विभाग की टीम में फार्म हाउस में छापेमारी की छापेमारी के दौरान वहां महंगी अवैध विदेशी शराब की पार्टी चल रही थी इसमें शराब और बीयर की बड़ी मात्रा मौजूद थी इस

दौरान 36 लीटर विदेशी शराब और 245 लीटर बीयर बरामद की गई इसके अतिरिक्त 48 नाग विदेशी शराब की बोतल और 562 बियर की बोतल भी पकड़ी गई पुलिस ने अमरेश कुमार सिंपल भाटिया को हिरासत में लिया है आबकारी विभाग में मौके से बरामद किए गए शराब और बीयर को कब्जे में लेकर सोहरामऊ थाने में एफआईआर दर्ज करवाई है जिला आबकारी अधिकारी रविशंकर ने इस कार्रवाई के बाद मीडिया से बातचीत में कहा कि हमारी कोशिश है कि अवैध शराब के कारोबार पूरी तरह से रोक लगाई जाए इस तरह की छापेमारी निरंतर जारी रहेगी इसके अलावा उन्होंने यह भी बताया कि इस तरह के आयोजनों में शामिल होने वाले लोग और आयोजक दोनों ही कानून के दायरे में आते हैं और उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी उन्होंने स्थानीय लोगों से भी अपील की यदि उन्हें इस तरह की गतिविधियों के बारे मे कोई भी सूचना मिले तो तुरंत संबंधित विभाग को सूचित करें ताकि समय पर कार्रवाई की जा सके।

बाइक सवार डिवाइडर से टकराए एक की मौत, साथी घायल

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे के औरास थाना क्षेत्र में दिल्ली से गोरखपुर को जा रहे एक बाइक पर सवार दो युवक डिवाइडर से टकरा गए। हादसे में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं दूसरा युवक गंभीर रूप से घायल हो गया।घटना सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल को इलाज के लिए जिला अस्पताल में कराया। मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।जानकारी के अनुसार जनपद गोरखपुर के थाना गगही क्षेत्र के ग्रामखोर हाल पता आशीष वर्मा पुत्र दुर्गेश वर्मा निवासी प्रेम नगर सब्जी मंडी आनंद पर्वत दिल्ली, प्रदीप पुत्र राम मनोहर निवासी गांधी कांप्लेक्स प्रेम नगर दिल्ली एक ही बाइक पर सवार होकर आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर होते हुए रविवार को दिल्ली से वापस गोरखपुर के लिए लौट रहे थे। अभी वह उन्नाव के औरास थाना क्षेत्र के पास पहुंचे ही थे कि अचानक बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। दोनों बाइक सवार एक्सप्रेस-वे पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए।हादसे की जानकारी पर थाना पुलिस मौके पर पहुंची।दोनों को इलाज के लिए पास के सामुदायिक स्वास्थ्य में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने आशीष वर्मा को मृत घोषित कर दिया।वहीं प्रदीप वर्मा की हालत गंभीर देखते हुए उसे बेहतर इलाज के लिए जिला अस्पताल रेफर कर दिया। दोनों मौसेरे भाई हैं ट्रांसपोर्ट का काम करते थे।पुलिस में घटना की जानकारी परिजनों को दी है। उनके आने के बाद अग्रिम कार्रवाई करेगी।

बारिश के बाद शहर की हालत खराब जिम्मेदार बने अंजान

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। बारिश के बाद शहर की सड़कें और मोहल्ले बदहाल हो गए हैं। शहर के विभिन्न इलाकों के लोगों ने स्थानीय अधिकारियों और जिम्मेदार व्यक्तियों की अनदेखी को उजागर किया है।यह तस्वीरें शहर की गंभीर स्थिति को साफ दिखा रही हैं।रेलवे लाइन के ऊपर से गुजरने वाले हरदोई ओवर ब्रिज पर ध्यान केंद्रित किया। यह ओवर ब्रिज शहर का एक प्रमुख मार्ग है।जिस पर रोजाना हजारों वाहन गुजरते हैं। यहां की स्थिति काफी चिंताजनक है। ओवर ब्रिज पर बड़े-बड़े गड्ढे हो गए हैं, जो यातायात के लिए खतरनाक साबित हो सकते हैं। गड्डों की भरपाई और मरम्मत की तत्काल आवश्यकता है। लेकिन मौजूदा स्थिति को देखकर ऐसा लगता है कि इन समस्याओं की अनदेखी की जा रही है।नगर पालिका के मोहल्ला कासिम नगर मे यहां की सड़कें कूड़े और कीचड़ से सनी हुई थीं।सड़क पर जमा पानी और गंदगी ने इलाके की स्थिति को और भी दयनीय बना दिया है।इससे स्थानीय निवासियों को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।खासकर बारिश के मौसम में सफाई व्यवस्था की कमी और जल निकासी के सही प्रबंध की कमी ने यहां के हालात को और भी बिगाड़ दिया है।अनवर नगर में भी स्थिति बेहतर नहीं थी। यहां सड़कें इतनी खराब हो गई हैं कि देखने वाले तय नहीं कर पा रहे थे, कि यह सड़क है, नहर है या नाला।सड़क पर पानी भर गया था और कीचड़ के कारण चलना भी मुश्किल हो गया था।इसी तरह का दृश्य बड़ा चौराहा और छोटा चौराहा जोड़ने वाली सड़क पर भी देखने को मिला।यहां गड्ढों की भरमार ने सड़क को इस हद तक खराब कर दिया है, कि वाहन डांस करते हुए नजर आ रहे हैं। यह स्थिति न केवल यातायात के लिए खतरनाक है बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी को भी प्रभावित कर रही है।राहगीरों ने बताया कि वे कैसे बचकर निकलते हैं, यह सिर्फ वे ही जानते हैं। लोगों का कहना है कि सड़कें इतनी खराब हैं, कि कभी भी हादसा हो सकता है।लेकिन सुधार के कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं। स्थानीय निवासियों का कहना है कि वे अक्सर गिरते पड़ते रहते हैं।प्रशासन की तरफ से कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं।

शमशान घाट पर युवक के शव में हरकत देख परिजन लेकर पहुंचे अस्पताल

अमन लेखनी समाचार

शुक्लागंज, उन्नाव। सदर कोतवाली क्षेत्र के पूरन नगर निवासी 30 वर्षीय युवक छोटू की मौत के बाद एक अप्रत्याशित घटना घटी। रविवार दोपहर को छोटू के अंतिम संस्कार के दौरान श्मशान घाट पर उसके शव में अचानक हरकत देखी गई, जिससे वहां अफरा-तफरी मच गई।छोटू की मौत की पुष्टि सुबह ही हो गई थी और उसके शव को अंतिम संस्कार के लिए शुक्लागंज के मिश्रा कॉलोनी स्थित श्मशान घाट पर ले जाया गया। अंतिम संस्कार की प्रक्रिया चल रही थी, तभी शव में हरकत होने की सूचना पर उपस्थित लोगों में हड़कंप मच गया।परिजनों ने शव में हरकत देखी और उन्होंने जीवित होने की आशा जताते हुए तुरंत शव को अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया।अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने शव की स्थिति का परीक्षण किया और उसे मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद परिजनों और स्थानीय लोगों के बीच स्थिति तनावपूर्ण हो गई। चिकित्सकीय जांच के बाद पता चला कि शव की हरकत रगों की अंतिम क्रियाओं का परिणाम हो सकता है, जिसे शव की मृत्यु के बाद की सामान्य प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। इस घटना ने श्मशान घाट पर मौजूद लोगों को स्तब्ध कर दिया और इसके बाद स्थानीय प्रशासन को सूचित किया गया। प्रशासन ने स्थिति को नियंत्रित करने और परिवार को आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए त्वरित कार्रवाई की। इस तरह की घटनाएं अक्सर दुःखद और तनावपूर्ण होती हैं, और समाज में इस तरह की परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता और समझदारी की आवश्यकता होती है।

जबरन खेत की मेड़ काट कर मिलाया अपने खेत में

अमन लेखनी समाचार

सुमेरपुर, उन्नाव। थाना बिहार अन्तर्गत आवंटित जमीन को जबरन जोत डालने पर पीड़ित ने पुलिस की चौखट पर जाकर न्याय की गुहार लगायी है। थाना बिहार के कलानी ग्राम सभा निवासी रविशंकर पुत्र मैकू ने प्रार्थना पत्र देते हुए बताया कि खाता संख्या 00115 के गाटा संख्या 118/1 में 0.1900 हे० जमीन उसके नाम दर्ज है। पास के गाँव सराय-मनिहार निवासी लक्ष्मी पुत्र स्व०राजाराम ने जबरदस्ती ही जमीन जोत डाला है व मेड काट के अपने खेत मे मिला लिया है। मना करने पर जान माल से मारने की धमकी दी जा रही है।वही दूसरे पक्ष का कहना है स्थानीय लेखपाल द्वारा मेरी जमीन को नाप कर दे दिया था। मेरे द्वारा किसी प्रकार का कोई कब्जा नही किया जा रहा है। उक्त जमीन पर रविशंकर द्वारा ही जबरन मेड तोड़ कब्जा किया जा रहा है। लेखपाल ज्ञानेंद्र यादव का कहना है दोनो ही पक्षो के मध्य कुछ दिन पूर्व खेत के रकबे को लेकर संदेह उत्पन्न हुआ था जिसमे मौके पर पहुँच कर समस्या हल कर दी गयी थी।

दो दुकानों से चोरों ने नगदी समेत पार कर दिया हजारों का सामान

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव।बीती रात अज्ञात चोरों ने दो थाना क्षेत्रो के अन्तर्गत अलग अलग दुकानों से नगदी समेत हजारों का सामान पार कर दिया सुबह जब दुकान स्वामियों को पता चला तो उनके होश उड़ गए पीड़ितो ने पुलिस को चोरी की तहरीर दी पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही हैथाना माखी क्षेत्र के अकबरपुर दबौली निवासी अंकित कुमार तिवारी पुत्र अवधेश कुमार ने पुलिस को दी तहरीर में बताया की मेरी थाना माखी क्षेत्र के रऊ करना चौराहे पर रानी मेडिकल स्टोर किए हुए हैं बीती रात अज्ञात चोरों ने दुकान में घुसकर गोलक में रखे 5 हजार रुपए पार कर ले गए सारी घटना दुकान में लगे सी सी टी वी कैमरे में कैद है दूसरी घटना को चोरों सदर कोतवाली क्षेत्र के कब्बा खेड़ा में तिवारी इलेक्ट्रानिक के दुकान में घुसकर हजारों का कीमती सामान पार कर दिया पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

समाजवादी पार्टी का सदस्यता अभियान: राजधानी मार्ग पर जोश और उत्साह

अमन लेखनी समाचार

शुक्लागंज, उन्नाव। राजधानी मार्ग स्थित रश्मि लोक में समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष राजेश यादव और पूर्व सांसद अन्नू टंडन की उपस्थिति में मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड के जिला अध्यक्ष अंकित यादव द्वारा एक प्रभावशाली सदस्यता अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया।इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के विभिन्न नेताओं और कार्यकताओं ने भाग लिया, जिन्होंने पार्टी की नीतियों और आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी की रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की।जिला अध्यक्ष राजेश यादव ने समाजवादी पार्टी की नीतियों और उनकी महत्वता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पार्टी की प्राथमिकता गरीबों, दलितों और वंचित वर्गों के उत्थान पर है, और इसे लेकर पार्टी ने कई योजनाएं बनाई हैं।पूर्व सांसद अन्नू टंडन ने इस बात पर जोर दिया कि युवाओं को पार्टी की मुख्य धारा में जोड़ने की जरूरत है, ताकि वे समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकें और आगामी विधानसभा चुनावों में समाजवादी पार्टी के उम्मीदवारों की जीत सुनिश्चित कर सकें। कार्यक्रम में कई प्रमुख युवा नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे, जिनमें हेमंत पाल, अमन अंजुम, लकी यादव, सैयद इरफान, शुभ गुप्ता, राजन कनौजिया, अनिल निषाद, चंद्रपाल निषाद, सोमिल अनिल रावत, विनोद, कल्लू कुशवाहा, मिंटू निषाद, लक्षण, नंदीलाल लोधी, मनीष, सचिन, अंशु, बउवा रावत, मनोज निषाद, और हिमांशु गौतम शामिल थे।इस अभियान में मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड, युवजन सभा , लोहिया वाहिनी , छात्र सभा फ्रंटल संगठन के अध्यक्षों अंकित यादव , अमन अंजुम , लक्की यादव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई व युवाओं को पार्टी के साथ जुड़ने और समाजवादी विचारधारा को फैलाने के लिए प्रेरित किया।सभी नेताओं ने मिलकर पार्टी की दिशा और कार्यनीति पर चर्चा की और आगामी चुनावों के लिए एकजुटता और संघर्ष का संकल्प लिया।

ग्रामीण ने जल निकासी ना होने की शिकायत की मुख्यमंत्री पोर्टल पर

अमन लेखनी समाचार

पुरवा, उन्नाव। असोहा ब्लाक की ग्राम पंचायत कांथा निवासी गौरव त्रिपाठी ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत करते हुए बताया की ग्राम पंचायत कांथा के पास से कानपुर-लखनऊ एक्सप्रेस वे निकल रहा है। एक्सप्रेसवे निर्माण के दौरान निर्माण कार्य कर रही पीएनसी कंपनी ने जल निकासी के लिये असोहा-भल्लाफार्म मार्ग पर बनी पुलिया तोड़ दिया और उसका निर्माण नहीं कराए जाने से किसानों की फसल जलमग्न होने के साथ गांव मे भी बरसात होने जल भराव की समस्या से जूझना पड़ता है। वहीं रविवार को कार्यदायी संस्था ने सड़क खोदकर बंबा डलवा दिया है जिससे जल निकासी हो सके।

पति-पत्नी के 37 विवादित जोड़े आपसी कलह भुलाकर एक साथ रहने को हुए राजी

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। सिद्धार्थ शंकर मीना पुलिस अधीक्षक उन्नाव के कुशल निर्देशन में रिजर्व पुलिस लाइन उन्नाव एवं विभिन्न थानों में स्थित महिला हेल्प डेस्क में पति-पत्नी के विवादित जोड़ों को बुलाया गया। परिवार परामर्शदाताओं एवं महिला हेल्पडेस्क की टीम द्वारा उनकी काउंसलिंग करते हुए उनके बीच उपजे विवाद को खत्म कराया गया तथा परिवार को टूटने से बचाया। तदोपरान्त परिवार परामर्श केन्द्र व महिला थाना से 07-07, थाना सोहरामऊ से 06, थाना औरास से 05, थाना गंगाघाट, थाना सफीपुर, थाना अचलगंज, थाना दही, थाना हसनगंज से 02-02 व थाना बांगरमऊ व थाना फतेहपुर चौरासी से 01-01 जोड़े को बिना विवाद साथ रहने के वादे के साथ विदा किया गया। उपरोक्त पुनीत कार्य में डा0 आशीष श्रीवास्तव प्रभारी परिवार परामर्श समिति एवं सलाहकारों में डा0 मनीष सिंह सेंगर, संजय चौरसिया, डॉ0 एस के पाण्डेय एवं सहयोगी शिवेन्द्र सिंह चौहान, अंकित सिंह, स्वास्तिक मिश्रा व पुलिस टीम से निरीक्षक संतोष कुमारी सिंह, महिला थानाध्यक्ष अर्चना,महिला उप निरीक्षक भगीरथी,महिला उप निरीक्षक मिथिलेश कुमारी,महिला उप निरीक्षक मधु श्रीवास्तव, महिला उप निरीक्षक हंसा भदोरिया, पूजा शर्मा, लक्ष्मी, अंशू रानी साधना, मीनू, अंजूला, शंकुतला , सोनी मिश्रा, आकांक्षा, सुमन यादव, पूजा यादव, रूबी, प्रीति, सोनम, लक्ष्मी, अलका यादव का विशेष योगदान रहा।

डम्फर फंसने से लगा जाम, जूझते रहे राहगीर

अमन लेखनी समाचार

पुरवा, उन्नाव।कालूखेड़ा भल्लाफार्म मार्ग पर चंदनखेड़ा कस्बे में राजपूत मशीनरी स्टोर के आगे शनिवार सुबह गिट्टी लेकर जा रहा डम्फर बीच रोड पर धँस गया। जिसकी वजह से जाम लग गया। डंफर फंसने की वजह से आने जाने वालों को दिक्कते उठानी पडी वही बड़े तथा भारी वाहन चन्दनखेड़ा से आगे नही निकल पा रहे है।जिसके चलते जाम जैसी स्थित उत्पन्न हो गई है।पुलिस के पहुंचने व लगभग छह घंटे बाद जाम खुल सका।इस संबंध में एसओ विमल कांत गोयल ने बताया कि जाम को खुलवा दिया गया है।

चलती ट्रेन के नीचे घुसकर महिला ने किया जान देने का प्रयास

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव।गंगाघाट रेलवे स्टेशन पर एक महिला ने चलती ट्रेन में घुसने का प्रयास किया। घटना रविवार दोपहर की उस समय घटी जब ट्रेन संख्या 12180 आगरा फोर्ट-लखनऊ इंटरसिटी डाउन लाइन से लखनऊ की ओर रवाना हो रही थी। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने समय रहते महिला की जान बचाकर परिजनों को सुपुर्द कर दिया।जानकारी के अनुसार गंगाघाट रेलवे स्टेशन पर जैसे ही ट्रेन ने स्टेशन के रेलवे क्रॉसिंग को पार किया, नगर के पोनी रोड मोहल्ले की महिला ने अचानक चलती ट्रेन में घुसने की कोशिश की।महिला की इस हरकत को देख एक राहगीर ने तुरन्त उसकी सहायता की और उसे ट्रेन से खींचकर बाहर किया। राहगीर की सतर्कता के कारण महिला की जान बच गई।यदि राहगीर थोड़ा भी देर कर देता, तो महिला की जान जा सकती थी।सूचना मिलने पर आरपीएफ की टीम ने तुरंत मौके पर पहुंचकर स्थिति की जांच की। उन्होंने महिला से आत्महत्या की कोशिश का कारण पूछा।महिला ने बताया कि उसके मामी ने उसे लांछित किया है। उसका पति बंगलौर में किसी फैक्ट्री में काम करता है।महिला का कहना था कि

शादी के 4 वर्ष बाद भी उसके जीवन में समस्याएं बनी हुई हैं।जिससे वह मानसिक तनाव में है।आरपीएफ ने महिला के परिजनों से संपर्क कर स्थिति से अवगत कराया।महिला का भाई मौके पर पहुंचकर बताया कि उसकी बहन की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। उसने कहा कि उसकी बहन को सिर में चोट लग गई थी। इसके कारण वह कभी-कभी अजीब हरकतें करती है।भाई ने आरपीएफ को बताया कि वह अपनी बहन की देखभाल के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। लेकिन उसकी मानसिक स्थिति के कारण ऐसा की है। आरपीएफ ने महिला को उसके भाई के सुपुर्द कर दिया।

स्वास्थ्य विभाग की गठित टीम ने जिला अस्पताल का किया निरीक्षण

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। कायाकल्प अवार्ड योजना के तहत स्वास्थ्य निदेशालय द्वारा गठित टीम ने जिला अस्पताल का निरीक्षण किया। इस दौरान टीम के सदस्यों ने अस्पताल में मरीजों को मिल रही स्वास्थ्य सेवाओं की हकीकत परखी। अस्पताल परिसर में जमा गंदगी देखकर जिम्मेदारों को जमकर फटकार लगाई।अस्पतालों में मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता के आधार पर पूरे प्रदेश में अस्पतालों की रैंकिंग तय होती है। अच्छी रैंक वाले अस्पतालों को स्वास्थ्य सेवाओं और बेहतर करने के लिए विशेष बजट की व्यवस्था की जाती है। कायाकल्प की तीन सदस्यीय टीम सुबह जिला अस्पताल पहुंची।टीम में शामिल डॉ. सतीश कुमार यादव, डॉ. शाहीन और डॉ. चंद्र प्रकाश ने जिला अस्पताल का निरीक्षण किया और

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग उत्तर प्रदेश

मरीजों से उन्हें मिल रहे उपचार के बारे में जानकारी ली।अस्पताल पहुंची टीम के सदस्य सबसे पहले ब्लड बैंक पहुंची। टीम ने यहां लगे फायर एक्सटिंग्वीशरों का निरीक्षण किया और उनकी समय सीमा देखी। ट्रामा सेंटर से बाहर निकले टीम के सदस्य कचरा निस्तारण केंद्र पहुंचे। यहां जमा कचरा देखकर टीम के सदस्यों ने नाराजगी जाहिर की। यहां से वापस लौट रहे टीम के सदस्यों को रास्ते में गाय टहलती मिली। इसपर उन्होंने सफाई सफाई सुपरवाइजर को बुलाकर जमकर फटकार लगाई।दवा वितरण कक्ष में फार्मासिस्ट संजय यादव से उपलब्ध दवाओं का स्टॉक रजिस्टर से मिलान कराया।इस दौरान दवाओं को क्रम में रखने और जल्द एक्सपायरी डेट वाली दवाओं को अलग रखने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान टीम ने इमरजेंसी वार्ड, वार्ड दो, ऑपरेशन थियेटर, बर्न यूनिट आदि का भी निरीक्षण किया।निरीक्षण करने वाली टीम ने मौजूद डॉक्टरों को निर्देश दिए स्वास्थ्य सेवाओं में किसी प्रकार के लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस दौरान टीम के सदस्यों के साथ डॉ. शोभित अग्निहोत्री, स्टाफ नर्स मंजू, आशीष समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

सम्पादकीय

कांग्रेसी सीएम का शीर्ष कोर्ट पर आक्षेप निंदनीय

सियासत में सुप्रीम कोर्ट को घसीटना उचित नहीं है। इससे न्याय के मंदिर की साख पर आंच आएगी। उच्चतम न्यायालय के किसी भी फैसले को राजनीतिक चश्मे से देखना राजनीतिक अपरिपक्वता है। जब इंसाफ के सभी द्वार बंद हो जाते हैं तो लोग सर्वोच्च अदालत की दर पर जाते हैं। देश के आवाम की आस्था सुप्रीम कोर्ट पर है, हमारे नेताओं को इस आस्था को बरकरार रखने में मदद करनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के एक बयान पर उन्हें जमकर फटकार लगाई है। दिल्ली शराब नीति घोटाले में सुप्रीम कोर्ट ने तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री केसीआर की बेटी के. कविता को जमानत दे दी। कांग्रेसी सीएम रेवंत ने इसे बीआरएस और बीजेपी की डील बताया था। इस पर जस्टिस बीआर गवई की बेंच ने रेवंत रेड्डी के वकील मुकुल रोहतगी से पूछा- 'क्या आपने अखबार में पढ़ा कि उन्होंने (रेवंत) क्या कहा? उसे पढ़िए।' कोर्ट ने कहा- सियासी लड़ाई में कोर्ट को घसीटना ठीक नहीं है। कोर्ट नेताओं से पूछकर फैसले नहीं सुनाती। ऐसे बयान लोगों के मन में आशंका पैदा करते हैं। सुप्रीम कोर्ट 2015 के कैश-फॉर-वोट घोटाले से जुड़े केस को भोपाल ट्रांसफर करने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें तेलंगाना के सीएम रेवंत रेड्डी भी एक आरोपी हैं। याचिका बीआरएस विधायक गुंटाकंडला जगदीश रेड्डी ने लगाई है। मई 2015 में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने रेवंत रेड्डी को विधान परिषद चुनावों में टीडीपी उम्मीदवार को सपोर्ट करने के बदले 50 लाख की रिश्वत देते हुए गिरफ्तार किया था। रेवंत, तब तेलुगु देशम पार्टी में थे। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली शराब नीति घोटाले में 5 महीने से जेल में बंद के. कविता को 27 अगस्त को जमानत दे दी थी। कविता की जमानत पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा था- महिलाओं के प्रति संवेदनशील रहें अदालतें। कांग्रेस नेता सीएम रवंत रेड्डी तेलंगाना की राजनीति कर सकते हैं, बीआरएस व भाजपा पर राजनीतिक आरोप लगा सकते हैं, लेकिन इन सब में सुप्रीम कोर्ट की छवि खराब करना एक सीएम को शोभा नहीं देता। सुप्रीम कोर्ट ने खुद ही कई बार कहा है कि उनके फैसले की समालोचना से उसे कोई ऐतराज नहीं है, लेकिन शीर्ष अदालत के फैसले के पीछे की नीयत पर शक करना एक संवैधानिक संस्था की प्रतिष्ठा को धूमिल करना है। देश में सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले से कई बार नजीर पेश की है, तो कई बाद देश को दिशा दी है। जो काम हमारी विधायिका नहीं कर सकी है, वह सुप्रीम अदालत ने किया है। सरकार किसी भी दल की रही हो, सुप्रीम कोर्ट ने हमेशा संविधान की रक्षा की है, न्याय की गरिमा की रक्षा की है। सुप्रीम कोर्ट के अनगिनत फैसले हैं, जिसने देश को नई दिशा दी है। कोई भी दल हो, कोई भी राजनेता हों, उन्हें सुप्रीम कोर्ट को लेकर अनर्गल टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। खासकर कांग्रेस नेता सीएम रेवंत रेड्डी को तो खुद शर्मसार होना चाहिए कि उन पर ही भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप हैं, उन्हीं के मामले में सुनवाई हो रही है और वे खुद शीर्ष अदालत के फैसले को लेकर राजनीतिक आरोप लगा रहे हैं। सीएम रेवंत रेड्डी को अपने ऊपर लगे करप्शन के आरोपों पर शर्मिंदा होना चाहिए। कांग्रेस सरकार पर पूर्व में आदर्श, टूजी, कोल ब्लॉक, स्पेक्ट्रम, राष्ट्रमंडल खेल आदि अनेक घोटालों के आरोप आयद हो चुके हैं। देश के राजनेताओं व सरकार में आसीन नेताओं को अपनी राजनीति के लिए अदालत की निष्ठा पर आक्षेप नहीं लगाना चाहिए, यह निंदनीय है।

दो टूक
डा. विशेष गुप्ता

राष्ट्रपति महोदया की महिला उत्पीड़न को लेकर यह पीड़ा अनायास ही नहीं है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की हालिया रिपोर्ट भी बताती है कि यहां 16 मिनट में एक यौन दुष्कर्म घटना होती है। साथ ही प्रत्येक घण्टे महिलाओं के विरुद्ध 50 अपराध घटित होते हैं। इनमें 10 फीसदी से भी अधिक यौन दुष्कर्म की घटनाएं 18 साल से कम उम्र के नाबालिगों के साथ घटित होती हैं। कहना न होगा कि आज देश व प्रदेशों के मुख्तलिफ हिस्सों में मासूम लड़कियों व महिलाओं के साथ घटने वाली यौन उत्पीड़न की वारदातों ने देश व समाज को झकझोर कर रख दिया है। लगता है कि निर्भया यौन उत्पीड़न की घटना के बाद समाज की सोच में कोई खास परिवर्तन नहीं आया है।

महिला उत्पीड़न पर राष्ट्रपति की पीड़ा

कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में महिला डॉक्टर की दुष्कर्म के बाद हत्या पर राष्ट्रपति की पीड़ा ध्यान देने योग्य है। उन्होंने बहुत दर्द भरे शब्दों में कहा कि मैं निराश और भयभीत हूं। नौ अगस्त को कोलकाता में घटित इस दर्दनाक घटना के बाद उनका यह पहला बयान है। उन्होंने स्पष्ट लिखा कि कोई भी सभ्य समाज बेटियों और बहनों पर इस तरह के अत्याचार की अनुमति नहीं देता। देश के साथ-साथ उन्होंने भी आक्रोशित होते हुए कहा कि जिस समय छात्र, डॉक्टर और नागरिक कोलकाता में प्रदर्शन कर रहे थे, ऐसे समय में भी ऐसे अपराधी अन्यत्र शिकार की तलाश में घात लगाए हुए थे। उन्होंने दिसम्बर 2012 में दिल्ली में निर्भया के साथ हुए दुष्कर्म और हत्या की चर्चा करते हुए कहा कि कुछ बच्चों ने मुझसे बड़ी मासूमियत से इस घटना के बारे में पूछा, मगर क्या उन्हें ऐसी घटना आगे घटित न होने का भरोसा दिया जा सकता है। निश्चित ही इस समय महिला उत्पीड़न के मुद्दे पर समाज को ईमानदार और निष्पक्ष रहकर आत्म मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रपति महोदया के बयान के आलोक में यदि महिला उत्पीड़न से जुड़ी घटनाओं का मूल्यांकन करें तो ज्ञात होता है कि अभी हाल ही में कोलकाता में डॉक्टर से किए गए यौन व्यभिचार से देशभर में फैले आक्रोश और प्रदर्शनों के बीच विधायिका की एक बदरंग तस्वीर भी सामने आई है। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स, एडीआर की ओर से जारी हालिया रिपोर्ट में 16 वर्तमान सांसदों और 135 विधायकों पर महिलाओं के विरुद्ध अपराध में मुकदमें दर्ज हैं। इतना ही नहीं, बल्कि दो सांसदों और 14 विधायकों पर दुष्कर्म के मामले चल रहे हैं। खास बात यह है कि बंगाल के सबसे अधिक जनप्रतिनिधि ऐसे मामलों का सामना कर रहे हैं। गौरतलब है कि राष्ट्रपति महोदया की महिला उत्पीड़न को लेकर यह पीड़ा अनायास ही नहीं है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की हालिया रिपोर्ट भी बताती है कि यहां 16 मिनट में एक यौन दुष्कर्म घटना होती है। साथ ही प्रत्येक घण्टे महिलाओं के विरुद्ध 50 अपराध घटित होते हैं। इनमें 10 फीसदी से भी अधिक यौन दुष्कर्म की घटनाएं 18 साल से कम उम्र के नाबालिगों के साथ घटित होती हैं। कहना न होगा कि आज देश व प्रदेशों के मुख्तलिफ हिस्सों में मासूम लड़कियों व महिलाओं के साथ घटने वाली यौन उत्पीड़न की वारदातों ने देश व समाज को झकझोर कर रख दिया है। लगता है कि निर्भया यौन उत्पीड़न की घटना के बाद समाज की सोच में कोई खास परिवर्तन नहीं आया है। देश में ऐसी घटनाओं को रोकने के सभी उपाय भी निष्फल हो रहे हैं। यौन उत्पीड़न की अधिकांश घटनाएं आज कानूनविदों व समाजशास्त्रियों को नए सिरे से सोचने को मजबूर कर रही हैं। इस संदर्भ से जुड़े कुछ और आंकड़े खुलासा करते हैं कि भारत में यौन उत्पीड़न के मामले में लगभग 93 फीसदी दोषी पीड़िता के ही परिचित होते हैं। इन आंकड़ों की तकलीफदेय तस्वीर यह है कि 31 फीसदी यौन हिंसा व छेड़खानी में पीड़ित लड़कियों की उम्र 14 साल से भी कम रही।

दरअसल, मामला चाहे महिला छेड़छाड़ का हो

अथवा यौन हिंसा का, इन सभी घटनाओं को अब किसी एक सामाजिक पैमाने से नहीं मापा जा सकता। आज इसके गहन अध्ययन के लिए एक बहुआयामी वस्तुनिष्ठ उपागम की जरूरत महसूस की जा रही है। लेकिन फिर भी लगातार बढ़ती यौन हिंसाओं की इन घटनाओं पर कम से कम एक हालिया समाज-मनोवैज्ञानिक दृष्टिपात जरूरी हो जाता है। इसमें कोई शक नहीं कि सूचना तकनीक ने आज की दुनिया में एक खलबली मचा दी है। गांवों से लेकर महानगरों तक मोबाइल व इंटरनेट ने बच्चों, युवाओं व महिलाओं के बीच अपना पूरा दखल बना लिया है। असल स्थिति यह है कि आप सड़क के किनारे तक से दस-बीस रुपयों का इंटरनेट सिम खरीदकर पूरी दुनिया की सैर कर सकते हैं। यहां तक कि पोर्न साहित्य तक भी इन्हीं सिम में कैद है।

संयुक्त परिवार के टूटने और छोटे परिवारों में मां-बाप और बच्चों के बीच बढ़ती दूरी व संवादहीनता ने टीनेजर्स के बीच सोशल मीडिया के रूप में संवाद का एक नया नेटीजन पीयर ग्रुप पैदा कर दिया है। ध्यान रहे कि यह नेटीजन समूह ही उनके हर तरीके के सुख-दुख में पूरी तरह हमसाज है। मां-बाप को इस सच्चाई को समझने की फुर्सत ही नहीं है कि पोर्न उनके बच्चों के बेडरूम तक पहुंच गया है। सच तो यह है कि पोर्न का प्रभाव ही यौन संबंधों के ढांचे को नई यौन प्रयोगशाला में रूपान्तरित कर रहा है। बढ़ते यौन आवेग के पीछे कहीं न कहीं इस मुद्दे को भी समाहित करना समीचीन होगा। दूसरी ओर, इस संदर्भ में यह भी देखने में आ रहा है कि आज सबसे अधिक हिंसा उन लड़के-लड़कियों पर हो रही है जो या तो वे घर से बाहर रह रहे हैं अथवा वे समाज के कमजोर सामाजिक-आर्थिक वर्ग से आते हैं।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि निर्भया काण्ड के पश्चात बलात्कार के दोषियों के प्रति कानून की सख्ती हुई है। मगर इसके बाद भी बालिग के साथ कहीं-कहीं नाबालिग अपराधी तक अब बलात्कार के बाद पीड़िता की हत्या करके सबूत मिटाने पर आमादा हैं। सबसे दुखद तो यह है कि यौन उत्पीड़न से जुड़े मामलों में राजनीति और कानून से जुड़े पुरोधाओं के गैरजिम्मेदाराना बयानों ने भी इन व्यभिचारियों के हौसले बुलंद किए हुए हैं। कड़वा सच यह है कि यौन दुष्कृत्यों से जुड़ी इन सभी घटनाओं के पीछे छिपा वह सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण भी है जिसे हमने अपनी खुली बाजारु अर्थव्यवस्था तथा जाति व धर्म पर आधारित सामाजिक वैमनस्य और दबंगई राजनीति से तैयार किया है। विचारहीन व्यवहार से जुड़ी इस संक्रमित संस्कृति में आज सामाजिक संवेदना, दूसरे के प्रति सम्मान, करुणा व सहानुभूति जैसे मूल्यों के साथ में बहन व बेटी जैसे रिश्तों के सम्मान की कोई जगह बची नहीं है। ऐसे में विषैली मानसिकता का प्रस्फुटित होना स्वभाविक ही है। इसलिए हमें समय रहते उन सामाजिक व मनोवैज्ञानिक दशाओं का विश्लेषण भी करना चाहिए जो लोगों को बलात्कारी बनाती हैं। साथ ही स्त्री व पुरूष देह से जुड़ी उन सामाजिक मान्यताओं और पुलिस कानून की कमजोर व्यवस्थाओं का भी मूल्यांकन करना पड़ेगा, जो आज खुद बलात्कारी की रक्षक बनकर न्याय का गला घोंट रही हैं। साथ ही एक स्वस्थ व स्त्री सशक्तता से जुड़े समाज की पुनः स्थापना भी करनी होगी, तभी महिला की देह को सुरक्षा कवच मिल पाएगा।

कहना न होगा कि देश में प्रत्येक नारी के सम्मान के साथ-साथ करुणा व दया भाव से जुड़े मूल्यों को आत्मसात करके और व्यवहार में उनका प्रदर्शन करके ऐसी यौन दुष्प्रवृतियों पर काफी हद तक रोक लगाई जा सकती है। इसलिए समय रहते हमें राष्ट्रपति महोदया की सामयिक पीड़ा को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है।

महिला अपराध
डा. ज्योत्सना शर्मा

कब तक होते रहेंगे जुल्म

समय-समय पर देशभर से महिलाओं के साथ होने वाले जघन्य अपराधों की खबरें आती रहती हैं। दिन प्रतिदिन स्थिति नियंत्रण से बाहर होती जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम अपने संस्कार, संवेदनशीलता और मूल्यों की हत्या करके मानव विकास की अंधी दौड़ में बहुत आगे निकल गए हैं, तभी तो आज इंसान -इंसान में फर्क करना मुश्किल हो गया है। कोई किसी पर भरोसा करने से कतराता है। मदद के लिए अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाते। धैर्य के बांध टूट गए हैं। सारे संसार में अलग-अलग देशों में युद्ध की भयावह स्थितियों ने प्रकृति को नष्ट कर दिया है, जिसका खामियाजा आने वाली तमाम पुश्तें भुगतेंगी। यतीम बच्चे, बेवा, दिव्यांग और बुजुर्ग कहां अपनी जमीन तलाशें। क्या कोई ऐसी शिक्षा है जो इंसान को इंसान बनने की शिक्षा दे सके? ऐसी शिक्षा जो नैतिकता की बात करे?

ऐसी शिक्षा जो शांति, सौहार्द और भाईचारे की बात करे? हाल ही में देश के दो अहम राज्यों महाराष्ट्र और बंगाल से घिनौनी करतूत के परिणाम सारे देश के सामने आए। किस मजहब में स्त्री की अस्मत से खिलवाड़ करना सिखाया गया। किसने यह इजाजत दी कि किसी भी स्त्री की अस्मिता को तार-तार करने का हक पुरुषों को है। यहां तक कि मासूम बच्चियों तक को अपनी हवस का शिकार बनाने का दुस्साहस कर रहे हैं। क्या यही पौरुष शेष है। सदियों से महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा गया। उनके अधिकारों से वंचित रखा गया और तो और उन्हें कम उम्र में विवाह के बाद जनसंख्या बढ़ाने की मशीन तक बना डाला। समाज में कैसी मानसिकता का विकास होता जा रहा है कि संभ्रांत परिवारों में भी महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की रही। कभी घरेलू हिंसा की शिकार होती हैं, कभी यौन उत्पीड़न, कभी दहेज के लिए हत्या, कभी डायन करार देना, कभी बांझ होने का दंश और कभी पुत्र चाह में लगातार गर्भपात। कितनी ही महिलाएं हर दिन अपनी जान गंवा देती हैं। आखिर किस प्रकार के समाज को सभ्य समाज कहते हैं जो आज तक इतनी भी समझ विकसित नहीं हुई कि एक महिला भी महिला होने से पहले इंसान है। हमारी शिक्षा व्यवस्था पूर्ण रूप से असफल है क्योंकि हम बच्चों में चारित्रिक गुणों का विकास करने में बुरी तरह से असफल रहे हैं। अफसोस की बात है कि इस प्रकार की घटनाओं की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। मात्र मोमबती जलाकर अपना विरोध दर्ज करना क्या काफी है या जगह-जगह तोड़-फोड़ करना किसी नतीजे पर पहुंचने में मददगार है। यह अति गंभीर और संवेदनशील विषय है कि विकास और सभ्यता की सीढ़ी चढ़ता समाज हिंसा और घृणा में लिप्त होता जा रहा है।

नृशंस हत्याएं करने से बाज नहीं आ रहा। ऐसी सभी स्थितियों में महिलाओं के हिस्से सिर्फ़ शोषण आया है। क्या इसे कुंठित और मनोरोग से ग्रस्त मानसिकता का पर्याय कहना ज्यादा उचित प्रतीत नहीं होता। मनुष्य स्व केंद्रित होता जा रहा है। लोभ, ईर्ष्या, कुत्सित विचारों ने बुद्धि को ऐसा हर लिया है कि अब मनुष्य का पतन निश्चित है। मनुष्यत्व विलुप्त होता जा रहा है। क्या माता-पिता अपने बच्चों को ऊंची शिक्षा प्राप्त करने हेतु भविष्य में अकेले भेजने से कतराएंगे? लड़कियां अपने पहनावे में कुछ बदलाव करें। इतनी रात को ऑफिस से क्यों लौटी, यही होगा। इस प्रकार की अनाप-शनाप बयानबाजी बहुत हो चुकी। महिलाओं को अपने फैसले स्वयं लेने होंगे। किसी पर निर्भर रहने से अच्छा है कि आत्मनिर्भर बनें।

अपने हितों और अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हों। कम उम्र की बच्चियों को लगातार परामर्श दिए जाएं जिससे वह अपने आसपास के स्थान और वातावरण से परिचित हो सकें। दुर्गा वाहिनी जैसी कार्यशालाएं संचालित हों। दिल्ली पुलिस द्वारा समय-समय पर स्व रक्षा अभियान चलाया गया था जो काबिले तारीफ रहा। इस प्रकार के अभियान और कार्यशालाएं लगातार स्कूलों में संचालित की जानी चाहिए। जिस दिन कोई भी बच्ची अपनी 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करके इस भरे-पूरे संसार में पैर रखे, उस दिन वह बिना किसी हथियार भी अपनी रक्षा करने में समर्थ हो। ऐसा लक्ष्य सभी माता-पिता निर्धारित करें। अध्यापक अपने छात्र-छात्राओं से खुलकर उनकी समस्याओं पर बात करें।

चरित्र गठन की विशाल व्यायामशाला है संसार

संकलित
दर्शन

संसार न तो अच्छा है, ना बुरा। प्रत्येक मनुष्य अपने लिए अपना-अपना संसार बना लेता है। हमारी मानसिक अवस्था के अनुसार ही हमें यह संसार भला या बुरा प्रतीत होता है। अग्नि स्वयं में अच्छी है न बुरी। जब यह हमें गर्म रखती है, तो हम कहते हैं यह कितनी अच्छी है, जब हमारी अंगुली जल जाती है, तो हम इसे दोष देते हैं। यही हाल संसार का है। संसार स्वयं पूर्ण है। पूर्ण का अर्थ यह है कि इसमें अपने सभी प्रयोजन पूर्ण करने की क्षमता है। हमें जान लेना चाहिए कि हमारे बिना भी यह संसार बड़े मजे से चलता जाएगा। हमें उसकी सहायता करने के लिए माथापच्ची करने की आवश्यकता नहीं। परंतु फिर भी हमें सदैव परोपकार करते ही रहना चाहिए। यदि हम सदैव यह ध्यान रखें कि दूसरों की सहायता करना एक सौभाग्य है, तो परोपकार करने की इच्छा एक सर्वोत्तम प्रेरणा शक्ति है। एक दाता के ऊंचे आसन पर खड़े होकर और अपने हाथ में दो पैसे लेकर यह मत कहो, 'ऐ भिखारी, ले, मैं तुझे यह देता हूं। तुम स्वयं इस बात के लिए कृतज्ञ हो जाओ कि इस संसार में तुम्हें अपनी दयालुता का प्रयोग करने और इस प्रकार पूर्ण होने का अवसर प्राप्त हुआ। धन पाने वाला नहीं, देने वाला होता है। भलाई के सभी कार्य हमें शुद्ध और पूर्ण बनाने में सहायता करते हैं। यह संसार न तो तुम्हारी सहायता का भूखा है और ना मेरी। परंतु फिर भी हमें निरंतर कार्य करते रहना चाहिए, परोपकार करते रहना चाहिए। क्योंकि इससे हमारा ही भला है।

ह्रदय से जो जाओगे सबल समझूंगा तोहे

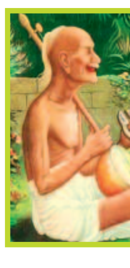

संकलित
प्रेरणा

एक बार सूरदास जी चलते-चलते मार्ग में एक गहरे गढ्ढे में गिर गए और निकलने के सारे प्रयास असफल हो गये। अपने कान्हा को ही पुकारने लगे, एक भक्त अपने जीवन में विपत्ति काल में प्रभु को ही तो पुकारता है। जैसे ही सूरदास जी ने कान्हा को याद किया, प्रभु भी उसकी पुकार सुने बिना नहीं रह पाए! सच है जब एक भक्त दिल से पुकारता है तो यह टीस प्रभु के दिल में भी उठा करती है। उसी समय एक बाल गोपाल के रूप में वहाँ प्रकट हो गए, और प्रभु के पांव की नन्ही-नन्ही सी पैजनिया की छन-छन की आवाज सुनते ही सूरदास जी को समझते देर न लगी। कान्हा उनके समीप आये और बोले अरे बाबा नीचे क्या कर रहे हो, लो मेरा हाथ पकड़ो और जल्दी से ऊपर चले आओ। जैसे ही सूरदास जी ने इतनी प्यारी सी मिश्री सी घुली हुई वाणी सुनी तो जान गए की मेरा कान्हा आ गया, और बहुत प्रसन्न हो गए, और कहने लगे की अच्छा कान्हा, बाल गोपाल के रूप में आ गए, कन्हाई तुम आ ही गए न? बाल गोपाल कहने लगे अरे कौन कान्हा ? किसका नाम लेते जा रहे हो,जल्दी से हाथ पकड़ो और ऊपर आ जाओ, ज्यादा बातें न बनाओ। सूरदास जी मुस्कुरा पड़े और कहने लगेः सच में कान्हा तेरी बांसुरी के भीतर भी वो मधुरता नहीं, माना कि तेरी बांसुरी सारे संसार को नचा दिया करती है लेकिन तेरे भक्तों का दुःख तुझे नचा देता है। क्यों कान्हा सच है न? तभी तो तू दौड़ा चला आया। जैसे ही उन्होंने इतना कहा सूरदास जी ने झट से कान्हा का हाथ पकड़ लिया और उस मंगलमय ब्रह्मसंस्पर्श से वे रोमांचित हो उठे।

अंतर्मन

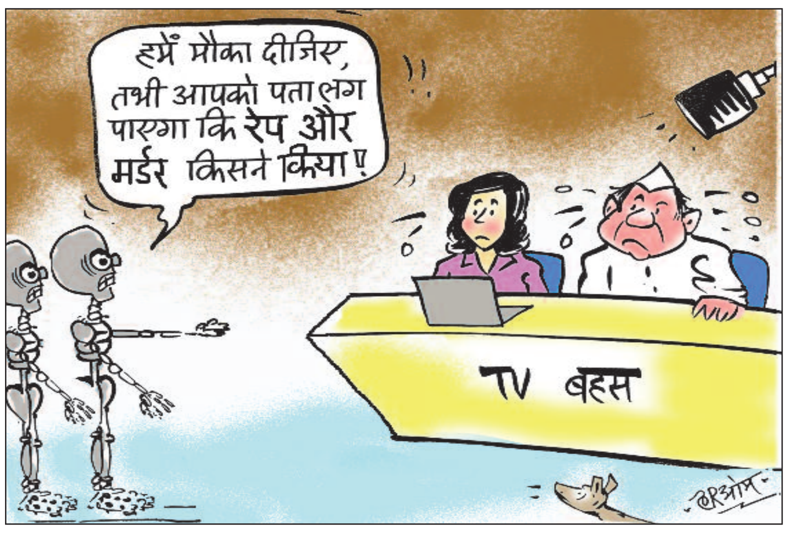

आज की पाती

उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए

देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने देश की आर्थिक व्यवस्था की मजबूती के लिए देश में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देना जरूरी माना था। देश की आर्थिक व्यवस्था के लिए जब जवाहरलाल नेहरू के समक्ष तीन प्रस्ताव पेश किए गए, जिनमें मुख्यत: पहला गांधीवादी विचारधारा का, दूसरा एमएन राय का, और तीसरा देश के मुख्य पूंजीपतियों की विचारधारा का था, तो जवाहरलाल नेहरू ने देश के उस समय के सबसे बड़े उद्योगपतियों टाटा-बिड़ला के प्लान को ही स्वीकार किया था। देश के विकास में उद्योग जगत की भूमिका हमेशा रही है। नेहरू यह मानते थे कि उद्योगों को बढ़ावा देने से ही देश की आर्थिक व्यवस्था मजबूत हो सकती है। इसलिए आज भी जरूरत है कि उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए। – *निर्मल सोनी, बलौदा बाजार*

ट्रेंड

हार्दिक शुभकामनाएं

भारतीय टीम को पेरिस पैरालंपिक के लिए हार्दिक शुभकामनाएं! मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे रास्ते में आने वाली हर चुनौती को पार करते हुए, भारत की असली ताकत साबित करेंगे। राष्ट्र उनके लिए जयकार करता है! **-अमित शाह, केंद्रीय गृहमंत्री**

बधाई हो

बधाई हो, केंद्रीय गृह मंत्री!! आपका बेटा राजनेता नहीं बना है, लेकिन आईसीसी चेयरमैन बन गया है - यह पद अधिकांश राजनेताओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है!! आपका बेटा वास्तव में बहुत शक्तिशाली हो गया है और मैं आपको उसकी इस सर्वोच्च उपलब्धि पर बधाई देती हूं!

-ममता बनर्जी, सीएम, प. बंगाल

खेल की शक्ति

खेल हमें टीम वर्क, लचीलापन और सौहार्द के मूल्य सिखाते हैं। जीवन को बदलने और उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने की खेल की शक्ति का जश्न मनाने में हमारे साथ शामिल हों।

-सचिन तेंदुलकर, पूर्व क्रिकेटर

महिलाओं के खिलाफ हिंसा

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बलात्कार और मनोरंजन के लिए महिलाओं के खिलाफ हिंसा, इस पितृसत्तात्मक राष्ट्र के मानस में इतनी गहरी जड़ें जमा चुकी है कि इसका इस्तेमाल लापरवाही से चिढ़ाने के लिए किया जाता है।

- कंगना रनौत, अभिनेत्री व सांसद

करंट अफेयर

भारत का रुख अमेरिका के साथ सहयोग वाला

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) एच आर मैकमास्टर ने अपनी नई पुस्तक में दावा किया है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भारत सरकार मुख्य रूप से चीनी आक्रामकता के कारण अमेरिका के साथ 'अभूतपूर्व' सहयोग करने की इच्छुक है, लेकिन साथ ही वह 'फंसने और त्यागे जाने' को लेकर भी 'भयभीत' है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन के दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) के रूप में अपने कार्यकाल का विवरण देते हुए मैकमास्टर ने अपनी पुस्तक 'ऐट वॉर विद अवरसेल्व्स' में लिखा है कि ट्रंप द्वारा बर्खास्त किए

ऑफ बीट

माइक्रोप्लास्टिक हमारे दिमाग में हैं, बढ़ी चिंता

प्लास्टिक हमारे कपड़ों, कारों, मोबाइल फोन, पानी की बोतलों और खाद्य कंटेनरों में है। लेकिन हाल के शोध से हमारे स्वास्थ्य पर प्लास्टिक के छोटे टुकड़ों के प्रभाव के बारे में पहले से मौजूद चिंताएँ और बढ़ गई हैं। अमेरिका के एक अध्ययन में पहली बार मानव मस्तिष्क में माइक्रोप्लास्टिक पाया गया है। अध्ययन, जिसे अभी तक अन्य वैज्ञानिकों द्वारा स्वतंत्र रूप से सत्यापित नहीं किया गया है, को मीडिया में डरावना, चौंकाने वाला और चिंताजनक बताया गया है। हम अक्सर प्लास्टिक की वस्तुओं को अविनाशी मानते हैं। लेकिन प्लास्टिक छोटे-छोटे कणों में टूट जाता है। परिभाषाएँ अलग-अलग होती हैं

संक्षेप

रोडवेज ने महिला को मारी टक्कर, मौत

अमन लेखनी समाचार

सुलतानपुर, सुलतानपुर में लखनऊ-बलिया हाईवे पर पांडेयबाबा के पास रोडवेज बस ने सड़क पार कर रही महिला की जान ले ली। इलाज के लिए परिवार वाले महिला को राजकीय मेडिकल कॉलेज लेकर पहुंचे। यहां डॉक्टर ने ब्रॉड डेड घोषित कर दिया। पोस्टमार्टम के बाद शव घर पहुंचा तो कोहराम मच गया। शाम उर्मिला (55) निवासी लखनीपुर शेरपुर कोतवाली कादीपुर, गोसाईंगंज थाने के बसौंहा गांव से वापस घर ई-रिक्शे से जा रही थी। वह मोतिगरपुर थाने के पांडेयबाबा बाजार में उतरकर लखनऊ-बलिया मार्ग पार कर रही थी। तभी अचानक रोडवेज बस की चपेट में आकर वह घायल हो गई। स्थानीय लोगों ने घायल महिला को मोतिगरपुर सीएचसी पहुंचाया। डॉक्टर ने सिर में गंभीर चोट को देखते हुए मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। मेडिकल कॉलेज में पहुंचते ही घायल महिला को डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमार्टम के बाद शव घर पहुंचा तो कोहराम मच गया। वहीं चालक बस को सड़क पर छोड़कर फरार हो गया। घंटों बाद रात में बस को मौके से ले जाया गया। महिला के पति अनिल यादव की मौत 2007 में हो चुकी है। तब चार बच्चे भी छोटे छोटे थे। जिनका देखभाल उर्मिला ही कर रही थी। वहीं बड़ी बेटी की विवाह की बात भी चल रही थी। मां की मौत से बेटी रिंकी (24), शिम्पी (22) व दो बेटे शिवम (20), शुभम (18) सभी अविवाहित बच्चों के सिर से माता पिता का साया हट गया है।

अमरोहा में मेले में चलीं बेल्टें, अंधाधुंध फायरिंग

अमन लेखनी समाचार

अमरोहा, अमरोहा के डिडौली थाना क्षेत्र के गांव सहसपुर अलीनगर में शाम को छड़ी के मेले में एक पुरानी रंजिश ने हिंसक रूप ले लिया। मेले के दौरान इरफान और आसिफ के बीच कहासनी थोड़ी ही देर में मारपीट में बदल गई, जिसमें दोनों पक्षों के बीच जमकर मारपीट हुई और फायरिंग भी की गई। गांव में लगे छड़ी के मेले में लगभग छह बजे के आसपास इरफान और आसिफ के बीच किसी महिला को लेकर पहले से विवाद चला आ रहा है और वही आज फिर हिंसक रूप ले लिया। देखते ही देखते दोनों पक्षों के लोग आमने-सामने आ गए और बेल्टों से एक-दूसरे पर हमला करना शुरू कर दिया। इसके साथ ही अवैध तमंचों से की गई फायरिंग ने स्थिति को और भी गंभीर बना दिया। इस हिंसक झड़प में करीब आधे घंटे तक दोनों पक्षों के बीच संघर्ष चलता रहा, जिससे इलाके में भगदड़ मच गई और दहशत फैल गई। इस मारपीट में कई लोग घायल हो गए, जिनमें से आधा दर्जन से अधिक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। थाना प्रभारी पंकज तोमर ने जानकारी देते हुए बताया कि इस मामले में कुल 27 आरोपियों के खिलाफ विभिन्न गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। इनमें से इरफान, अरकान, इंतेकाय और आसिफ, बिलाल, अजमल, अतीक सहित अन्य के खिलाफ कार्रवाई की गई है।

अघोषित कटौती व लो वोल्टेज की समस्या से परेशान व्यापारियों ने सौंपा ज्ञापन

समस्या का समाधान न होने पर बीच चौराहे पर प्रदर्शन करने की दी चेतावनी

अमन लेखनी समाचार/मिथिलेश जायसवाल

मोतीपुर, बहराइच। प्रदेश की योगी सरकार भले ही प्रदेश में शहरों में 24 घंटे तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 20 घंटे बिजली की आपूर्ति के निर्देश दिए हो लेकिन बिजली विभाग की लापरवाही के चलते ग्रामीण क्षेत्रों में महज 5 से 6 घंटे ही बिजली मिल पा रही है वो भी लो वोल्टेज के साथ। लो वोल्टेज की वजह से पंखा तक नहीं चलता है इसकी शिकायत के लिए जब फोन करो तो विभाग का कोई भी व्यक्ति फोन भी नहीं उठाता है। तहसील मिहींपुरवा के गायघाट क्षेत्र में हो रही बिजली कटौती व लो वोल्टेज की समस्या से परेशान गायघाट व्यापार मंडल के पदाधिकारियों व्यापारियों ने तहसील पहुंचकर उपजिलाधिकारी संजय कुमार को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में लिखा कि ग्राम पंचायत गायघाट में आये दिन विद्युत कटौती और लो वोल्टेज के कारण समस्त ग्रामवासियों एवं व्यापारियों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस समस्या के कारण सभी ग्रामवासी व व्यापारी गर्मी से बेहाल पूरी पूरी रात जागते रहते है। बच्चे व अन्य सदस्य बिजली न मिलने के कारण भीषण गर्मी के चलते बीमार भी पड़ जाते है। अगर इस समस्या का समाधान जल्द से जल्द नहीं हुआ तो समस्त ग्रामवासीगण व व्यापारीगण धरना प्रदर्शन गायघाट चौराहे पर करने को मजबूर हो जायेंगे। उपजिलाधिकारी संजय कुमार ने व्यापारियों को आश्वासन दिया कि बिजली विभाग से संपर्क कर समस्या का समाधान करवाया जायेगा। इस मौके पर व्यापार मंडल अध्यक्ष आफताब खान, शकील खान, अरुण वर्मा भोलू, प्रदीप शाहू, अनिल पोरवाल, रवि, महेश साहू सहित अन्य लोग शामिल रहे।

जागते रहो नहीं तो भेड़िया आ जाएगा...

भेड़िये ने फिर बुजुर्ग सहित बालक को किया घायल

भारी सुरक्षा के बावजूद भेड़िए का हमला वन विभाग के लिए चुनौती

अमन लेखनी समाचार

शिवपुर, बहराइच। भेड़िये के हमले में बुजुर्ग व बालक हुये घायल। अस्पताल मे दोनों का इलाज चल रहा है। भारी संख्या मे ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा बलों व वन विभाग को सोचने पर मजबूर कर रहे कि आखिर अवाम की सुरक्षा कैसे हो। 26 अगस्त को हुआ था आखिरी हमला तब से साइलेंट मोड के बाद रविवार को फिर एक बालक और बुजुर्ग को भेड़िये ने घायल कर दिया। जनपद के वन प्रभाग बहराइच के हरदी थाना क्षेत्र निहित ग्राम मौकूपुरवा नकाही निवासी 55 वर्षीय कुन्नू घर के बाहर सो रहा था। शनिवार की देर रात को इस ग्रामीण पर भेड़िये ने हमला कर घायल कर दिया। पीड़ित के शोरगुल पर काफी ग्रामीण इकट्ठा हो गए किंतु भेड़िया रात के अंधेरे में कहीं लुप्त हो गया। इसके बाद इस आतंकी भेड़िये ने पड़ोसी गांव जंगलपुरवा दरहिया निवासी लगभग आठ वर्षीय पारस पर हमला कर बुरी तरीके से घायल कर दिया है। भेंड़िये के हमले में बालक वृद्ध दोनों घायल हो गए हैं। परिवार के लोगों ने शोर मचाते हुए भेड़िया को खदेड़ा। दोनों घायलों को सीएचसी में भर्ती कराया गया। जहां बालक की हालत गंभीर बताई जा रही है। फिलहाल दोनों का इलाज चल रहा है। वहीं घटना की जानकारी होते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची हैं। सभी ने ग्रामीणों से वार्ता कर सतर्क व जागरूक रहने के लिए कहा। भारी सुरक्षा के बीच इस आतंकी भेड़िए का लगातार आवाम पर हमला वन विभाग के लिए भी चुनौती बन गया है। आखिर इलाकाई लोगों को इन आतंकी भेड़ियों से कब निजात मिलेगी।

डम्फर फंसने से लगा जाम, जूझते रहे राहगीर

अमन लेखनी समाचार

पुरवा, उन्नाव। कालूखेड़ा भल्लाफार्म मार्ग पर चंदनखेड़ा कस्बे में राजपूत मशीनरी स्टोर के आगे शनिवार सुबह गिट्टी लेकर जा रहा डम्फर बीच रोड पर धँस गया। जिसकी वजह से जाम लग गया। डंफर फंसने की वजह से आने जाने वालों को दिक्कते उठानी पडी वही बड़े तथा भारी वाहन चन्दनखेड़ा से आगे नही निकल पा रहे है। जिसके चलते जाम जैसी स्थित उत्पन्न हो गई है।

पुलिस के पहुंचने व लगभग छह घंटे बाद जाम खुल सका। इस संबंध में एसओ विमल कांत गोयल ने बताया कि जाम को खुलवा दिया गया है।

सीएमओ ने किया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण

अमन लेखनी समाचार/फैजान

कैसरगंज, बहराइच। सीएमओ डा0 संजय कुमार शर्मा ने रविवार को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भकला में चल रहे मुख्यमंत्री स्वास्थ्य मेला का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने चिकित्सालय की चिकित्सीय सुविधाओं को और बेहतर बनाने के लिए प्रभारी डा.विनोद कुमार को निर्देशित किया। सीएमओ डा. शर्मा रविवार को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कुंडासर के बाद में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भकला का औचक निरीक्षण करने पहुंचे। उन्होंने चिकित्सालय में ओपीडी रजिस्टर, डिलीवरी रजिस्टर, उपस्थिति पंजिका, दवाखाना के साथ-साथ चिकित्सालय में उपस्थित मरीज से मिलकर दी जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की भी जानकारी ली। उन्होंने अधीक्षक डा. विनोद कुमार को निर्देशित किया कि चिकित्सालय में स्वास्थ्य सेवाओं को और बेहतर बनाएं जिससे सुविधाओं में किसी प्रकार की असुविधा का सामना मरीजों को ना करना पड़े। सीएमओ ने मुख्यमंत्री आरोग्य मेला के उद्देश्यों के बारे में समूर्ण जानकारी देते हुए उपस्थित लोगों में उस विषय को साझा किया उन्होंने दवाओ के रखरखाव व व्यवस्था सहित चिकित्सालय के सफाई पर संतोष व्यक्त किया। तथा उपस्थित स्टाफ से स्वास्थ्य संबंधित प्रश्न करते हुए मरीज के इलाज हेतु तमाम प्रकार के जानकारी को भी दिया इस मौके पर प्रभारी डॉक्टर विनोद कुमार, फार्मासिस्ट रवि गुप्ता, मायाराम, स्टाफ नर्स काजल जैसवाल, वंदना कुमारी, एलए संतोष कुमार, शैलेश वर्मा व अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

प्रदेश अध्यक्ष के प्रथम आगमन पर कार्यकर्ताओं ने किया जोरदार स्वागत

अमन लेखनी समाचार

बहराइच। प्रगतिशील विश्व मौर्य परिषद अखंड भारत सामाजिक संगठन के प्रदेश अध्यक्ष आशीष कुमार मौर्य का जिले में आगमन पर जिलाध्यक्ष दिलीप कुमार मौर्य के नेतृत्व में मरीमाता पर जोरदार स्वागत किया। उसके बाद प्रदेश अध्यक्ष नें बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर पार्क में प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। प्रदेश अध्यक्ष आशीष कुमार मौर्य नें कहा की आज के समय में मौर्य समाज पर आये दिन हमला व अन्य घटनायें हो रही है इसलिए आप लोग समाज के बीच में जाकर लोगो के समस्या को सुनकर प्रशासन को अवगत करा कर समाधान कराएं। साथ में सदस्यता अभिभान अभी शुरूआत होने वाला है उसमे बढ़ चढ़कर भाग ले। इस मौके पर प्रदेश संगठन मंत्री सन्तोष कुमार मौर्य, पूर्व प्रदेश प्रवक्ता अजय मौर्य, प्रदेश मीडिया प्रभारी मनीष मौर्य मधुर, हरिनाम सिंह कुशवाहा, मंडल प्रभारी लोकेश मौर्य, जिला प्रभारी पवन मौर्य, जिला अध्यक्ष दिलीप कुमार मौर्य, शिवकुमार मौर्य, जीवन लाल मौर्य, संजय कुमार मौर्य, दीपक मौर्य, अमित कुमार मौर्य, प्रदीप कुमार मौर्य, सर्वेश कुमार मौर्य, अभय प्रकाश नारायण मौर्य, मनीष मौर्य विपिन मौर्य प्रधान, अयोध्या प्रसाद मौर्य आदि लोगो के साथ संगठन के अन्य पदाधिकारी व समाज के लोग उपस्थित रहे।

महिला सिपाही ने दौड़ाकर महिला टप्पेबाज को पकड़ा

- अमेठी में व्यापारी के बैग से निकाले थे 5 लाख रुपए, मप्र की रहने वाली है

अमन लेखनी समाचार

अमेठी जिला, अमेठी के जगदीशपुर में एक व्यापारी बैंक से पैसे निकालकर जा रहा था, इसी समय पीछे से आ रही एक महिला टप्पेबाज ने उसके बैग से पांच लाख रुपए चुरा लिए। घटना की जानकारी मिलते ही व्यापारी ने शोर मचाना शुरू कर दिया, जिससे मौके पर तैनात महिला सिपाही और स्थानीय लोगों ने आरोपी महिला को दौड़ाकर पकड़ लिया। महिला के पास से चुराए गए पांच लाख रुपए भी बरामद कर लिए गए हैं। घटना जगदीशपुर कोतवाली क्षेत्र के बैंक ऑफ बड़ौदा की है। प्रसाद खेड़ा थाना सोहरामऊ जिला उन्नाव निवासी ज्ञानेंद्र यादव क्षेत्र में यूकेलिप्टस लकड़ी का व्यापार करते हैं। दोपहर में किसान को पैसे देने के लिए लखनऊ-सुल्तानपुर रोड स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा शाखा से बारह लाख रुपए निकाले। उन्होंने यह पैसे बैग में रखे और बैंक की सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे कि पीछे आ रही महिला ने उनके बैग का चैन खोलकर उसमें रखे पांच लाख की गड्डी चुराकर भाग गई। घटना की भनक लगते ही ज्ञानेंद्र यादव ने शोर मचाया। बैंक में तैनात महिला सिपाही और स्थानीय लोगों ने तुरंत कार्रवाई की और आरोपी महिला को बाजार शुक्ल मोड़ के पास पकड़ लिया। महिला के पास से पांच लाख रुपए बरामद कर लिए गए। मुसाफिरखाना सर्किल क्षेत्राधिकारी अतुल सिंह ने बताया कि पकड़ी गई महिला की पहचान मध्यप्रदेश के राजगढ़ की निवासी सीमा के रूप में हुई है। उसके पास से व्यापारी के बैग से निकाले गए पांच लाख रुपए बरामद कर लिए गए हैं। मामले की आगे की कार्रवाई जारी है।

आयुक्त ने तहसील महसी के वन्यजीव प्रभावित क्षेत्र का किया भ्रमण

हिंसक जीव के हमले से प्रभावित पीड़ित के परिजनों से मिलकर व्यक्ति की संवेदना

ड्रोन कैमरों की मदद से किये जा रहे निगरानी कार्य का लिया जायजा

अमन लेखनी समाचार/संतोष मिश्रा

बहराइच। आयुक्त, देवीपाटन मण्डल, गोण्डा शशि भूषण लाल सुशील ने विधायक महसी सुरेश्वर सिंह के साथ तहसील महसी अन्तर्गत हिंसक जीव भेड़ियों के हमलों से प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण कर हिंसक जीवों के हमलों में मरने वाले बच्चों के परिजनों से भेंट कर संवेदना व्यक्त की। क्षेत्र भ्रमण के दौरान आयुक्त ने ग्राम पंचायत सिसईया चूड़ामणि के मजरा कुलैला में मुख्य वन संरक्षक रेनू सिंह के नेतृत्व में वन विभाग द्वारा ड्रोन कैमरों की मदद से किये जा रहे निगरानी कार्य का जायजा लिया। मुख्य वन संरक्षक ने आयुक्त को बताया कि हिंसक भेड़ियों का सही लोकेशन जानने हेतु गश्ती दलों द्वारा फुट प्रिन्ट खोजने के साथ-साथ आसमानों से भी ड्रोन एवं थर्मल ड्रोन कैमरों के माध्यम से सर्च आपरेशन संचालित किया जा रहा है। प्रभावित/सक्रियता क्षेत्रों में संवेदनशील स्थलों पर 08 ट्रैपिंग कैमरों के साथ-साथ सभी संभावित स्थानों पर पिजड़े भी लगाये गये हैं। वन विभाग की सक्रियता एवं अथक प्रयास के फलस्वरूप 01 माह के अन्दर 04 भेड़ियों को पकड़ा भी जा चुका है। मौके पर मौजूद मुख्य राजस्व अधिकारी देवेन्द्र पाल सिंह ने आयुक्त को बताया कि जिलाधिकारी के निर्देश पर हिंसक भेड़िया के हमले से प्रभावित/सक्रियता क्षेत्रों में क्रिटिकल गैप योजना अन्तर्गत चिन्हित किये गये 40 स्थानों पर सोलर स्ट्रीट लाईट तथा 10 स्थानों पर सोलर हाईमास्ट लाईट की स्थापना कराई जा रही है। प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को शौच के लिए घर से बाहर न जाना पड़े इसके लिए पंचायती राज विभाग के माध्यम से शौचालय विहीन घरों को स्वच्छ शौचालय योजना से आच्छादित किया जा रहा है। दरवाजा विहीन घरों में बहराइच वन प्रभाग के सहयोग से दरवाजे लगवाये जा रहे हैं। इसके अलावा प्रभावित क्षेत्र के आवासहीन लोगों को आवासीय योजना से भी आच्छादित किया जायेगा। भ्रमण के दौरान आयुक्त ने मौके पर मौजूद उप जिलाधिकारी महसी अखिलेश कुमार सिंह, पुलिस क्षेत्राधिकारी रूपेन्द्र कुमार गौड़, खण्ड विकास अधिकारी हेमन्त यादव, क्षेत्र में गठित टास्क फोर्स के सदस्यों, वालंटियर्स, ग्रामवासियों से आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हुए सभी स्टेक होल्डर्स को निर्देश दिया कि प्रभावित क्षेत्रों में युद्ध स्तर पर सतर्कता बरतते हुए क्षेत्र में गश्त करें तथा आमजन को भी जागरूक करते रहें। आयुक्त ने ग्रामवासियों से अपील की है कि वन्यजीवों के हमलों के द्दष्टिगत घर के बाहर न सोये। आयुक्त ने बताया कि सभी सम्बन्धित विभाग टीम भावना के साथ प्रयास कर रहे हैं, उन्हे आशा है कि शीघ्र ही हमलावर वन्य जीव पकड़ लिये जायेंगे। भ्रमण के दौरान वन संरक्षक देवीपाटन मण्डल मनोज सोनकर, प्रभागीय वनाधिकारी बहराइच अजीत प्रताप सिंह, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ. राजेश उपाध्याय सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

बीयर बार को बंद करने की मांग

- अमरोहा में अतरासी रेलवे पुल के नीचे चल रहा बार, लोगों का कलक्ट्रेट में प्रदर्शन

अमन लेखनी समाचार

अमरोहा, अमरोहा देहात थाना इलाके के अतरासी रेलवे पुल के नीचे स्थित बीयर बार को बंद कराने की मांग को लेकर आज कलेक्ट्रेट में एक विशाल प्रदर्शन आयोजित किया गया। स्थानीय निवासियों ने डीएम के नाम ज्ञापन सौंपते हुए आरोप लगाया कि बीयर बार के कारण इलाके का माहौल बिगड़ रहा है और कई गंभीर घटनाएं हो चुकी हैं। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि बीयर बार के आसपास माहौल खराब हो गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि शराब पीकर निकलने वाले लोग महिलाओं को घूरते हैं और अश्लील टिप्पणियां करते हैं। हाल ही में बीयर बार के सामने एक युवक घायल हुआ था, जिसकी उपचार के दौरान मौत हो गई। इस घटना के बाद से स्थानीय लोग आक्रोशित हैं और बीयर बार को बंद कराने की मांग कर रहे हैं। जिला सैनी सभा के जिलाध्यक्ष जगदीश सिंह सैनी ने बताया कि 23 अगस्त को बीयर बार के सामने एक सैनी समाज के युवक को घायल कर दिया गया था, जिसकी बाद में मौत हो गई। इस घटना के बाद इमली वाली मंढैया के निवासियों ने बीयर बार के खिलाफ हंगामा किया और इसे बंद कराने की मांग की। हालांकि, इसके बावजूद बीयर बार को फिर से खोले जाने की तैयारी की जा रही है। सैनी ने कहा, बीयर बार के चलते मोहल्ले में शराबियों की हुड़दंगबाजी बढ़ गई है। आधी रात को शराब पीकर लोग मोहल्ले में उत्पात मचाते हैं, जिससे स्थानीय लोगों का जीवन मुश्किल हो गया है। प्रदर्शनकारियों ने डीएम से अनुरोध किया कि बीयर बार को तुरंत बंद किया जाए ताकि इलाके में शांति बनी रहे

सुल्तानपुर बस स्टॉप पर अभ्यर्थियों की भीड़

सार्वजनिक शौचालय पर अभ्यर्थियों से तय रेट से अधिक की वसूली

अमन लेखनी समाचार

सुलतानपुर, सुल्तानपुर नगर स्थित बस स्टॉप पर पुलिस भर्ती को लेकर छात्रों की भीड़ जमा थी। सुबह जल्दी सेंटर पर पहुंचने के लिए छात्रों ने तड़के ही यहां सार्वजनिक शौचालय पर लाइन लगा दिया। सैकड़ों की संख्या में छात्र व यात्री अपने नंबर की प्रतीक्षा में कतार में लगे रहे। इस भीड़ का लाभ सार्वजनिक शौचालय पर बैठे लोगों ने जमकर उठाया। सुशील सिंह यहां केयर टेकर हैं, उन्होंने बताया कि पुलिस भर्ती की वजह से लाइन लगी है। शौचालय में सीट कम है, दो से तीन सीटें हैं और लोग ज्यादा हैं। उन्होंने बताया कि राजेश सिंह शौचालय के ठेकेदार हैं और यहां शौचालय के लिए पांच और नहाने के लिए दस रुपए लिए जा रहे हैं। हालांकि जब उनसे सवाल किया गया कि छात्र तो बता रहे हैं कि उनसे शौचालय के लिए दस रुपए लिए गए तो उसने कहा कि वे नहाने भी तो जाएंगे। छात्रों ने बताया कि दस-दस रुपए लिए जा रहे। जब उनसे कहा गया कि केयर टेकर तो बता रहा कि नहाने तक का दस रुपया लिया जा रहा तो छात्रों ने एक स्वर में कहा नहीं-नहीं ये झूठ है। छात्र मुकेश मनेशिया ने बताया कि हम शौच के लिए लाइन में लगे थे, हमसे दस रुपए लिए गए हैं।

सुल्तानपुर में करंट लगने से युवक की मौत

- भंडारे के दौरान स्टेराड में उतरे करंट से गई जान, ट्रक चलाकर करता था परिवार का गुजर-बसर

अमन लेखनी समाचार

सुलतानपुर, सुल्तानपुर में नागेश्वर नाथ धाम पर भंडारे का बीती रात आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगे स्टेराड में उतरे करंट की चपेट में आने सेकांवरिया संघ भीखमपुर गांव के युवक की करंट की चपेट में आने से मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम में भेजकर विधिक कार्रवाई शुरू कर दिया है। घटना के बाद से परिवार में कोहराम मचा हुआ है। घटना शिवगढ़ थाना क्षेत्र के भदैंया ब्लॉक अंतर्गत भीखमपुर गांव में बने नागेश्वर नाथ धाम की है। सावन महीने मे गांव व आसपास के लोग बाबा बैजनाथ धाम झारखंड जल चढ़ाने गए हुए थे। जिसके बाद इस धाम पर गुरुवार शाम कीर्तन व भंडारे का आयोजन किया गया था। भंडारे के समाप्ति के बाद पत्तल फेंकते समय गांव के कांवरिया व शिवभक्त सुशील कुमार गुप्ता (24 वर्ष) पुत्र स्व फूलचंद्र निवासी भीखमपुर बिजली खंभे के पास चले गए थे। वहां खंभे के स्टेराड में बरसात से उतरे करेंट की चपेट में आकर वह गिर पड़े। अन्य शिवभक्त उनको वहां गिरा देख उठाकर अस्पताल ले गए जहां चिकित्सकों ने शिवभक्त को मृत घोषित कर दिया। जिसके बाद परिवार व गांव में कोहराम मच गया तथा लोग रोने चिल्लाने लगे। साथी लोग शव को लेकर गांव लौट आए। सभी का रो-रोकर बुरा हाल है। शिवगढ़ कोतवाल धर्मवीर सिंह ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है। पुलिस मौके पर जाकर पड़ताल व पूछताछ कर रही है। मृतक सुशील कुमार ट्रक चलाकर रोजी रोटी का जुगाड़ करता था। पिता की मौत के बाद वह चालक बन गया था तथा सावन में आकर गांव वालों के साथ भंडारा करता था।

संक्षेप

दबंगों ने घर में घुसकर युवक की आंख फोड़ी

महिलाओं को किया निर्वस्त्र, मामूली धाराओं में मुकदमा दर्ज

बुलंदशहर, कोतवाली क्षेत्र सिकंदराबाद के एक गांव में देर रात दबंगों ने घर में घुसकर उत्पात मचाया। घटना में एक युवक की आंख फोड़ दी गई और महिलाओं के कपड़े फाड़कर उन्हें निर्वस्त्र किया गया। कोतवाली पुलिस ने मामले को मामूली धाराओं में दर्ज कर मामले को रफा-दफा करने का प्रयास किया है। अब पीड़ित ने पुलिस कप्तान से न्याय की गुहार लगाई है, जिसके बाद कप्तान ने सीओ को मामले की जांच और कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। गांव के निवासी अशोक कुमार ने एसएसपी को दिए शिकायती पत्र में बताया कि 23 अगस्त की रात को वह घर में सो रहा था। रात करीब एक बजे गांव के निवासी देवा, ऋषभ और अंकित अपने साथ पिस्टल और धारदार हथियार लेकर घर की दीवार फांदकर अंदर घुस गए। इन्होंने अशोक कुमार को बुरी तरह पीट पीटकर अधमरा कर दिया और लोहे की रोड से उसकी आंख फोड़ दी। इसके बाद महिलाओं के कपड़े फाड़कर उन्हें निर्वस्त्र कर दिया और बलात्कार करने की कोशिश की। शोर मचने पर पड़ोसी वहां पहुंचे और पीड़ित को बचाया। आरोपी जान से मारने की धमकी देकर मौके से भाग गए। पीड़ित को सिकंदराबाद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती किया गया, जहां से उसे जिला अस्पताल रैफर किया गया। जिला अस्पताल की गंभीर स्थिति देखते हुए पीड़ित को दिल्ली हायर सेंटर भेजा गया, जहां उसकी एक आंख पूरी तरह से डेमेज हो गई है और 90 फीसदी रोशनी जा चुकी है। पीड़ित ने आरोप लगाया कि कोतवाली पुलिस ने इस गंभीर घटना को मामूली धाराओं में दर्ज किया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ बीएनएस की धारा 115(2), 352, 351(1) और 323 के तहत मुकदमा दर्ज किया है, जो इस घटना की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए नहीं है। सीओ सिकंदराबाद पूर्णिमा सिंह ने बताया कि तीनों आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पीड़ित की शिकायत पर जांच की जा रही है और जांच के बाद उचित कार्रवाई की जाएगी। पुलिस कप्तान के निर्देश पर जांच की जा रही है।

सोनभद्र में तालाब में डूबने से किशोर की मौत

अमन लेखनी समाचार

सोनभद्र, सोनभद्र के राबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र में गुरुवार की देर शाम को तालाब में दोस्तों के साथ नहाने गए एक किशोर की डूबने से मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने चार घंटे की कड़े प्रयास के बाद गोताखोरों की मदद से शव को बाहर निकाला गया। जांच पड़ताल कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। जानकारी के अनुसार घुरमा गांव में बने एक तालाब में गुरुवार शाम तीन किशोर नहाने गए थे। नहाते समय अचानक अंशु पाण्डेय पुत्र राकेश पाण्डेय निवासी भवानी गांव-पन्नुगंज गहरे पानी में चला गया। अंशु को डूबते देख उसके साथ नहा रहे दोनों दोस्त भाग गए। वहीं कुछ लोगों ने जब अंशु को डूबते देख तालाब में कूद गए। लेकिन उन्हें अंशु कहीं नहीं दिखा।

एसोसिएटेड चैंबर ऑफ इंडस्ट्रीज एंड कामर्स के पदाधिकारी के पति से किया लाइनमैन ने दुर्व्यवहार, उद्यमियों में आक्रोश

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गीडा थाना क्षेत्र स्थित के एसोसिएटेड चैंबर ऑफ इंडस्ट्रीज के जनरल सेक्रेटरी स्वीटी शुक्ला के पति से लाइनमैन अजय किया दुर्व्यवहार। सत्येंद्र शुक्ल ने लगाया लाइन उक्त घटना से सेक्टर 13 ,15 एवं सेक्टर 27 के उद्योगों में काफी आक्रोश व्याप्त है।

ज्ञात हो कि सेक्टर 13 पारले चौक के पीछे स्थित शापिग कांप्लेक्स परिसर में स्थित पीपल के पेड़ में बरसात के दिनों में उद्यमियों द्वारा करंट उतरने की शिकायत विद्युत विभाग को पिछले सप्ताह ही की गई थी और अनुरोध किया गया था कि पीपल के वृक्ष की डा ल की छटाई विभाग कर ले। जिससे किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके एक सप्ताह इंतजार के बाद भी जब विभाग नहीं जागा तो उद्यमियों ने स्वयं के खर्चे पर पीपल की छटाई का निर्णय लिए और विभाग से शटडाउन की मांग की। शटडाउन देने के बाद लाइनमैन अजय सिंह द्वारा उद्यमियों से शटडाउन के बदले सुविधा शुल्क उपलब्ध कराने की मांग की गई जो उद्यमियों द्वारा ना मिलने के कारण लाइनमैन अजय सिंह द्वार सिर्फ टहलनियो की छटाई के बाद शट डाउन बंद कर दिया गया।

उद्यमी 5 मिनट का शटडाउन अपने रिस्क पे और मांग रहे थे जिससे तार में सटे डाल को भी हटाया जा सके । परन्तु लाइनमैन द्वारा नहीं मानी गई ।इस दौरान एसोसिएटेड चेंबर ऑफ इंडस्ट्रीज एंड कामर्स के जनरल सेक्रेटरी एवं न्यूज एनालिस्ट की मुख्य संपादक के पति के साथ उन्होंने उन्होंने दुर्व्यवहार पे उतारू हो गए। इसकी सूचना जब एसडीओ सौरभ श्रीवास्तव को दी गई

तो तो उन्होंने अजय सिंह के करस्तानी यो पर लीपापोती करने का कार्य किया और उद्यमियों को धमकाते हुए कहा कि जांच तो हमारे पास ही आएगी अजय सिंह पुरा गीडा चलते हैं सामने जर्जर पोल है उद्यमी अपने रिस्क पर चाहे तो उसे डाल को कटवा सकते हैं। प्रश्न यह है कि क्या जर्जर पोल जिसकी वास्तव में स्थिति बहुत खराब है उद्यमियों के लिखा पढ़ी करने के बाद ही विभाग को दिखाई दिया? एसडीओ सौरभ श्रीवास्तव आज तक क्या उद्यमियों के किसी दुर्घटना होने का इंतजार कर रहे थे। किस संबंध में जब मुख्य अभियंता से बात की गई तो उन्होंने बताया कि कार्यालय से बाहर होने के कारण कुछ बता पाने में असमर्थ हूं यदि ऐसा कुछ हुआ है तो संबंधित के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

घटना से गीडा के उद्यमियों में आक्रोश प्राप्त है एसोसिएटेड चेंबर ऑफ इंडस्ट्रीज के पदाधिकारी जे एन पाण्डेय ने कहा कि उक्त मसले पर कल सेक्टर 13 में पदाधिकारी की बैठक बुलाई गई है उक्त लाइनमैन की काफी दिनों से शिकायत प्राप्त हो रही है धन वसूली व कार्य में शीतलता अजय सिंह के कार्यशैली में शामिल है अजय सिंह पिछले 10 साल से गीडा में एक ही पटल पे है। ऐसे में विद्युत विभाग के उच्च अधिकारी एवं माननीय मुख्यमंत्री से मिलकर उनके स्थानांतरण की मांग चेंबर करेगा।

छत पर सोने गए युवक को पीटने के बाद छत से फेका, केस दर्ज

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गीडा थाना क्षेत्र के नौसढ दुर्गा मंदिर निवासी युवक शुक्रवार को छत पर सोने गया था। उसी दौरान पड़ोस के मनबढ लाठी डंडे के साथ छत पर आ गए और उसे पीटते हुए छत से फेक दिया। जिससे युवक गंभीर रूप से घायल हो गया था। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है ।मिली जानकारी से गीडा थाना क्षेत्र के लवकुश कन्नौजिया पुत्र शितानंद कन्नौजिया निवासी नौसढ दुर्गा मंदिर के पास शुक्रवार को रात्रि में 10.30 बजे छत पर सोने गया। उसी दौरान पुरानी रंजिश को लेकर पड़ोस दो मनबढ लाठी डंडे से लैस छत पर चढ़ आए और मारने पीटने के बाद छत से फेक दिया जिससे युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी मनीष कन्नौजिया और अनीश कन्नौजिया उर्फ नाटे कन्नौजिया के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

डा आरडी सिंह के उत्तर प्रदेश पिछड़ा वर्ग आयोग का सदस्य मनोनीत होने पर बधाई का तांता

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। भाजपा जिला महामन्त्री डॉ आरडी सिंह को पिछड़ा वर्ग आयोग में सदस्य मनोनीत किये जाने पर सहजनवा विधानसभा कार्यालय पर स्वागत बधाई कार्यक्रम आयोजित कर बधाई दिया गया। बधाई देने वालों में जिलाध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह, पूर्व विधायक जीएम सिंह, चेयरमैन प्रभाकर दुबे, ब्लॉक प्रमुख दिलीप यादव, शशि प्रताप सिंह, पूर्व ब्लाक प्रमुख संजय दुबे, जिला पंचायत सदस्य संजय शुक्ला, गौरव गुप्ता मनोज सिंह ,अभिमन्यु मौर्य, ब्रह्मानंद शुक्ला छोटेलाल मौर्य, इंद्र निगम संतोष राम त्रिपाठी, राम उजागिर शुक्ल, मनोज जायसवाल, नरेंद्र शुक्ला, शिवचरण प्रसाद, राम प्रकाश चौरसिया, धर्मराज गौड जी आदि लोग उपस्थित होकर बधाई दिया गया।

प्रो. कीर्ति पाण्डेय बनी उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग की अध्यक्ष

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गोरखपुर यूनिवर्सिट सोशियोलॉजी की प्रोफेसर डा. कीर्ति पाण्डेय को उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग का अध्यक्ष बनाया है। यह आयोग बेसिक से लेकर अशासकीय सहायता प्राप्त (एडेड) माध्यमिक, एडेड महाविद्यालय सहित कई ओर शिक्षण संस्थानों में शिक्षक भर्तियां करेगा. इसमें सृजित सभी 12 सदस्य पदों पर नियुक्ति 14 मार्च को की गई थी, तब से आयोग को नियमित अध्यक्ष के नियुक्ति होने की प्रतीक्षा थी. कार्य व्यवस्था के लिए प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा एमपी अग्रवाल को 20 मार्च को कार्यवाहक अध्यक्ष बनाया गया था। सदस्य पदों पर हो चुकी नियुक्ति अभी तक शिक्षक भर्तियां अलग-अलग भर्ती संस्थानों से हो रही थीं। मुख्यमंत्री के निर्देश पर एकीकृत शिक्षक भर्तियां करने के लिए उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग का अधिनियम 23 अगस्त 2023 को बनाया गया, इसमें एक अध्यक्ष 12 सदस्यों के पद सृजित किए गए थे।

विवाहिता की मोबाइल पर उसकी अश्लील फोटो भेजा , वायरल करने की धमकी

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। खलीलाबाद कोतवाली जिला संत कबीरनगर निवासी एक युवती को गीडा थाना क्षेत्र का युवक उसकी मोबाइल पर उसकी अश्लील फोटो भेजकर उसे वायरल करने की धमकी देने पर पुलिस ने युवक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है ।मिली जानकारी से खलीलाबाद कोतवाली जिला संत कबीरनगर निवासी एक विवाहिता जो शनिवार 2 बजे के करीब नौसढ से बाधागाडा की तरफ जा रही थी। रास्ते में गीडा थाना क्षेत्र के खरैला गांव का युवक उसे रास्ते में रोक लिया। जिसका विवाहिता ने विरुद्ध किया तो वह जानमारने की धमकी देने लगा। और विवाहिता के मोबाइल पर इसकी अश्लील फोटो भेज कर वायरल करने की धमकी दे रहा था। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस आरोपी युवक मंदीप सिंह पुत्र वीरेंद्र सिंह निवासी खरैला थाना गीडा के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

बटवारे के बिना भूमि पर हो रहा अवैध कब्जा शिकायत

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा तहसील क्षेत्र के भेलउर ढडौली में बिना बटवारा किए पट्टीदार भूमि पर कब्जा कर निर्माण कार्य करा रहे है। पीड़ित ने तहसीलदार सहजनवा को शिकायत कर अवैध हो रहे निर्माण कार्य को रोकने की मांग किया है। मिली जानकारी से तहसील क्षेत्र भेलउर डढौली निवासी जय सिंह पुत्र रामशंकर जो गाटा संख्या 80 पत्थर नसब के लिया उपजिलाधिकारी सहजनवा के यहां वाद चल रहा है।

पट्टीदार मुकदमे को दरकिनार करते हुए अवैध निर्माण करा रहे है। मारपीट कर आमादा हो रहे है। पीड़ित ने तहसीलदार से शिकायत कर निर्माण कार्य रोकने की मांग किया है। इस संदर्भ में तहसीलदार सहजनवा राकेश कन्नौजिया ने कहा की राजस्व टीम को निर्माण कार्य रोकने के लिए आदेश दिया गया है।

सीतापुर में ग्राम प्रधान के घर से लाखों की चोरी

कमरों का ताला तोड़कर ले गए जेवरात, कृष्ण लीला देखने गया था परिवार

अमन लेखनी समाचार

सीतापुर, सीतापुर में चोरी की वारदातों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। हाल ही में सदरपुर थाना क्षेत्र के ग्राम गोडैचा में एक बड़ा मामला सामने आया है। जहां चोरों ने ग्राम प्रधान के घर को निशाना बनाकर करीब 4 लाख रुपये के सोने-चांदी के गहने और नगदी पर हाथ साफ कर दिए। मामला 29 अगस्त की रात का है जब प्रधान पति वीरेंद्र कुमार गुप्ता अपने परिवार के साथ गांव में चल रहे कृष्ण लीला कार्यक्रम में शामिल होने गए थे। इसी दौरान चोरों ने रात लगभग 2:00 बजे के आसपास प्रधान के घर के दरवाजे और कमरों के लॉक तोड़कर अंदर दाखिल हो गए। चोरों ने घर में रखे सभी सोने-चांदी के गहने और नगदी चुरा लिए। प्रधान परिवार की जब रात में घर वापसी हुई तो उन्हें घर का पूरा सामान बिखरा हुआ मिला, जिससे परिवार दंग रह गया। प्रधान पति ने रात ही पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए साक्ष्यों को इकट् ?ठा किया। पुलिस ने चोरी की वस्तुओं की लिस्ट तैयार कर मामले की जांच शुरू कर दी है। प्रभारी निरीक्षक राकेश सिंह का कहना है कि पुलिस की टीम मामले की जांच कर रही है और जल्द ही चोरों को गिरफ्तार कर घटना का खुलासा किया जाएगा।

मेरठ में किसानों ने कंगना रनौत का फूंका पुतला

❍ कहा- भाजपा सांसद अपने बयान पर मांगे माफी, मुकदमा दर्ज करने की उठाई मांग

अमन लेखनी समाचार

मेरठ, मेरठ में भाजपा सांसद कंगना रनौत का किसानों ने कमिश्नरी चौराहे पर पुतला फूंका। सांसद के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग की। उनका कहना है कि एक टीवी चैनल के साक्षात्कार में कंगना रनौत ने किसानों को बलात्कारी व हत्यारा कहा। ऐसे शब्द एक जनप्रतिनिधि को नहीं बोलने चाहिए। इससे उनकी मानसिकता के बारे में पता चलता है। भारतीय किसान यूनियन (किसान क्रांति) दल के नेता गुड्डू चौधरी के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ता कमिश्नरी चौराहे पर पहुंचे। उन्होंने भाजपा सांसद व फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत का पुतला फूंका है ।उनका कहना है कि कंगना रनौत ने एक टीवी चैनल के साक्षात्कार में किसानों को बलात्कारी व हत्यारा कहा हैं। उनका यह बयान किसानों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। किसानों का कहना है कि कुछ दिनों पहले कंगना रनौत के एयरपोर्ट पर पैरामिलिट्री फोर्स की जवान में थप्पड़ मारा था। उसके बावजूद भी उन्होंने अपनी बयान बाजी रोकथाम नहीं लगाई। ऐसे में कंगना पर मुकदमा दर्ज किया जाए।

भारतीय जनता पार्टी संज्ञान लेते हुए लोकसभा से भी उनकी सदस्यता रद्द करें। मांग नहीं मानी गई तो किसान बड़ा आंदोलन करेंगे।

समस्तीपुर आईसीएआर ने किसानों को भेजा घटिया बीज

पपीते की खेती में नहीं हुआ जार्मिनेशन, नाराज किसानों ने मांगा मुआवजा

अमन लेखनी समाचार

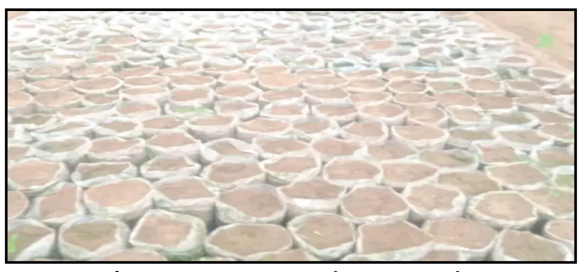

मेरठ, बिहार, समस्तीपुर के भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) पर किसानों ने घटिया बीज भेजने का आरोप लगाया है। किसानों ने सरकारी उपक्रम से 2 बार पपीते का बीज मंगाया। दोनों बार उन्हें पुराना बीज बेचा गया। पूरे बीज में एक भी अंकुरण नहीं हुआ। हालात यह कि किसानों का पपीते का पूरा सीजन चौपट हो गया। उन्हें 25 लाख रुपए से अधिक का नुकसान हुआ है। परेशान किसानों ने जब संस्थान में शिकायत की तो संस्थान के वैज्ञानिकों ने अपनी गलती नहीं मानी। उल्टा खेती के तरीके को गलत बता दिया। अब परेशान किसानों ने संस्थान के नेशनल डायरेक्टर से पूरे मामले की शिकायत की है और अपने नुकसान की क्षतिपूर्ति मांगी है। भारतीय जैविक किसान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष आकाश राठी ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में किसानों के साथ धोखाधड़ी हो रही है। किसानों को बीज के नाम पर घटिया बीज देकर उनके साथ ठगी की जा रही है। अन्नदाता ऐसे में कहां जाए। किस पर भरोसा करे। हम लोगों ने पूरे मामले की शिकायत दिल्ली में की है। जिस पर हेड क्वार्टर ने संज्ञान लेकर मामले की जांच शुरू की है। प्रांत जैविक प्रमुख भारतीय किसान संघ मेरठ प्रांत के किसान जुग्नेश पाल सिंह ने बताया कि बिलारी तहसील के गांव खासेपुर में 2011 से पपीते की विधिवत खेती कर रहा हूं। जुलाई में हम 7 किसानों ने मिलकर पूसा दिल्ली से पपीते की डवार्फ किस्म का बीज मंगाया था। चूंकि अनुसंधान संस्थान लगातार बीज पर काम कर रहा है। उनका बीज अच्छा होगा यह सोचकर हमने उनसे बीज मंगाया। हमें बताया गया कि समस्तीपुर बिहार की ब्रांच से डवार्फ वाला बीज मिलेगा। हम किसानों ने समस्तीपुर शाखा में हेड कृष्ण कांत सिंह से कांटेक्ट कर वहां से 320 ग्राम बीज जिसकी कीमत 14 हजार रुपयों से ज्यादा थी। वो स्पीड पोस्ट से मंगाया। बीज हम सभी ने अपने खेतों में डाल दिया। लेकिन 14 दिन बीतने के बाद भी एक भी बीज अंकुरित नहीं हुआ। इसकी शिकायत हमने डॉ. कृष्ण कांत से की तो उन्होंने कहा कि कर्मचारी ने गलती से पुराना बीज भेज दिया। किसानों का आरोप है कि संस्थान ने बीज भेजते वक्त उनसे एक पत्र भी लिखवाया कि इस बीज में अगर अंकुरण नहीं हुआ तो इसके जिम्मेदार किसान होंगे। हमारी शिकायत के 29 जुलाई को संस्थान ने हमें दोबारा स्पीड पोस्ट से बीज भेजा। सभी किसानों ने 5 अगस्त को डॉ. कृष्णकांत के बताए निर्देशों के अनुसार बीज लगा दिया।

लेकिन अब तक एक भी बीज अंकुरित (जार्मिनेशन) नहीं हुआ। दोबारा बीज मंगाने के बाद भी बीज अंकुरित नहीं हुए। जुगनेश ने बताया कि एक बार पुराना बीज आ सकता है लेकिन दोबारा जानबूझकर पुराना बीज भेजा गया।

शाहगंज में लायंस क्लब का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

❍ कार्यकारिणी समेत 10 नए सदस्यों ने ली शपथ, डिस्ट्रिक गवर्नर ने बेहतर करने के लिए प्रेरित किया

अमन लेखनी समाचार

शाहगंज, शाहगंज में लायंस क्लब शाहगंज स्टार का 10वां अधिष्ठापन और शपथ ग्रहण समारोह गुरुवार रात लक्ष्मी नारायण वाटिका में संपन्न हुआ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष मनीष अग्रहरि ने अपनी टीम के साथ शपथ ग्रहण की। इस मौके पर संस्था से जुड़े नए सदस्यों को भी शपथ दिलाई गई और पिन पहनाकर उनका स्वागत किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर बलवीर सिंह बग्गा, विशिष्ट अतिथि मल्टीपल काउंसिल सचिव जेएन श्रीवास्तव, मुख्य वक्ता पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर सौरभकांत श्रीवास्तव, अधिष्ठापन अधिकारी वाइस डिस्ट्रिक्ट गवर्नर अर्पणधर दुबे, और दीक्षा अधिकारी उदय चांदना मौजूद रहे। कार्यक्रम में 2023 के अध्यक्ष प्रवीण श्रीवास्तव ने अपने कार्यकाल की विभिन्न परियोजनाओं की जानकारी दी। इसके बाद नए अध्यक्ष मनीष अग्रहरि, सचिव मनोज पांडेय, और कोषाध्यक्ष पवन साहू समेत पूरी टीम ने शपथ ली। नए सदस्यों को दीक्षा अधिकारी उदय चांदना ने शपथ दिलाई। मुख्य अतिथि बलवीर सिंह बग्गा ने अपने संबोधन में शाहगंज इकाई की सेवा परियोजनाओं की सराहना करते हुए नई टीम को बधाई दी

मछलीशहर तहसील में कर्मचारियों की कमी से काम ठप्प

काश्तकारों और अधिवक्ताओं में बढ़ा आक्रोश, तहसीलदार बोले- जल्द ही समस्या का होगा समाधान

अमन लेखनी समाचार

मछली शहर, मछलीशहर तहसील में हाल ही में प्राइवेट कर्मचारियों को बाहर किए जाने के बाद से एक गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है। इन कर्मचारियों की कमी के कारण न्यायालयों और कार्यालयों में कोई कामकाज नहीं हो पा रहा है। न्यायालयों के आदेशों की फीडिंग रुक गई है और कंप्यूटरीकृत खतौनी पर कोई आदेश चढ़ नहीं पा रहे हैं, जिससे काश्तकार कई हफ्तों से तहसील के चक्कर काट रहे हैं। अधिवक्ताओं में भी गहरा आक्रोश देखा जा रहा है। जानकारी के मुताबिक शासन के आदेशों के अनुपालन में उपजिलाधिकारी शैलेंद्र कुमार ने सभी न्यायालयों और कार्यालयों में कार्यरत बाहरी प्राइवेट कर्मचारियों को बाहर कर दिया। लेकिन इस फैसले के साथ ही कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की गई, जिससे सभी कार्य प्रभावित हो गए हैं। वहीं सबसे अधिक समस्या कंप्यूटर कक्ष में हुई है, जहां कोई सरकारी कर्मचारी तैनात नहीं है और पूरा काम प्राइवेट कर्मचारियों के जिम्मे था। इसके चलते कंप्यूटर कक्ष में ताला लग गया है और न तो न्यायालय के आदेशों की फीडिंग हो रही है और न ही वरासत कार्य पूरे हो पा रहे हैं। इस बाबत तहसीलदार संतोष कुमार ने बताया कि जल्द ही इस समस्या का समाधान कर लिया जाएगा। उन्होंने आश्वासन दिया कि वैकल्पिक व्यवस्था की जा रही है

जौनपुर में ठेकेदारों ने किया हंगामा

❍ पीडब्ल्यूडी कार्यालय में दो घंटे रहा गहमा-गहमी का माहौल, भुगतान में देरी से नाराजगी

अमन लेखनी समाचार

जौनपुर, जौनपुर के खरका तिराहा स्थित पीडब्ल्यूडी कार्यालय में ठेकेदारों ने भुगतान न होने को लेकर दो घंटे तक हंगामा किया। ठेकेदारों का आरोप है कि मार्च के बाद से उनके कार्य का भुगतान लंबित है और इस मुद्दे पर कोई ठोस समाधान नहीं हो रहा। बताया जा रहा है कि अधिशासी अभियंता की ओर से भुगतान में विसंगतियों को सुलझाने के लिए एक बैठक बुलाई गई थी, जिसमें सभी ठेकेदारों को भी आमंत्रित किया गया था। बैठक में शामिल होने के बावजूद एकाउंटेंट राम मिलन यादव बिना किसी पूर्व सूचना के चले गए, जिससे ठेकेदारों का आक्रोश बढ़ गया और उन्होंने हंगामा शुरू कर दिया। ठेकेदारों ने आरोप लगाया कि एकाउंटेंट ने निजी स्वार्थ की वजह से जानबूझकर फाइलों को दबा दिया है। वे यह भी दावा कर रहे हैं कि प्रांतीय खंड के 60 से 70 ठेकेदारों का लगभग सात करोड़ रुपये बकाया है और वे लगातार इसकी शिकायत कर रहे हैं। ठेकेदारों ने अधिकारियों से तत्काल भुगतान की मांग की और प्रदर्शन के दौरान चंद्र प्रकाश सिंह, धीरज सिंह, घनश्याम सिंह, ज्ञानेंद्र सिंह आदि प्रमुख लोग मौजूद थे। अधिशासी अभियंता राजेंद्र कुमार ने बताया कि ठेकेदारों ने हंगामा नहीं किया बल्कि उनकी कुछ समस्याएं थीं।

संक्षेप

पुरानी रंजिश में पीआरडी जवान को पीटा, मुकदमा दर्ज

अमन लेखनी समाचार

भरुआ, सुमेरपुर। कस्बे की नवीन गल्ला मंडी से ड्यूटी करके वापस गांव जा रहे पीआरडी जवान को पुरानी रंजिश में चार युवकों ने रास्ते में रोककर जमकर पीटा और जान से मार देने की धमकी देकर भाग निकले। पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। थाना क्षेत्र के पत्योरा गांव निवासी संतोष कुमार पीआरडी जवान है। गत 14 अगस्त को यह ड्यूटी करके रात 9 बजे वापस पत्योरा जा रहा था। देवगांव के समीप गांव निवासी चंदन तथा काली निवासी टिकरौली ने दो अज्ञात साथियों के साथ रोक लिया और गाली गलौज करके जमकर पीटा और जान से मार देने की धमकी देकर फरार हो गए। उपचार कराने के बाद पीआरडी जवान ने चारों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने मारपीट एवं जान से मार देने की धमकी का मुकदमा दर्ज करके आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

बड़े भाई से झगड़कर छोटा भाई फांसी पर झूला

पत्योरा के मलिहा ताला में हुई घटना

अमन लेखनी समाचार

भरुआ, सुमेरपुर। शराब पीकर बड़े भाई से झगड़ा करके रविवार सुबह छोटे भाई ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। इससे परिवार में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया है। ग्राम पंचायत पत्योरा के मजरा मलिहा ताला निवासी कन्हई निषाद 45 वर्ष का किसी बात को लेकर बड़े भाई इंद्रपाल निषाद से शनिवार को विवाद हो गया था। मामला पुलिस तक भी पहुंचा था। पुलिस ने समझा बुझाकर मामला शांत करा दिया था। रविवार को सुबह कन्हई ने घर के अंदर साड़ी से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। इससे घर में कोहराम मच गया। मृतक सूरत में रहकर मजदूरी करता था। मृतक अपने पीछे पत्नी राम लक्ष्मी, पुत्री सरस्वती, अनसुइया, बंदों तथा पुत्र विपिन कुमार को रोता बिलखता छोड़ गया है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया है। थानाध्यक्ष राकेश कुमार ने बताया कि मजदूर ने आत्महत्या की है। विवाद का कोई कारण सामने नहीं आया है।

डीपीआरओ नें ग्राम पंचायत के सचिवालय, गौशाला, निर्माणाधीन आर.आर.सी का निरीक्षण किया

अमन लेखनी समाचार

हमीरपुर। सुमेरपुर विकासखंड के ग्राम पंचायत सहुरापुर में डीपीआरओ जितेंद्र कुमार मिश्र द्वारा पंचायत सचिवालय, गौशाला, निमार्णाधीन आर आर सी आदि का निरीक्षण किया गया और साथ ही ग्रामपंचायत का भ्रमण कर आमजन की समस्याओं/ आवश्यकताओं की भी जानकारी किया। पंचायत भवन का गेट टूटा है जिससे आवारा पशु घुस जाते हैं। नया गेट बनवा कर रखा गया है जिसे शीघ्र फिक्स कराने हेतु मौके पर उपस्थित प्रधान श्रीमती आशा के पति लल्ला सिंह चंदेल से कहा गया। पंचायत भवन में विद्युतीकरण, पानी, इंटरनेट के लिए वाई फाई, कम्प्यूटर आदि की व्यवस्था है। पंचायत सहायक द्वारा कार्य भी किया जाता है। लेकिन भवन में कुछ मरम्मत और सफाई की आवश्यकता अपेक्षित है। सफाई कर्मी की उपस्थिति रहती है, ऐसा बताया गया परंतु आज अवकाश के कारण उपस्थिति नहीं थी। सचिवालय के सभागार में इण्डिया मार्क 2 की मरम्मत/ रिबोर के फलस्वरूप निकली हुई निष्प्रयोज्य सामग्री रखी गई है जिसकी नीलामी करा कर धनराशि ओ एस आर खाते में जमा कराने हेतु कहा गया। वाटर कूलर लगा है परंतु क्रियाशील नहीं है। दूरभाष पर एडीओ पंचायत सुरेश वर्मा को स्वयं ग्रामपंचायत में एक बार भ्रमण कर सभी कार्यों को ठीक कराने हेतु निर्देशित किया। गौशाला में लगभग 80 पशु संरक्षित हैं और देखने में स्वस्थ्य भी हैं लेकिन पूरे परिसर में अत्यधिक कीचड़ होने के कारण उन्हें बैठने में समस्या है जिसका निदान ग्रामपंचायत के स्तर से तत्काल अपेक्षित है। लगातार कीचड़ में रहने से पशुओं में खुरपका जैसे रोग होने की संभावना है। आर आर सी (वर्ष 24-25) प्लिंथ स्तर तक बना है। कार्य बंद है। लल्ला सिंह द्वारा बताया गया कि ईंट खराब आ जाने के कारण कार्य रुकवा दिया है। दूसरी ईंट आने पर कार्य शुरू हो जाएगा। सामान्य तौर पर ग्रामपंचायत में साफ सफाई की अवश्यकता है। सफाई कर्मी के अलावा भी श्रमिक लगा कर सफाई हेतु निर्देश दिए गएेअभी खपरैल और मिट्टी के बहुत सारे मकान ग्रामपंचायत में हैं जिनमें लोग निवास करते हैं। अपेक्षा की गई कि वर्तमान में जो सर्वे होने हैं उसमें पात्र व्यक्तियों का शतप्रतिशत चयन अवश्य कर लिया जाय। सचिव राम बाबू गुप्ता के विषय में ग्रामवासियों द्वारा बताया गया कि बहुत कम आते हैं जिससे समस्याओं के निराकरण में परेशानी होती है। इस संबंध में एडीओ पंचायत को अवगत कराते हुए उचित और प्रभावी कार्यवाही की अपेक्षा की गई।

जामों ब्लाक में कांग्रेस की मासिक बैठक

विकास कार्यों और समस्याओं पर चर्चा

अमन लेखनी समाचार

अमेठी जिले ब्लाक जामों में कांग्रेस की मासिक बैठक आयोजित की गई, जिसमें ब्लाक कमेटी जामों के सभी न्याय पंचायत, ग्राम सभा अध्यक्ष, बूथ अध्यक्ष और पदाधिकारी शामिल हुए। बैठक में विकास कार्यों और लोगों की समस्याओं पर चर्चा की गई। यह निर्णय लिया गया कि कांग्रेस जिला महासचिव गीता सिंह ने बताया की समस्याओं का समाधान केंद्रीय कार्यालय गौरीगंज भेजकर सांसद को अवगत कराया जाएगा और शीघ्र निदान सुनिश्चित किया जाएगा। कांग्रेस नेत्री ने कहा, हमारी मासिक बैठक में विकास कार्यों और स्थानीय समस्याओं पर गंभीर चर्चा की गई। हम सुनिश्चित करेंगे कि सभी समस्याओं का समाधान जल्द से जल्द केंद्रीय कार्यालय गौरीगंज के माध्यम से सांसद को अवगत कराकर किया जाए। हमारी टीम पूरी तरह से समर्पित है और हम जनता की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करेंगे।

आल्हा ऊदल की वीरता सुन श्रोताओं की फड़की भुजाएं

अमन लेखनी समाचार

अमेठी। सावन के महीने में संगीतमय आल्हा कार्यक्रम का आयोजन जगह-जगह पर हो रहा है। इसी कड़ी में ब्लाक संग्रामपुर के ग्राम सभा मड़ौली में आल्हा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। आल्हा का गायन आल्हा गायक महेश शुक्ला भावापुर भादर द्वारा किया गया। जिस कार्यक्रम में श्रोतागण आल्हा का लुफ्त उठाते नजर आए। आल्हा कार्यक्रम का आयोजन सुभाष तिवारी मड़ौली द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में गया प्रसाद पाण्डेय, कुलदीप शुक्ला, एडवोकेट विभव तिवारी, लालजी पाण्डेय, राकेश पाण्डेय, राजेश पाण्डेय, गया प्रसाद पाण्डेय रामकोला, गंगा प्रसाद पाण्डेय, दिनेश शुक्ला, विपिन बिहारी पाण्डेय, रामसुंदर तिवारी, ज्वाला प्रसाद मिश्रा आदि मौजूद रहे।

मुंशीगंज आसपास क्षेत्रो में पैदल गश्त करती पुलिस

अमेठी शांति सुरक्षा व कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतू मिशन शक्ति नारी सुरक्षा/नारी सम्मान/नारी स्वावलंबन के दृष्टिगत महिलाओं व बालिकाओं में सशक्तिकरण व विश्वास का वातावरण तथा आमजनमानस में विश्वास व सुरक्षा का वातावरण बनाने के उद्देश्य से मुंशीगंज बाजार चौराहा के आस पास पुलिस ने किया गश्त व क्षेत्राधिकारी मुसाफिरखाना अतुल कुमार सिंह द्वारा थानाक्षेत्र बाजार शुक्ल में, क्षेत्राधिकारी तिलोई अजय कुमार सिंह द्वारा कस्बा मोहनगंज में, क्षेत्राधिकारी अमेठी लल्लन सिंह द्वारा थानाक्षेत्र पीपरपुर में एवं जनपद के थानों द्वारा पुलिस बल के साथ अपने-अपने थानाक्षेत्र में भीड़भाड़ एवं संवेदनशील स्थानों पर पैदल गश्त की गयी तथा थानों व जनपद की सीमाओं पर विशेष चेकिंग अभियान चलाकर संदिग्ध व्यक्तियों, वस्तुओं एवं वाहनों की चेकिंग की गयी।

प्रसव पश्चात परिवार नियोजन सेवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर मंथन

पीएसआई इंडिया के सहयोग से आयोजित हुआ ओरिएंटेशन कार्यक्रम

अमन लेखनी समाचार

हरदोई। जिला महिला अस्पताल में शनिवार को पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया (पीएसआई-इंडिया) के सहयोग से आयोजित ओरिएंटेशन कार्यक्रम में प्रसव पश्चात परिवार नियोजन सेवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने और समय से रिपोर्टिंग पर गहन मंथन किया गया। कार्यक्रम में जिला महिला अस्पताल के चिकित्सकों व अन्य स्वास्थ्य कर्मियों ने भाग लिया। मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. सुबोध कुमार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस मौके पर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक ने कहा कि अस्पतालों में प्रदान की जाने वाली परिवार कल्याण सेवाओं की रिपोर्ट समय से हेल्थ मैनेजमेंट एंड इन्फॉर्मेशन सिस्टम (एचएमआईएस) पोर्टल पर अपलोड करना सुनिश्चित किया जाए। कार्यक्रम में पीएसआई-इंडिया के मैनेजर प्रोग्राम इम्प्लीमेंटेशन धर्मेंद्र सिंह एवं जिला अस्पताल से डॉ. मधुलिका शुक्ला और डॉ. स्वाति ने प्रजेंटेशन के माध्यम से कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में प्रसव पश्चात और गर्भपात पश्चात परिवार कल्याण सेवाओं के बारे में चर्चा करने के साथ ही अस्पतालों में प्रदान की जाने वाली प्रसव पश्चात परिवार नियोजन सेवाओं की मासिक रिपोर्ट एचएमआईएस पोर्टल पर निश्चित रूप से अपलोड करने की अपेक्षा की गयी। बैठक में उपस्थित चिकित्सकों और स्टाफ से कहा गया कि वह हर माह की 21 से अगले माह की 20 तारीख तक प्रसव संबंधी सेवाओं, परिवार कल्याण कार्यक्रम, मातृ एवं शिशु जन्म रिपोर्ट अनिवार्य रूप से कार्यालय को प्रेषित करें और रिपोर्ट एचएमआईएस पोर्टल पर अपलोड करें। कार्यक्रम में प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ, स्टाफ नर्स, एएनएम, वार्ड आया व एचएमआईएस ऑपरेटर के साथ में पीएसआई इंडिया से गणेश शुक्ला उपस्थित रहे।

अमेठी मे भेड़ियों की सूचना पर वन विभाग ने शुरू की जागरूकता

अमन लेखनी समाचार

अमेठी प्रदेश के बहराइच जिले में आदमखोर भेड़ियों का आतंक और लखीमपुर खीरी में बाघों की दहशत ने पूरे इलाके में हड़कंप मचा रखा है। इन घटनाओं के मद्देनजर अमेठी वन विभाग ने भी त्वरित कार्रवाई शुरू कर दी है। वन विभाग की टीम गोमती नदी के किनारे बसे गांवों जैसे बाजार शुकुल, जगदीशपुर, और मुसाफिरखाना में लगातार गश्त कर रही है। टीम ग्रामीणों को खतरनाक जानवरों से बचने के उपाय बता रही है और किसी भी आपात स्थिति में तुरंत वन विभाग को सूचित करने की अपील कर रही है। वन विभाग के अधिकारी ने बताया कि ग्रामीणों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रात भर पहरेदारी की जा रही है। किसी भी तरह की अप्रिय घटना को रोकने के लिए विभाग की सक्रियता को देखते हुए अब ग्रामीणों को भी सतर्क रहने की सलाह दी गई है।

जामों ब्लाक में कांग्रेस की मासिक बैठक

विकास कार्यों और समस्याओं पर चर्चा

अमन लेखनी समाचार

अमेठी जिले ब्लाक जामों में कांग्रेस की मासिक बैठक आयोजित की गई, जिसमें ब्लाक कमेटी जामों के सभी न्याय पंचायत, ग्राम सभा अध्यक्ष, बूथ अध्यक्ष और पदाधिकारी शामिल हुए। बैठक में विकास कार्यों और लोगों की समस्याओं पर चर्चा की गई। यह निर्णय लिया गया कि कांग्रेस जिला महासचिव गीता सिंह ने बताया की समस्याओं का समाधान केंद्रीय कार्यालय गौरीगंज भेजकर सांसद को अवगत कराया जाएगा और शीघ्र निदान सुनिश्चित किया जाएगा।

कांग्रेस नेत्री ने कहा, हमारी मासिक बैठक में विकास कार्यों और स्थानीय समस्याओं पर गंभीर चर्चा की गई। हम सुनिश्चित करेंगे कि सभी समस्याओं का समाधान जल्द से जल्द केंद्रीय कार्यालय गौरीगंज के माध्यम से सांसद को अवगत कराकर किया जाए। हमारी टीम पूरी तरह से समर्पित है और हम जनता की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करेंगे।

युवती को बंधक बनाकर चार दिन तक किया दुष्कर्म, मारपीट, मुकदमा दर्ज

अमन लेखनी समाचार

मौदहा, हमीरपुर। युवती को घर में बंधक बनाकर चार दिन तक दुष्कर्म करने के बाद युवक के परिजनों द्वारा युवती से मारपीट करने और गाली गलौज करने का मामला सामने आते ही हड़कंप मच गया है हालांकि मामला प्रेम प्रसंग का बताया जा रहा है जबकि पुलिस ने गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही शुरू कर दी है। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी एक युवती ने कोतवाली में दिए शिकायती पत्र में बताया कि वह दलित समाज की युवती है, गांव का ही नीरज यादव उर्फ गोली काफी समय से उसे शादी का झांसा देकर फंसाने के चक्कर में था। पीड़िता ने बताया कि बीते 25 अगस्त को दोपहर में नीरज यादव उसके घर आया और अपनी बातों फंसा कर उसे अपने साथ अपने घर लिवा ले गया जहां पर चार दिन तक बंधक बनाकर नीरज ने उसके साथ लगातार दुष्कर्म किया और उसके बाद उक्त नीरज उसे छोड़कर फरार हो गया जिसके बाद उसके उक्त नीरज के परिजनों ने उसके साथ मारपीट की और घर से निकाल दिया। जिसके बाद पीड़िता अपने घर पहुंची और परिजनों को सारी बातें बताई। पीड़िता ने बताया कि उक्त नीरज आपराधिक प्रवृत्ति का युवक है और कई मुकदमे दर्ज हैं साथ ही आरोपी लगातार शिकायत करने पर जानमाल की धमकी दे रहे हैं। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

अनियंत्रित आटो पलटने से आधा दर्जन से अधिक छात्र घायल

कस्बे में मानसिक विक्षिप्त और नाबालिग दौड़ा रहे हैं आटो

अमन लेखनी समाचार

मौदहा, हमीरपुर। रविवार सुबह कस्बे से पढ़कर गांव जा रहा छात्रों से भरा आटो पलट गया जिसमें चालक सहित आधा दर्जन से अधिक छात्रों को गंभीर चोंटे आईं हैं। राहगीरों की मदद से सभी घायलों को इलाज के लिए कस्बे के प्राईवेट अस्पताल में भेजा गया है जहां पर सभी का इलाज किया जा रहा है वहीं आटो चालक मानसिक विक्षिप्त बताया जा रहा है। रविवार सुबह कस्बे से परछा पढ़कर जा रहे छात्र छात्राओं से भरा आटो तेज रफ्तार होने के कारण परछा मोड़ पर पलट गया जिसमें आधा दर्जन से अधिक छात्रों को गंभीर चोंटे आईं हैं। राहगीरों और ग्रामीणों ने पलटे आटो को सीधा कर सभी को आटो से निकाल कर इलाज के लिए कस्बे के प्राईवेट अस्पताल पहुंचाया। वहीं आटो चालक मानसिक रूप से विक्षिप्त बताया जा रहा है।

नसीराबाद थाना प्रभारी सस्पेंड, उन्नाव सीओ को सौंपी गई जांच

अमन लेखनी समाचार

रायबरेली। नसीराबाद के पिछवरिया गांव में 11 अगस्त को अर्जुन पासी की गोली मारकर की गई हत्या के मामले में शुक्रवार की देर रात नसीराबाद थाना प्रभारी जितेंद्र मोहन सरोज को निलंबित कर दिया गया। वहीं शासन ने इस हत्याकांड की जांच सीओ सलोन से छीनकर क्षेत्राधिकारी उन्नाव को सौंप दी है। नेता प्रतिपक्ष और सांसद राहुल गांधी ने प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि विशाल सिंह की गिरफ्तारी की मांग की थी। माना जा रहा है कि राहुल के पत्र लिखने और इस मुद्दे को उठाने के बाद शासन ने प्रकरण को गंभीरता से लिया। इसके बाद एसपी ने थाना प्रभारी पर कार्रवाई की। इस मामले को लेकर पीड़ित परिवार का गुस्सा अभी थमा नहीं है। नसीराबाद थाना क्षेत्र के पिछवरिया गांव निवासी अर्जुन पासी की 11 अगस्त की रात घर के बाहर बुलाकर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। मामले में सात आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस ने छह आरोपियों को गिरफ्तार करके जेल भेजा था, लेकिन ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि विशाल सिंह की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। मृतक युवक की मां ने बेटे की हत्या में विशाल सिंह की संलिप्तता की बात कही थी। 20 अगस्त को सांसद राहुल गांधी ने गांव का दौरा कर पीड़ित परिवार से 17 मिनट तक बात की थी। उन्होंने कहा था कि पीड़ित परिवार के साथ अन्याय हुआ है और एसपी मास्टरमाइंड को गिरफ्तार नहीं कर सके हैं। उन्होंने इस पर डीएम हर्षिता माथुर और एसपी अभिषेक अग्रवाल को त्वरित कार्रवाई। करने की बात कही थी। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने 29 अगस्त को प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर युवक की हत्या में शामिल आरोपी ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि विशाल सिंह की गिरफ्तारी कराए जाने की मांग की थी। माना जा रहा है कि इसके बाद मुख्यमंत्री ने मामले को संज्ञान में लिया और रायबरेली पुलिस को प्रकरण में कार्रवाई करने के निर्देश दिए। साथ ही विवेचना भी स्थानांतरित की गई। पुलिस अधीक्षक अभिषेक अग्रवाल ने बताया कि नसीराबाद थाना प्रभारी जितेंद्र मोहन सरोज को सस्पेंड कर दिया गया है। प्रकरण की विवेचना उन्नाव सीओ को सौंपी गई है।

शिवाकांत को बनाया गया नसीराबाद का नया प्रभारी

भदोखर थाना प्रभारी शिवाकांत पांडेय को नसीराबाद थाने का नया प्रभारी नियुक्त किया गया है। वहीं, भदोखर थाना में तैनात निरीक्षक दयानंद तिवारी को भदोखर थाने की जिम्मेदारी दी गई है। जिस तरह यह मामला तूल पकड़ रहा है, नसीराबाद के नए थाना प्रभारी के लिए अग्निपरीक्षा से कम नहीं है। पीड़ित परिवार न्याय दिलाने की मांग कर रहा है।

वरिष्ठ पत्रकार उमेश उपाध्याय नहीं रहे

आईआईएमसी के पूर्व महानिदेशक ने कहा उमेश जी ने वैश्विक मीडिया के भारत विरोधी चेहरे को उजागर किया

अमन लेखनी समाचार

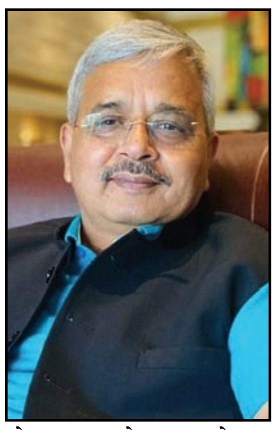

भोपाल। भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी) के पूर्व महानिदेशक प्रो.संजय द्विवेदी ने वरिष्ठ पत्रकार उमेश उपाध्याय के असामयिक निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि श्री उपाध्याय के निधन से हिन्दी मीडिया का एक सितारा अस्त हो गया। वे वैश्विक मीडिया के भारत विरोधी चेहरे को उजागर करने वाले साहसी पत्रकार थे। श्री उमेश उपाध्याय का एक सितंबर को निधन हो गया है। बताया जाता है कि उमेश उपाध्याय के दिल्ली स्थित घर पर कुछ काम चल रहा था, इसी दौरान कुछ काम करते समय वह गिरकर घायल हो गए थे। तत्काल ही उमेश उपाध्याय को अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका निधन हो गया। प्रो.द्विवेदी ने कहा कि एक अनुभवी पत्रकार व कम्युनिकेटर के रूप में उमेश जी ने मीडिया की हर विधा में काम किया। टीवी पत्रकारिता से प्रारंभ कर वे आनलाइन माध्यम और कारपोरेट कम्युनिकेशन के भी सिद्ध हस्ताक्षर बने। उन्होंने एक ग्राउंड रिपोर्टर से एक अनुभवी संपादक तक का सफर तय किया। श्री उपाध्याय ने प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया', 'ऑल इंडिया रेडियो', 'डीडी न्यूज', 'नेटवर्क18' और 'जी न्यूज' सहित कई अन्य न्यूज नेटवर्क के साथ काम किया। जेएनयू, डीयू और ऋळकक के छात्र रह चुके उमेश उपाध्याय का अंतरराष्ट्रीय संबंधों और मीडिया के प्रति उनका जुनून उनके लेखों में स्पष्ट होता है। उन्होंने कई न्यूज व टॉक शो बनाए। प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हाल में आई उनकी किताब वेस्टर्न मीडिया नरेटिव्स ऑन इंडिया फ्रॉम गांधी टू मोदी उनके विलक्षण अध्यवसायी और शोधकर्ता होने का प्रमाण है। ऐसे समय में जब देश वैश्विक स्तर पर नरेटिव की जंग लड़ रहा है, वैश्विक मीडिया के भारत विरोधी पाखंड को उजागर करने और उसकी समझ रखने वाले पत्रकार का निधन पीड़ादायक है।

तेज रफ्तार कार ई रिक्शा को बचाने में गहरी खाई में गिरी, पांच घायल

अमन लेखनी समाचार

भरुआ, सुमेरपुर। रविवार को दोपहर चित्रकूट से वापस जा रही तेज रफ्तार कार कस्बे में श्री गायत्री विद्यामंदिर इंटर कॉलेज के सामने ई रिक्शा को बचाने में अनियंत्रित होकर हाईवे किनारे गहरी खाई में पलट गई। इस घटना में कार सवार दंपत्ति एवं तीन लड़कियां घायल हो गयी। सभी घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद कानपुर रेफर कर दिया गया। कानपुर निवासी अमित पांडे 45 वर्ष अपनी पत्नी विभा पांडे 42 वर्ष के अलावा भांजी कृतिका 18 वर्ष, कृति 15 वर्ष तथा पुत्री बेबो 5 वर्ष के साथ चित्रकूट से दर्शन करके कार से वापस कानपुर लौट रहे थे। दोपहर करीब एक बजे जैसे ही यह कस्बे में घुसे वैसे ही श्री गायत्री विद्यामंदिर इंटर कॉलेज के सामने अचानक ईरिक्शा के आ जाने से तेज रफ्तार कार अनियंत्रित हो गई और कॉलेज के सामने हाईवे किनारे गहरी खाई जा गिरी। इस घटना में कार सवार पांचो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए और कार क्षतिग्रस्त हो गई। सभी घायलों को राहगीरो ने कार से निकालकर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद पाचों को कानपुर रेफर किया गया है। बाद में अमित पांडे के परिचितों एवं रिश्तेदारों ने क्रेन की मदद से कार को खड्ड से निकलवा कर बाहर किया।

नेशनल हाईवे में ट्रक से कुचलकर बाइक सवार युवक की मौत

अमन लेखनी समाचार

भरुआ, सुमेरपुर। हाईवे पर शनिवार की रात को करीब दो बजे इंगोहटा बस स्टैंड के पास अज्ञात वाहन बाइक सवार को कुचलता हुआ निकल गया। जिससे उसकी मौके पर दर्दनाक मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने क्षत विक्षत शव को समेटकर पोस्टमार्टम को भेजा है। सुमेरपुर थाना क्षेत्र के कैथी के मजरा भैरम डेरा निवासी पंकज कुमार 21 वर्ष पुत्र तेजकुमार प्रजापति शनिवार की रात करीब दो बजे बाइक से सुमेरपुर से इंगोहटा की तरफ आ रहा था। तभी कबरई से सुमेरपुर की ओर जा रहे एक अज्ञात वाहन ने उसे कुचल दिया। जिससे उसकी मौके पर मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने उसके मोबाइल से परिजनों को सूचना दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। अचानक हुई इस घटना से उसके घर कोहराम मच गया। मृतक दो भाइयों एवं दो बहनों में सबसे बड़ा था। मृतक की मां घर पर रहती है। जबकि पिता दिल्ली में रहकर मजदूरी करता है। ग्राम प्रधान कैथी अरिमर्दन सिंह ने बताया कि युवक रात में 11 बजे तक श्रीकृष्ण की छठी समारोह में गांव में ही देखा गया। इसके बाद वह इंगोहटा क्यों जा रहा था। किसी को कोई जानकारी नहीं है। बताया कि रविवार को इसको भी मेहनत मजदूरी के लिए सूरत जाना था। युवक की मौत से परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है।

अमन लेखनी
(हिन्दी दैनिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती अखिलेश सिंह द्वारा अवध एक्सप्रेस प्रकाशन, 434, सिविल लाइन, जेल रोड, उन्नाव, उत्तर प्रदेश से मुद्रित और ग्राम व पोस्ट-बनी, थाना- बन्थरा, लखनऊ-226401 (उ.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक– श्रीमती अखिलेश सिंह

समाचार सम्पादक – रुद्र प्रताप सिंह

समाचार से संबंधित सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र लखनऊ होगा।

मो. – 9838159555, 9935457982

E-mail address amanlekhaninews@gmail.com

तन-मन-जीवन में हैं कुदरत की ये सौगातें

आमतौर पर हम अपने पास उपलब्ध चीजों या सुविधाओं के प्रति कृतज्ञ होने के बजाय, कमियों को लेकर दुखी रहते हैं, उनके ना होने का रोना रोते रहते हैं। सच्चाई यह है कि कुदरत ने हम इंसानों के तन-मन में ही ऐसी ढेरों खूबियों की सौगातें दी हैं, जो अनमोल हैं। खुशहाली से जीने का तरीका यही है कि हम इन सौगातों का का मोल समझें और जीवन का भरपूर आनंद लें।

{ **कवर स्टोरी / विवेक कुमार** }

आप सबने शायद यह बोधकथा सुनी होगी- एक आदमी किसी महात्मा के पास पहुंचा और बोला, 'मैं दुनिया का सबसे गरीब आदमी हूं, मेरी कोई कीमत नहीं है।' महात्मा ने उसकी तरफ थोड़े आश्चर्य और उत्सुकता से देखा और उसे बोलने दिया। जब वह व्यक्ति काफी कुछ बोल चुका, तो महात्मा ने कहा, 'ऐसा करो कि मुझे अपने हाथ की एक अंगुली दे दो, सबसे छोटी अंगुली और मैं तुम्हें एक लाख रुपए दूंगा।' यह सुनकर वह आदमी भौंचक रह गया और बोला, 'अरे, नहीं महाराज मैं अंगुली कैसे दे सकता हूं?' इस पर महात्मा बोले, 'तो चलो तुम मुझे अपना बायां हाथ काटकर दे दो, मैं तुम्हें एक करोड़ रुपए दूंगा। वैसे भी बाएं हाथ की बहुत उपयोगिता भी नहीं होती है।' यह सुनकर तो वह आदमी और परेशान हो गया। वह बोला, 'नहीं-नहीं... महाराज मैं अपना हाथ कैसे दे सकता हूं? इससे तो मैं अपंग हो जाऊंगा।' महात्मा ने कहा, 'जब तुम्हारे पास लाखों की अंगुली, करोड़ों का हाथ और इसी तरह जोड़कर अरबों रुपए का शरीर है, फिर तुम कैसे कहते हो कि तुम दुनिया के सबसे गरीब और अभागे इंसान हो?' यह सुनकर उस आदमी को अपनी भूल का अहसास हो गया।

हममें से अधिकतर लोग कुदरत से मिली उस दौलत की कोई कीमत ही नहीं समझते, जिसका हमारे पास खजाना है। जबकि हम इंसानों के अलावा धरती के किसी भी दूसरे प्राणी के पास ये दौलत नहीं है। हमारे पास सोचने-समझने के लिए विकसित बुद्धि, देखने के लिए आंखें, देखे हुए को एहसास करने के लिए मन, स्पर्श करने के लिए हाथ, बोलने-सुनने की क्षमता, खुशी जाहिर करने के लिए हंसी जैसी कई अनमोल सौगातें हैं, लेकिन हम कभी इनकी कोई कीमत ही नहीं समझते। ये तमाम खासियतें दुनिया के किसी भी प्राणी के पास नहीं हैं। लेकिन हमें कुदरत ने जो अनमोल खजाना दिया है, उसकी कोई कीमत नहीं समझते। आइए जानते हैं कि हमारे पास धरती पर मौजूद लाखों अन्य जीव प्रजातियों से अलग कैसे कुदरत का दिया हुआ अनमोल खजाना है!

खुशी प्रकट करने वाली हंसी

किसी शायर का मशहूर शेर है-
या तो दीवाना हंसे, या तू जिसे तौफीक दे
वर्ना इस दुनिया में आकर मुस्कुराता कौन है।

हंसना भी कुदरत की उन्हीं अनमोल उपहारों का एक हिस्सा है, जो कुदरत ने हमें दिए हैं। हंसना बहुत बड़ी ताकत है, हंसना बहुत बड़ी भाषा है, हंसकर आप बड़ी से बड़ी जंग, जटिल विवाद टाल सकते हैं। हंसकर, हंसाकर आप किसी को इतना सुख, इतनी खुशी दे सकते हैं कि जिसकी कोई कीमत नहीं है। याद रखिए, इंसान के अलावा दुनिया का कोई भी दूसरा जंतु हंस नहीं पाता।

बंदर और वनमानुष हंसने के नाम पर सिर्फ अपने दांतों की बत्तीसी बाहर कर देते हैं। ये हंसना नहीं एक शारीरिक मुद्रा है। हंसना तो वह है, जिससे आंखों में चमक उभर आती है, मन खिल उठता है, सारा तनाव दूर हो जाता है। हंसना हमारा मूड सही कर देता है, हंसना हमें दूसरों के सामने सबसे खुशमिजाज इंसान बना देता है। इसलिए हंसने की अनोखी खूबी के लिए भी हमें कुदरत का आभारी होना चाहिए।

देखने के लिए आंखें

'देखना' यूं तो सभी जंतुओं को कुदरत से मिली एक बहुत बड़ी ताकत है। लेकिन इंसान के लिए तो इसके कुछ अलग ही मायने हैं। इसकी कीमत लोग तब समझते हैं, जब किसी वजह से देखने से वंचित हो जाते हैं या दुर्भाग्य से जन्मजात वंचित होते हैं।

कुदरत ने हमें जो दो आंखें दी हैं, अगर ये ना हों तो हमारे लिए दुनिया एक अंधकार से ज्यादा कुछ नहीं है। ये आंखें ही हैं, जो दुनिया की सारी विविधताओं से हमारा परिचय कराती हैं। यही बताती हैं कि कैसा उत्तुंग हिमालय है और कैसा लहराता समंदर होता है। अगर हमारी आंखें ना हों तो हमारे लिए क्या ताजमहल, क्या नियाग्रा का जलप्रपात, सब कुछ सौंदर्यहीन क्योंकि सब कुछ अंधकार लगेगा। दुनिया में मौजूद लाखों किस्म के फूल, असंख्य पेड़-पौधे, कुदरत के नजारे, सब कुछ अंधेरे में डूबे लगेंगे। इसलिए देखने की क्षमता को हमें कुदरत से मिला एक अनमोल उपहार समझना चाहिए।

सुनने के लिए कान

हम बादलों की गड़गड़ाहट, पक्षियों का कलरव, इंसानों की बातें, वाद्ययंत्रों की मधुर धुनें जैसी बेशुमार आवाजों का कभी एहसास ही नहीं कर पाते, अगर हमारे शरीर में कान नहीं होते। कल्पना करिए, आपका कोई अपना जरूरी या भावनाओं से भरी बात कह रहा है और आप उसे सुन ही नहीं पा रहे तो आपके मन पर क्या बीतेगी? आप वो सब सुनने के लिए बेचैन हो उठेंगे। ऐसी स्थिति की कल्पना कर समझा जा सकता है कि सुनना इंसान को मिला कुदरत का कितना कीमती उपहार है।

प्यार करने का एहसास

प्यार करना शायद इंद्रियों की सबसे सरस अनुभूति है। यूं तो वंशवृद्धि के लिए दुनिया का हर जीव अपने साथी के साथ संबंध बनाता है। लेकिन प्यार जैसी अनमोल अनुभूति शायद सिर्फ इंसानों के पास होती है। इंसान के अलावा अगर इसे और किसी के पास प्यार करने की समझ हम मानते हैं तो यह सिर्फ एक अनुमान है। लेकिन इंसान में प्यार करने की जो खूबी है, उसका दुनिया की किसी दौलत, दुनिया के किसी कौशल से मुकाबला नहीं किया जा सकता है। प्यार करना हमें खुशियों से भर देता है। प्यार करना हमें इस कदर रोमांचित कर देता है कि हम दुनिया में खुद को सबसे खास, समझने लगते हैं। प्यार करना एक ऐसा एहसास है, जिसके सामने हम अपने सारे अहंकार, एकाकीपन

और तकलीफों को ऐसे भूल जाते हैं, जैसे वो हमारे पास कभी रहे ही ना हों। प्यार करने के लिए किसी का अमीर होना जरूरी नहीं होता, किसी का छोटा या बड़ा होना जरूरी नहीं होता, किसी का पढ़ा-लिखा होना या गैर पढ़ा-लिखा भी होना जरूरी शर्त नहीं है। प्यार ऐसा एहसास है, जिसमें ये हर चीज अर्थहीन और गैरजरूरी हो जाती है। कुदरत से हमें मिली यह एक ऐसी निधि है, जिसका हम कभी मोल नहीं लगा सकते, क्योंकि प्यार में वह शक्ति होती है कि वो हमारा व्यक्तित्व ही नहीं, पूरा जीवन बदल सकता है।

कहने का सार यही है कि हमें कुदरत ने जो सौगातें दी हैं, उनका मोल हम समझें और इनका एहसास कर जीवन को खुशनुमा बनाएं। *

अनूठी अनुभूति देने वाला स्पर्श

मां जैसे ही रोते हुए अपने शिशु को प्यार से स्पर्श करती है, उसका रोना छूमंतर हो जाता है। प्रेमिका जरा सा हाथ से स्पर्श करती है कि प्रेमी का मन प्यार से भर जाता है। छूना यानी स्पर्श भी एक अवर्णनीय एहसास है। देश-विदेश में कई जगहों पर बड़े-बड़े जटिल रोगों को स्पर्श चिकित्सा (टच थैरेपी) के जरिए दूर किया जाता है। रोते हुए बच्चे को, हौसला तोड़ चुके सिपाही को, हार गए खिलाड़ी को और रूठ गई प्रेमिका को सबसे बड़ी तसल्ली, सबसे बड़ा संबल, उन्हें प्यार भरी भावना, अपनेपन से स्पर्श करने से ही मिल जाता है। इसलिए अगर आप कुछ छूकर अंदर तक सिहर उठते हैं तो शुक्र मानिए, अपने जीवंत मन और तन का कि आपमें यह संवेदना महसूस करने की सौगात कुदरत ने आपको दी है।

स्पेशल: टीचर्स-डे, 5 सितंबर

पारंपरिक शिक्षा पद्धति पर आधारित तो देश में लाखों स्कूल हैं। लेकिन उनमें से कुछ ऐसे हैं, जहां के शिक्षक बच्चों को बहुत अलग-अनूठे ढंग से शिक्षित करते हैं। इनमें से कुछ के बारे में जानिए।

अनूठी शिक्षा-शिक्षकों वाले देश के ये अनोखे स्कूल

{ **पहल**
शिखर चंद जैन }

चिराग स्कूल, उत्तराखंड

हमारे देश में कुछ ऐसे स्कूल भी हैं, जहां पारंपरिक के बजाय शिक्षा के नए आयाम देखे जा सकते हैं। इन स्कूलों के शिक्षक, शिक्षा को व्यावहारिक, तर्कसंगत, जीवनोपयोगी और देश-समाज-पर्यावरण के लिए उपयोगी बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

चिराग स्कूल, उत्तराखंड: किताबी पढ़ाई के साथ-साथ हमारी पुरानी परंपराओं, जीवनमूल्यों और अत्याधुनिक तकनीकी जानकारी की शिक्षा दी जाती है, उत्तराखंड (सिमयाल गांव, कुमाऊं) के चिराग स्कूल में। यहां बच्चों को उपयोगी स्किल्स भी सिखाई जाती हैं। साथ ही स्थानीय संस्कृति के मुताबिक मिट्टी के ईंट बनाने से लेकर माइक्रोचिप जैसी चीज के बारे में सिखाया और पढ़ाया जाता है, जो बच्चों का जीवन सरल, सार्थक और सफल बनाए। यहां विविधतापूर्ण कोर्सेस को, बच्चों को व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने के हिसाब से तैयार किया गया है। इस स्कूल में बच्चों की व्यक्तिगत क्षमताओं और रुचियों के मुताबिक पढ़ने की शैली पर जोर दिया जाता है।

द हेरिटेज स्कूल, पश्चिम बंगाल: अपने नाम के मुताबिक ही यहां के शिक्षक अपने छात्रों को प्राचीन गुरुकुल परंपराओं से रूबरू करवाने की कोशिश करते हैं। बंगाल के कोलकाता में स्थित इस स्कूल में बच्चों के समग्र विकास के लिए विविध गतिविधियों वाला ऐसा पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है, जिससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास एक साथ हो सके। यहां के शिक्षकों का मूल उद्देश्य है, जिम्मेदार और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक तैयार करना। यहां आईसीएसई, आईएससी, आईजीसीएसई और आईबीडीपी जैसे कोर्स शामिल हैं। यह स्कूल कोलकाता सहित कई केंद्रों पर इंटरनेशनल डे बोर्डिंग स्कूल के रूप में ख्याति हासिल कर चुका है।

द यलो ट्रेन स्कूल, तमिलनाडु: तमिलनाडु के कोयंबटूर जिले में आरासुर में स्थित है द यलो ट्रेन स्कूल। सुंदर खेतों के बीच बसा यह अनोखा स्कूल, जैविक दृष्टिकोण को अपनाता है, जिससे बच्चों के पनपने के लिए प्राकृतिक वातावरण को बढ़ावा

मिलता है। यहां एक ओपन-एयर एंफीथिएटर, एक मंच और एक सामुदायिक सभास्थल के रूप में काम करता है। यह स्कूल शिक्षा के लिए एक वैकल्पिक और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त दृष्टिकोण प्रदान करता है। यहां के शैक्षिक प्रबंधन को 'एक ऐसी जगह जहां बच्चे अपनेपन का एहसास करते हैं, अपने लिए भविष्य बनाते हैं और दुनिया को कुछ देना सीखते हैं।' के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

द फ्यूचर फाउंडेशन स्कूल, राजस्थान: राजस्थान के जयपुर में स्थित महर्षि अरविंद और मां के सिद्धांतों पर आधारित इस स्कूल में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा प्रदान की जाती है। यहां बच्चों को खेल के माध्यम से सीखने के साथ-साथ उन्हें अपनी कल्पनाशक्ति और कलात्मक अभिव्यक्ति को निखारने की शिक्षा भी दी जाती है। यहां थ्योरी के बजाय प्रैक्टिकल शिक्षा पर जोर दिया जाता है। स्कूल में समय-समय पर प्रोजेक्ट तैयार करने, सेमिनार, डिबेट, फील्ड ट्रिप, वर्कशॉप, म्यूजिक जैसे तमाम आयोजन किए जाते हैं। इनमें शामिल होकर बच्चे अपने व्यक्तित्व और प्रतिभा में निखार ला सकते हैं।

नॉर्थ स्टार स्कूल, गुजरात: गुजरात के राजकोट में स्थित यह स्कूल हार्वर्ड के पूर्व छात्र मोहित पटेल द्वारा स्थापित किया गया है। यहां का पाठ्यक्रम अपडेटेड ग्लोबल जानकारियां देने और एक्सपीरियंस लर्निंग पर जोर देने वाला है। यहां विद्यार्थियों को रटना नहीं कॉन्सेप्ट समझना सिखाया जाता है। यहां की शिक्षा रिसर्च पर आधारित है। प्रकृति से जुड़ने के लिए यहां निरंतर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इस स्कूल

में परीक्षाओं के बजाय फीडबैक लिया जाता है। प्रशिक्षण के लिए स्कूल ने स्विट्जरलैंड के हाउते ईकोले पेडागोगिक के साथ गठबंधन किया है। यहां हर 7 छात्र पर एक शिक्षक नियुक्त है ताकि बच्चों पर व्यक्तिगत रूप से पूरी तरह ध्यान दिया जा सके।

द वैली स्कूल, कर्नाटक: बैंगलुरु में स्थित इस स्कूल का पाठ्यक्रम मूल रूप से छात्रों को प्रकृति से जोड़ते हुए व्यावहारिक शिक्षा देने के लिए तैयार किया गया है। स्कूल का विशाल परिसर हरियाली से घिरा हुआ है। यहां छात्र प्रकृति की सैर करते हैं, वन्यजीवों को देखते हैं और इकोसिस्टम की बारीकियां और महत्व सीखते हैं। इन्हें जैविक विविधता के फायदे और उपयोगिता बताने के साथ-साथ बागवानी से जुड़ी जानकारियां भी प्रैक्टिकल रूप में दी जाती हैं। यह स्कूल छात्रों के बौद्धिक कौशल के साथ-साथ फिजिकल फिटनेस पर भी जोर देता है। *

{ **कविता**
पूजा भारद्वाज }

सुख गहरे दुःख में है

अच्छे लगते पेड़ मुझे
प्रेम इनकी घनी छाया से
निर्जन एकांत में खड़े
किसी घने वृक्ष की गोद
सृष्टि का सर्वाधिक सुंदर सुख
हवा-पत्तियों की सुर-ताल
सर्वश्रेष्ठ संगीत
ये शीतल बयार
सबसे प्यारी लोरी
जाना पेड़ तले लेटकर
सुख, प्रकृति में निहित है
आस-पास में छोटी-छोटी बातों में
साधारण-सी चीजों में ठहरा है सुख
किंतु उपभोक्तावाद ने अपने गैरजरूरी
भार से कुचल दिए सुख
सुख, इन दिनों शापित प्रेत की भांति
भटक रहा शांति की तलाश में
कि बाजारवाद ने लापता कर दी
सुख की प्रेयसी शांति
सुख गहरे दुख में है आजकल।

{ **कहानी / आशा शर्मा** }

एक प्राइमरी स्कूल के शिक्षक के लिए किसी गांव में जाकर बच्चों को शिक्षा देना, बहुत ही चुनौतीपूर्ण काम है। विनोद को शिक्षक के रूप में गांव का जो विद्यालय मिला, वहां एक भी विद्यार्थी नहीं था। लेकिन विनोद ने बच्चों की शिक्षा की ऐसी अलख जगाई, आगे भी गांव ने उसकी विरासत बनाए रखी। शिक्षा के प्रति अपना दायित्व बोध कराती एक शिक्षक की कहानी।

गुरुजी

सरकारी दौरे पर इधर से गुजरा तो विनोद अपने आपको स्कूल की तरफ मुड़ने से नहीं रोक सका। ऊंचे-ऊंचे पेड़ों से घिरा स्कूल का विशाल भवन अपनी भव्यता का इतिहास खुद बयान कर रहा था। विनोद के चेहरे पर मुस्कान छिटक आई। प्रशासनिक अधिकारी विनोद को स्कूल के शुरुआती दिन याद आ गए।

बात लगभग बीस वर्ष पुरानी है, जब विनोद की नई-नई सरकारी नौकरी लगी थी। उसे सहायक अध्यापक के पद पर नियुक्ति मिली थी। नौकरी नई थी और जोश भी नया-नया। इनके साथ-साथ समस्या भी नई ही थी। दरअसल, बात यह थी कि विनोद को शहर से बीस किलोमीटर दूर नए खुले प्राथमिक विद्यालय में नियुक्ति मिली थी। पहले ही दिन जोश से भरा विनोद पूरे उत्साह से स्कूल पहुंचा, लेकिन कुछ ही देर में उसकी खुशी का पॉपकॉर्न फट गया, जब स्कूल के तय समय से दो घंटे बाद भी स्कूल में किसी तरह की कोई हलचल दिखाई नहीं दी। घबराए विनोद ने निदेशालय फोन लगाया और अपनी समस्या बताई। उधर से आई ठहाके की आवाज ने उसके आश्चर्य की सीमा को कई गुणा बढ़ा दिया।

'अरे मास्टर जी! स्कूल में बच्चे लाने का काम भी तो आपका ही है। घर-घर जाइए और शिक्षा से वंचित बच्चों का नामांकन कीजिए। फिलहाल आपका यही मुख्य काम है।' क्लर्क ने विनोद को समझाया और प्रवेशोत्सव की जानकारी दी। हालांकि तत्काल तो विनोद की समझ में नहीं आया कि बच्चों को शिक्षा से कैसे जोड़ा जाए, लेकिन वह अंतिम प्रयास तक हार मानने वालों में नहीं था, इसलिए बैठकर योजना बनाने लगा। जब कुछ निर्धारित नहीं हो सका तो उसने स्कूल में ताला लगाया और गांव के सरपंच जी से मिलने उनके घर चल दिया। सरपंचजी घर पर ही मिल गए। विनोद ने बालकों को शिक्षा से जोड़ने में उनसे सहयोग की अपेक्षा की।

'अरे मास्टरजी! इन बच्चों का खाने-पहनने का ही पूरा नहीं पड़ता, इन्हें पढ़ाकर क्या कलेक्टर बना दोगे।' कहते हुए सरपंचजी ने भी विनोद का मजाक उड़ाया। विनोद चुपचाप वहां से उठकर वापस स्कूल आ गया। वह कुर्सी पर बैठा था, लेकिन उसका दिमाग चकरी की तरह घूम रहा था। अचानक चकरी रुकी और विनोद मुस्कुरा दिया।

दूसरे दिन विनोद पैदल ही गांव में घूमने निकल गया। जिन घरों में उसे शिक्षा लायक बच्चे दिखाई दिए, वह उनके माता-पिता से मिला। विनोद ने उन्हें बच्चों की शिक्षा संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी, लेकिन अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर उदासीन दिखे। विनोद वापस लौट आया। एक दिन वह एक पेंटर को अपने साथ लेकर आया और स्कूल की बाहरी दीवारों को आकर्षक चमकीले रंग वाले चित्रों से सजवा दिया। दीवारों पर उछलते-कूदते और विभिन्न खेल खेलते बच्चों के चित्र थे, जो सहज ही किसी को भी अपनी तरफ खींचने की क्षमता रखते थे। विनोद अपने साथ एक फुटबॉल भी लेकर आया। कुछ देर बाद विनोद ने बालकों के झुंड को देखा, जो बकरियां चराने के लिए जंगल की तरफ जा रहे थे। विनोद फुटबॉल लेकर मैदान में आ गया और फुटबॉल को उछाल-उछाल कर स्कूल की दीवार पर मारने लगा। उसे अकेले फुटबॉल खेलते देखकर बच्चे हंसने लगे। 'आओ! मेरे साथ खेलो।' विनोद ने उन्हें आमंत्रित किया, लेकिन सकुचाते हुए बच्चे गर्दन झुका कर निकल गए। ऐसा अगले दो दिन भी हुआ। तीसरे दिन जब विनोद अकेला फुटबॉल खेल रहा था तो दो बच्चे आकर उसके पास खड़े हो गए।

'खेलोगे?' विनोद ने पूछा। बच्चों ने गर्दन हिलाकर हामी भरी और फिर स्कूल का मैदान फुटबॉल का खेल मैदान बन गया।

'बच्चों बताओ, आज मेरी टीम ने कितने गोल मारे?' विनोद ने पूछा।

'चार।' कमली ने तुरंत बता दिया।

'बहुत खूब!' कहकर विनोद ने उसे शाबाशी दी। 'आज हम क्रिकेट खेलेंगे। बताओ उसमें कितने खिलाड़ी होते हैं?' विनोद ने एक दिन पूछा। 'ग्यारह।' इस बार जवाब राधे ने दिया।

'वह देखो बच्चों! सामने दूर सड़क पर जो पानी सा भरा तालाब दिख रहा है, वह पानी नहीं है। जानते हो उसे मृग-मरीचिका कहते हैं।' एक दिन विनोद ने बच्चों को इस प्राकृतिक घटना के बारे में विस्तार से बताया तो बच्चों को बहुत रोचक लगा। इसी तरह विनोद की तपस्या चल रही थी। धीरे-धीरे खेलने आने वाले बच्चों की संख्या बढ़ने लगी। विनोद खेल-खेल में उनसे कभी गणित तो कभी विज्ञान के प्रश्न पूछता रहता। बच्चे भी उत्साहित होकर जवाब देते। कभी वह उन्हें कोई कविता-कहानी सुनाता तो कभी हिंदी और अंग्रेजी वर्णमाला की जानकारी देता। एक दिन विनोद ने बच्चों को कक्षा में इकट्ठा किया। 'क्या तुम लोगों को पढ़ने में मजा आ रहा है?' विनोद ने पूछा। बच्चे एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

'लेकिन हम तो यहां खेलने आते हैं।' बच्चों ने एक साथ कहा। विनोद हंसने लगा। 'यही तो पढ़ाई है।' बस तुम लोगों के नाम स्कूल के रजिस्टर में लिख दूं तो हम सब यहां एक साथ बैठकर खेलने के साथ पढ़ाई भी कर सकते हैं।' विनोद ने कहा।

'और हमारी बकरियां, उन्हें कौन चराएगा?' बच्चों ने पूछा।

'अभी कहां हैं तुम्हारी बकरियां?' विनोद ने पूछा तो बच्चों का ध्यान भंग हुआ। वे इधर-उधर देखने लगे। बकरियों को स्कूल के मैदान में ही घास चरते देखा तो वे संतुष्ट हुए। 'हम स्कूल के मैदान में ही घास लगवा देंगे। बकरियां चरेंगी और बच्चे पढ़ेंगे। ऐसा हो जाए तो क्या कहते हो?' विनोद ने फिर पूछा। बच्चे सोच में पड़ गए। विनोद उनकी दुविधा समझ गया। उसने बच्चों से कहा कि वह कल एक-एक कर उन सबके घर आएगा और उनके माता-पिता से उनकी पढ़ाई को लेकर बात करेगा।

विनोद ने अपना वादा निभाया और घर-घर जाकर बच्चों के माता-पिता को अपने बालकों को स्कूल भेजने के लिए तैयार किया। हालांकि पहले-पहल अधिकांश माता-पिता के जवाब ने उसे निराश ही किया, लेकिन अंततः कुछ बच्चों के माता-पिता उन्हें स्कूल भेजने के लिए राजी हो गए और विनोद के स्कूल में चहल-पहल शुरू हो गई। सबने मिलकर स्कूल मैदान के एक हिस्से में घास लगाई और शेष जगह अन्य पेड़-पौधे लगाए गए। हरेक पौधे पर बच्चों के नाम लिखे गए और उन पौधों की जिम्मेदारी उसी बच्चे को सौंप दी गई। बच्चे बहुत उत्साह के साथ पढ़ने और पेड़-पौधों को पोषित करने लगे। कुछ ही सालों के निरंतर प्रयास के बाद स्कूल एक आदर्श स्कूल बन गया, जहां पढ़ने वाले बच्चे अन्य बालकों से अधिक खुश दिखाई पड़ते थे।

इस बीच विनोद बच्चों को पढ़ाने के साथ-साथ स्वयं भी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करता रहा। जब वह प्रशासनिक अधिकारी के रूप में चयनित होकर इस स्कूल को छोड़ रहा था, तब अनेक आंखें नम थीं। उसने गांव वालों से वादा लिया था कि वे स्कूल की बेहतरी के लिए हमेशा प्रयत्न करते रहेंगे और अपने बच्चों को स्कूल भेजना बंद नहीं करेंगे। उसके बाद व्यस्तताओं के कारण उसका इस गांव में कभी आना नहीं हो पाया, लेकिन यह भी सच है कि वह अपने इस विद्यालय को कभी भूला भी नहीं था। आज उसी स्कूल के वर्तमान स्वरूप को देखकर उसकी आंखें सजल हो गईं। तभी किसी ने आकर उसके पांव छुए तो वह चौंका!

'प्रणाम गुरुजी।' कहता हुआ एक युवक उसके पांवों में झुका हुआ था। विनोद ने उसे पहचानने का प्रयास किया। 'मैं राधे हूं गुरुजी। आपका शिष्य। पढ़ाई करने के बाद यहीं इसी स्कूल में अध्यापक बनकर आया तो धन्य हो गया। आपकी विरासत को संभाल कर रखा है। आशीर्वाद दीजिए।' राधे ने बताया तो विनोद का सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

अब राधे उसके कदमों में नहीं बल्कि उसकी बाहों में था। *